संडे स्कूल पाठ्य पुस्तक

6

brethren
sunday
school

प्रकाशक :

ब्रदरन संडे स्कूल समिति

- **Brethren Sunday School**
  Text Book-6 (Hindi)

- **All Rights Reserved**

- *Original Text Books Published in Malayalam and English by :*
  The Brethren Sunday School Committee, Kerala

- *Project Co-Ordinator :*
  Jacob Mathen (New York)
  athmamanna@yahoo.com

- *Language Consultant :*
  Dr. Johnson C. Philip

- *Translated by :*
  Dora Alex (Delhi)

- *Copies Available From :*
  *** SBS Camp Centre, Puthencavu,**
  Chengannur, Kerala

  *** Brethren Sunday School Committee**
  P.B. No. 46, Pathanmthitta, Kerala

- *Printed, Published and Distributed By :*
  The Brethren Sunday School Committee

परिचय

अत्यन्त हर्ष के साथ हम कक्षा छह की पुस्तक को प्रस्तुत करते हैं।

भाई ए.पी. पाईली (Anganaly), **डॉ. ए.पी. मैथ्यू (Trivandrum)** और **प्रो. पी.पी. स्करिया (Kazhicode)** ने इसे मलयालम भाषा में लिखा था, जिसका अनुवाद **भाई जॉनसन जॉन (Philadelphia)** ने अंग्रेजी भाषा में किया।

भाई के.ए. फिलिप (Mylapra) और **डॉ. सैलास सी. नायर (Trichur)** ने अंग्रेजी भाषा में अंत के छः पाठ लिखे।

वर्तमान अंग्रेजी संस्करण का सुधार और संशोधन **भाई के.ए. फिलिप** और **भाई सन्नी. टी फिलिप** ने किया। इस पुस्तक का अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद **बहन डोरा एलेक्स (दिल्ली)** ने किया। संडे स्कूल कमेटी इन सभी का आभार व्यक्त करती है।

पिछले दशकों में ब्रदरन संडे स्कूल के पाठ्यक्रम ने जिस प्रकार अपनी उपयोगिता और विशिष्टता को प्रमाणित किया है, वह हमारे लिए हर्ष का कारण है। हम परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं कि अब हम इन पाठ्यक्रमों को भी उपलब्ध करा सके हैं।

संडे स्कूल कमेटी **भाई जेकब माथन (U.S.A.)** के प्रति भी आभारी है जिन्होंने इन संडे स्कूल पुस्तकों को हिन्दी भाषा में प्रकाशित करने में पूरा सहयोग दिया।

हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर के लोगों ने संजो कर रखे सत्यों पर हो रहे आक्रमण के इस दौर में ये पाठ हमारे बच्चों की सहायता करेंगे, कि वे सत्य पर बने रहेंगे जो उन्हें जीवन देगा और बहुतायत का जीवन देगा।

ब्रदरन संडे स्कूल कमेटी

शिक्षकों से...

संडे स्कूल के शिक्षक का कर्तव्य :

★ अपनी कक्षा का रजिस्टर बनाएँ – यह अपने विद्यार्थियों के लिए प्रार्थना करने और उनसे मिलने के लिए भी सहायक होगा।

★ बच्चों के घर जाएँ और उनके जीवन को समझने का यत्न करें।

★ समय निकालकर उन से बात करें और उनकी बातें सुनें।

★ उनके आत्मिक जीवन के चिह्नों को समझें और उन्हें प्रोत्साहित करें।

★ यदि कोई बच्चा अनुपस्थित हो, तो उससे मिलें और कारण जानने का प्रयत्न करें।

★ यदि वह किसी समस्या का सामना कर रहा है, तो उसकी सहायता करने का प्रयत्न करें।

★ कक्षा से जाने के बाद भी बच्चों को याद रखें और उनके सांसारिक और आत्मिक जीवन के बारे में जानकारी रखें।

★ उनके लिए लगातार प्रार्थना करें और उद्धार प्राप्त करने के लिए उनका मार्गदर्शन करें।

संपादक-मंडल

के.ए. फिलिप
सन्नी टी. फिलिप **(अंग्रेजी पाठ्य पुस्तक)**
डोरा एलेक्स **(हिंदी पाठ्य पुस्तक)**

प्रस्तावना

आरंभकाल से ही ब्रदरन विश्वासी लोग अपने बच्चों को परमेश्वर का वचन सिखाने को काफी महत्व देते आये हैं। जैसे ही कोई बच्चा 'मम्मी' या 'पापा' बोलने लगता है वैसे ही उसे घर वाले ''यहोवा मेरा चरवाहा है'' जैसी छोटी बाइबल आयतें सिखाना शुरू कर देते हैं, जैसे ही वह नर्सरी में जाने लगता है वैसे ही उसे संडे स्कूल भी भेजना शुरू हो जाता है।

भारत में ब्रदरन मंडलियों की संख्या जब बढ़ने लगी तब कई भाईयों को लगा कि सभी मंडलियों के लिये उपयोगी एक संडे स्कूल पाठ्यक्रम बनाया जाना चाहिये। इस विषय में तत्पर काफी सारे भाईयों ने कई साल पहले **पत्तनमथिट्टा** नामक स्थान पर गॉस्पल हॉल में एकत्रित होकर **''ब्रदरन संडे स्कूल पाठ्यक्रम''** की नींव डाली। अगले कुछ सालों में उन लोगों ने कुल दस कक्षाओं का पाठ्यक्रम मलयालम भाषा में तैयार किया और तब से मलयालमभाषी मंडलियों में इनका व्यापक उपयोग होता आया है।

इस बीच कई भाई-बहनों, मंडलियों एवं **SBS India** की मदद से इन पुस्तकों का अनुवाद अंग्रेजी एवं कई भारतीय भाषाओं में हुआ जिसके कारण इन पाठ्यपुस्तकों का उपयोग और भी व्यापक हो गया। हिंदीभाषी मंडलियों की व्यापकता के कारण हिन्दी संस्करण का सारे भारत में स्वागत हुआ। इस बीच हर जगह से मांग आने लगी कि जल्दबाजी में किये गये हिंदी अनुवाद को अब संशोधित किया जाये। इस मामले में भाई **जेकब मात्तन** ने काफी व्यक्तिगत दिल्चस्पी लेकर यह कार्य बहिन **डोरा एलेक्स** को सौंपा। पुराने अनुवाद का संशोधन करने के बदले यह बहिन सारे दसों पाठ्य पुस्तकों का नया एवं आधुनिक बोलचाल की

हिंदी में अनुवाद कर रही हैं। इस कार्य को **ब्रदरन संडे स्कूल समिति** एवं **SBS India** का पूर्ण अनुमोदन प्राप्त है। बहिन **डोरा एलेक्स** ने अभी तक जितने पुस्तकों का अनुवाद किया है उन सबका मैंने अवलोकन किया एवं उनको बहुत ही सरल, सुलभ एवं सटीक पाया है, मैं इस कार्य के लिये उनका एवं भाई **जेकब मात्तन** का अभिनंदन करता हूँ।

मनुष्य जन्म से ही पापी होता है, नया जन्म पाने के बाद उसे कई साल तक परमेश्वर का वचन सिखाया जाना जरूरी है जिससे कि उसका मन रूपांतर पाकर (रोमियों 12:1, 2) वह सही रीति से सोचने लगे। मुझे पूरा यकीन है कि इस महान कार्य के लिये **ब्रदरन संडे स्कूल पाठ्यक्रम** एकदम उचित माध्यम है। हिंदी के नये संस्करण के छपने से हिंदीभाषी मंडलियों को बच्चों एवं नये विश्वासियों के प्रति अपनी आत्मिक जिम्मेदारी निभाने के लिये 10 अति उत्तम पुस्तकें उपलब्ध हो जायेंगी।

विनीत

शास्त्री जानसन सी फिलिप

विषय सूची

पाठ		पृष्ठ संख्या
1.	आरंभिक बलिदान–1	1
2.	आरंभिक बलिदान–2	4
3.	याजकीय बलिदान–1	7
4.	याजकीय बलिदान–2	12
5.	यहोवा के पर्व–1	16
6.	यहोवा के पर्व–2	19
7.	इस्राएली - कनान में	24
8.	यहोशू के युद्ध	28
9.	शरण नगर	32
10.	यहोशू और कालेब	35
11.	न्यायी–1	38
12.	न्यायी–2	41
13.	न्यायी–3	45
14.	न्यायी–4	48
15.	एली	52
16.	शमूएल	54
17.	मत्ती रचित सुसमाचार	57
18.	मरकुस रचित सुसमाचार	60
19.	लूका रचित सुसमाचार	63
20.	यूहन्ना रचित सुसमाचार	66
21.	पहाड़ी उपदेश	70
22.	मसीह के नाम व उपाधियाँ–1	74

23. मसीह के नाम व उपाधियाँ–2 77
24. मसीह के नाम व उपाधियाँ–3 80
25. मसीह के नाम व उपाधियाँ–4 83
26. भविष्यद्वक्ताओं की गवाही 87
27. मसीह के विषय में गवाही 90
28. मनुष्यों की गवाही 92
29. स्वर्गदूतों की गवाही 96
30. चित्रांकन.. 98
31. गतसमनी 102
32. क्रूस.. 105
33. पुनरुत्थान 109
34. स्वर्गारोहण 114
35. पिन्तेकुस्त.. 116
36. परमेश्वर की कलीसिया.. 118
37. कलीसिया पर सताव 121
38. कूशी खोजा.. 124
39. तरसुस का शाऊल.. 127
40. कुरनेलियुस 130

पाठ-1

आरंभिक बलिदान-1

उत्पत्ति 3:21; 4:1-8; 4:25-26; 8:20-22; अय्यूब-1

सुनहरा पद :

''क्योंकि जब बकरों और बैलों का लोहू और कलोर की राख अपवित्र लोगों पर छिड़के जाने से शरीर की शुद्धता के लिए पवित्र करती है, तो मसीह का लोहू जिसने अपने आपको सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो।'' इब्रा. 9:13-14

1. कैन और हाबिल के बलिदान :

दोनों भाइयों ने परमेश्वर के लिए बलिदान चढ़ाए। कैन ने भूमि की उपज में से, और हाबिल ने अपनी भेड़-बकरियों के पहिलौठे बच्चे बलिदान चढ़ाए। परमेश्वर ने हाबिल के बलिदान को ग्रहण किया, क्योंकि उसमें लोहू बहाया गया था। परन्तु कैन की भेंट परमेश्वर को प्रसन्न न कर सकी। यह इस सत्य की ओर संकेत करता है कि बिना लोहू बहाए पापों की क्षमा नहीं हो सकती।

कोई भी मनुष्य अपने अच्छे कार्यों के द्वारा उद्धार प्राप्त नहीं कर सकता। ''हमारे धर्म के काम सबके सब मैले चिथड़ों के समान हैं।'' यशा. 64:6 क्योंकि हम पापी मनुष्य हैं। परमेश्वर पापी मनुष्य को केवल तब ही स्वीकार करते हैं, जब वह प्रभु यीशु के उस बलिदान पर विश्वास करता है, जो कलवरी के क्रूस पर अपना प्राण देकर उन्होंने किया।

2. यहोवा के नाम में आराधना :

हाबिल की मृत्यु के पश्चात्, आदम के एक और पुत्र उत्पन्न हुआ,

जिसका नाम शेत था। इस नाम का अर्थ है ''नियुक्त किया हुआ''। शेत के पुत्र एनोश के जन्म के समय से, लोग यहोवा से प्रार्थना करने लगे।

उसी प्रकार मनुष्यों के छुटकारे के लिए प्रभु यीशु भी ''नियुक्त'' किए गए हैं। छुटकारा पाए हुए लोगों को परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए। परमेश्वर उनकी आराधना स्वीकार नहीं करते जिनका उद्धार नहीं हुआ।

3. नूह के बलिदान :

जब पृथ्वी पर मनुष्य की दुष्टता बढ़ गई, तब परमेश्वर ने जल प्रलय के द्वारा मनुष्यजाति को नाश कर दिया। तथापि धर्मी नूह और उसका परिवार बचाए गए (उत्पत्ति 6:8-9)। जब नूह जहाज़ से बाहर आया, तब उसने वेदी बनाई। शुद्ध पशुओं और शुद्ध पक्षियों में से चुन-चुनकर उसने होमबलि चढ़ाया। वह परमेश्वर के लिए सुखदायक सुगंध ठहरा। परमेश्वर ने नूह के साथ एक वाचा बांधी, कि वे मनुष्य को फिर कभी जल प्रलय से नाश नहीं करेंगे। परमेश्वर प्रसन्न होते हैं जब उनकी आराधना आत्मा और सच्चाई से होती है।

4. अय्यूब के बलिदान :

अय्यूब एक धर्मनिष्ठ, विश्वास में स्थिर और परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी पुरुष था। उसके पुत्र कई दिनों तक जेवनार किया करते थे। अय्यूब को यह भय रहता था कि शायद उन्होंने आनंद मनाते समय पाप किया होगा। इसलिए जेवनार के दिन पूरे होने पर अय्यूब उन्हें बुलवाकर पवित्र करता, और उनके लिए होमबलि चढ़ाता था।

इन बातों से हम स्पष्ट समझ सकते हैं कि पापों की क्षमा होने पर ही हम परमेश्वर की संगति में रहकर आशीषें प्राप्त कर सकते हैं। व्यवस्था के अनुसार किए जाने वाले बलिदान दोषी व्यक्ति को अस्थायी रूप से क्षमा दिलाते थे। यह कलवरी क्रूस पर मसीह की मृत्यु है, जो मनुष्यों को अनंत छुटकारा देता है।

याद करें : मेरे भक्तों को मेरे पास इकट्ठा करो, जिन्होंने बलिदान

चढ़ाकर मुझ से वाचा बांधी है। (भजन संहिता 50:5)

प्रश्न :

1. परमेश्वर ने कैन की भेंट को क्यों स्वीकार नहीं किया?
2. शेत कौन था? उसके पुत्र का क्या नाम था?
3. नूह ने कब बलिदान चढ़ाए?
4. अय्यूब ने किसके लिए बलिदान चढ़ाए?
5. बलिदान चढ़ाने से क्या प्राप्त होता था?
6. किस बलिदान से मनुष्य को अनंत छुटकारा प्राप्त होता है?

पाठ-2

आरंभिक बलिदान-2

उत्पत्ति 12:7-8; 15:9-16; अध्याय 22

सुनहरा पद :

''विश्वास ही से इब्राहीम ने परखे जाने के समय में इसहाक को बलिदान चढ़ाया, और जिसने प्रतिज्ञाओं को सच माना था, और जिससे यह कहा गया था, कि इसहाक से तेरा वंश कहलाएगा, वह अपने एकलौते को चढ़ाने लगा। क्योंकि उसने विचार किया, कि परमेश्वर सामर्थी है, कि मरे हुओं में से जिलाए, सो उन्हीं में से दृष्टांत की रीति पर वह उसे फिर मिला।'' इब्रानियों 11:17-19

इब्राहीम के बलिदान :

1. साधारण बलिदान : इब्राहीम कसदियों के ऊर नगर का निवासी था। परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया (प्रेरितों 7:2-3) और उससे कहा कि तू अपने देश और अपने कुटुम्ब से निकलकर उस देश में चला जा, जिसे मैं तुझे दिखाऊँगा। अपने पिता तेरह के साथ वह हारान में जा बसा। उसके पिता तेरह की मृत्यु के पश्चात् परमेश्वर ने फिर से उससे बातें कीं (उत्पत्ति 12:1)। और वह वहाँ से निकलकर कनान में जा बसा। वह मुसाफिरों की तरह तंबुओं में रहता था। वह जहाँ कहीं भी गया, वहाँ उसने वेदी बनाई और परमेश्वर की आराधना की। प्रार्थना और मनन उसकी आराधना का भाग थे।

2. विशेष बलिदान :

अध्याय 15 और 22 में इब्राहीम के दो विशेष बलिदानों का वर्णन दिया गया है।

A. अध्याय 15 में परमेश्वर के निर्देशानुसार इब्राहीम ने पशुओं और पक्षियों का बलिदान चढ़ाया। इब्राहीम को एक पुत्र पाने की चाहत थी। जब उसने बलिदान चढ़ाया, तब परमेश्वर ने उससे वाचा बांधी, और

उससे प्रतिज्ञा की, कि मैं तेरे वंश को आकाश के तारागण की तरह करूँगा। परमेश्वर ने इब्राहीम से निम्नलिखित वायदे किए :

1. ''मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा'' (उत्पत्ति 12:2)

2. ''मैं तुझे आशीष दूँगा'' (उत्पत्ति 12:2)

3. ''मैं तेरा नाम बड़ा करूँगा'' (उत्पत्ति 12:2)

4. ''तू आशीष का मूल होगा'' (उत्पत्ति 12:2; गल. 3:14)

5. ''जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा'' (उत्पत्ति 12:3, 4)

6. ''जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा'' उत्पत्ति (12:3, 4)

7. ''भूमण्डल के सारे कुल, तेरे द्वारा आशीष पाएँगे'' उत्पत्ति (12:3; 22:18)

B. उत्पत्ति 22 में, जिस बलिदान का वर्णन है, वह अति विशिष्ट था। परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा कि मोरिय्याह देश में चला जा, और वहाँ एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊँगा, अपने पुत्र को होमबलि करके चढ़ा। इब्राहीम न घबराया, न उसने किसी से सलाह की। परन्तु उसने तुरंत ही परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। उसने बलिदान चढ़ाने के लिए सब वस्तुओं का इंतज़ाम किया। फिर वह बिहान को तड़के उठा और अपने पुत्र इसहाक और दो सेवकों को लेकर मोरिय्याह जाने के लिए निकल पड़ा। तीसरे दिन वे उस स्थान पर पहुँचे, जिसकी चर्चा परमेश्वर ने उससे की थी। उसके प्रिय पुत्र ने उससे पूछा, ''हे मेरे पिता, होमबलि के लिए भेड़ कहाँ है?'' इब्राहीम ने उत्तर दिया, ''परमेश्वर आप ही उपाय करेगा।''

तब इब्राहीम ने वहाँ वेदी बनाकर, अपने पुत्र इसहाक को बाँधकर वेदी पर की लकड़ी के ऊपर रख दिया। तब इब्राहीम ने हाथ बढ़ाकर छुरी को ले लिया कि अपने पुत्र को बलि करे। तब यहोवा के दूत ने स्वर्ग से उसको पुकार के कहा, ''हे इब्राहीम, लड़के पर हाथ मत बढ़ा।'' इब्राहीम ने आँखें उठाईं और झाड़ी में फँसे हुए एक मेढ़े को

देखा। इब्राहीम ने उस मेढ़े को लेकर अपने पुत्र के स्थान पर उसको होमबलि करके चढ़ाया। मृत्यु से छुड़ाए गए अपने पुत्र को लेकर इब्राहीम अपने घर लौट गया। परमेश्वर ने इब्राहीम को आशीष दी।

प्रभु यीशु मसीह के कलवरी की मृत्यु के दो पहलुओं को यह बलिदान प्रकट करता है।

1. इसहाक के बदले मेढ़े का बलिदान चढ़ाया गया। वैसे ही प्रभु यीशु हमारे बदले बलिदान हुए।
2. परमेश्वर ने मनुष्य के अनन्त उद्धार के लिए अपने एकलौते पुत्र को बलिदान होने के लिए दे दिया। प्रभु यीशु तीसरे दिन मृतकों में से जी उठे।

इब्राहीम की आज्ञाकारिता और अटूट विश्वास हमारे लिए उदाहरण हैं। हमारे कार्यों से हमारा विश्वास प्रकट होना चाहिए। परमेश्वर से आशीष प्राप्त करने के लिए परमेश्वर के प्रति संपूर्ण आज्ञाकारिता आवश्यक है।

याद करें : क्योंकि उसने एक ही चढ़ावे के द्वारा, उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिए सिद्ध कर दिया है। (इब्रानियों 10:14)

प्रश्न :

1. वह कौन सी पहली आज्ञा थी, जो परमेश्वर ने इब्राहीम को दी?
2. दूसरी आज्ञा क्या थी जो इब्राहम को प्राप्त हुई?
3. अपनी यात्रा के दौरान इब्राहीम ने कहाँ वेदी बनाई?
4. परमेश्वर ने इब्राहीम से कब वाचा बाँधी?
5. परमेश्वर ने इब्राहीम से कौन-कौन से वायदे किए?
6. इसहाक का बलिदान किसका प्रतीक है?
7. इसहाक के बलिदान से हम कौन से आत्मिक पाठ सीखते हैं?

पाठ-3

याजकीय बलिदान-1

लैव्य. 1:10-3:17; 6:9-18; 7:11-21

सुनहरा पद :

''प्रेम में चलो, जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया, और हमारे लिए अपने आपको सुखदायक सुगंध के लिए परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया।'' इफि. 5:2

जैसे पत्रियों का सम्बन्ध सुसमाचारों से है, उसी प्रकार लैव्यव्यवस्था का सम्बन्ध निर्गमन से है। निर्गमन का विषय वस्तु ''छुटकारा'' है। लैव्यव्यवस्था में निर्देश दिए गए हैं कि परमेश्वर के लोगों को किस प्रकार का जीवन जीना चाहिए और कैसे परमेश्वर की आराधना और सेवा करनी चाहिए। मुख्य विषय यह भी है कि एक पापी मनुष्य की परमेश्वर तक पहुँच कैसे हो। इसके लिए दो तरीके दिए गए थे–

1. बलिदानों और चढ़ावों के द्वारा
2. याजकों की मध्यस्थता के द्वारा

बलिदान :

परमेश्वर के द्वारा दिए गए याजकीय बलिदान दो प्रकार के थे :

A. सुखदायक सुगंधवाला हवन

B. पापबलि

A. सुखदायक सुगंधवाला हवन :

सुखदायक सुगंधवाला हवन मसीह का प्रतीक था। मसीह जो पूर्ण सिद्ध था और पिता की इच्छा के प्रति जिसकी प्रेमपूर्ण निष्ठा थी। सुखदायक सुगंधवाले हवन निम्नलिखित हैं :

1. होमबलि : होमबलि के पशु या पक्षी को पूरी रीति से जलाया

जाता था, जो परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण का प्रतीक है। बलिदान चढ़ाने वाले को दिए गए निर्देशों के आधार पर उसे–

1. बलि के पशु (निर्दोष, नर) को मिलापवाले तंबू के द्वार पर लाना होता था (लैव्य. 1:3)।
2. अपना हाथ होमबलि पशु के सिर पर रखना होता था। जो यह प्रदर्शित करता था कि वह इस सत्य को मान रहा है कि वह पशु उसके स्थान पर है और उसके पापों की क्षमा के लिए वह पशु मारा जाएगा। (लैव्य 1.4)।
3. परमेश्वर के सामने उस पशु को बलि करना होता था। (लैव्य 1:5)।

   इसके पश्चात् के दो कार्य याजक के द्वारा किए जाते थे–

4. होमबलि पशु के लोहू को वेदी की चारों अलंगों पर छिड़कना होता था (लैव्य. 1:5) लोहू बहाए बिना पापों की क्षमा नहीं होती। ''क्योंकि शरीर का प्राण उसका लोहू ही है'' (लैव्य. 17:14)।
5. याजक सबकुछ वेदी पर जलाए, कि वह होमबलि यहोवा के लिए सुखदायक सुगंधवाला हवन ठहरे। (लैव्य. 1:9b)

होमबलि के कुछ विशेष पहलू :

1. सुखदायक सुगंधवाला हवन स्वेच्छा से किया जाता था (लैव्य. 1:3)।
2. बलि चढ़ाने वाले के पापों की क्षमा के रूप में वह ग्रहण किया जाता था। (लैव्य. 1.4)।
3. वह पूरी रीति से जलाया जाता था। (लैव्य. 1:8-9)।

आत्मिक पाठ :

बलि का पशु निर्दोष नर होता था, जो मसीह का प्रतीक है। होमबलि पशु यदि बैल हो तो वह मसीह के धीरज और सहनशक्ति का प्रतीक है। यदि वह भेड़ या बकरा हो तो वह विरोध किए बगैर संपूर्ण आत्म समर्पण करने वाले हमारे प्रभु का प्रतीक है (क्रूस की मृत्यु सही)। और

यदि वह पंडुकों या कबूतरों में से हो, तो वह हमारे प्रभु के निर्दोष होने व गरीब होने का प्रतीक है। (वह धनी होकर भी, तुम्हारे लिए कंगाल बन गया। (2 कुरि. 8:9)।

2. अन्नबलि : अन्नबलि में लोहू नहीं होता, अत: इसे होमबलि के साथ ही चढ़ाया जाता था। (गिनती 28:11 व 12)। यह प्रभु यीशु के मनुष्य रूप में बैतलहम से लेकर कलवरी तक की जीवन यात्रा में उनके पापरहित जीवन का प्रतीक है। (1 पतरस 1:19) इस बलिदान के लिए निम्नलिखित निर्देशों का पालन करना आवश्यक था :

1. **महीन पिसा मैदा :** (लैव्य. 2:1) यह प्रभु यीशु के चरित्र की सिद्धता का प्रतीक है। वह पवित्र और निर्दोष हैं। (2 कुरि. 5:21)

2. **तेल :** (लैव्य. 2:1-6) तेल, पवित्र आत्मा का प्रतीक है। तेल और मैदे का मिलाया जाना यह प्रकट करता है कि मसीह का जन्म पवित्र आत्मा के द्वारा हुआ। (लूका 1:35)। मैदे के ऊपर तेल का डाला जाना, पवित्र आत्मा प्रभु के बपतिस्मे को दर्शाता है। (लूका 3:22)। टुकड़ों पर डाला गया तेल मसीह का प्रतीक है, जिन्होंने पवित्र आत्मा के द्वारा स्वयं को चढ़ा दिया। (इब्रा. 9:14)।

3. **लोबान :** (लैव्य. 2:2) लोबान की सुगंध, परमेश्वर के सम्मुख हमारे प्रभु यीशु के जीवन की सुगंध का प्रतीक है। (इफि. 5:2)

4. **नमक :** (लैव्य. 2:13) नमक स्वाद देने वाली वस्तु है। हमें यह स्मरण रखना है कि परमेश्वर की संतान इस पृथ्वी के नमक हैं। (मत्ती 5:13) हमें इस संसार में मसीह का जीवन जीना है। संरक्षण के लिए भी नमक का प्रयोग किया जाता है। यह परमेश्वर और इस्राएल के बीच की गई ''नमक की अटल वाचा'' का प्रतीक है। (गिनती 18:19; 2 इति. 13:5)।

3. मेलबलि :

a. महत्व : मेलबलि आनंद के अवसर से जुड़ा हुआ था। (व्यवस्था. 27:7)। यह परमेश्वर के साथ मेल और संगति को सूचित करता है।

पाप की क्षमा के साथ ही वे सारी रुकावटें दूर हो जाती हैं जो परमेश्वर और मनुष्य के बीच में थीं, और मेल हो जाता है। स्वयं मसीह हमारा मेल है। (इफि. 2:14)। क्रूस पर बहाए अपने लोहू के द्वारा प्रभु ने मेल किया। (कुलु. 1:20)। जो लोग दूर थे, और जो निकट थे, दोनों को मेल-मिलाप का सुसमाचार सुनाया (इफि. 2:17)।

b. मेलबलि के तीन पहलू :

1. बलि चढ़ाया जाने वाला पशु चाहे नर हो या मादा, निर्दोष होना चाहिए।
2. यह धन्यवाद के लिए चढ़ाया जाता था। बलिदान का चढ़ावा किसी मन्नत का अथवा स्वेच्छा से दिया जाने वाला होता था। (लैव्य. 7:11-21)
3. यह बलिदान ''परमेश्वर के साथ मेल'' (रोमियों 5:1), ''परमेश्वर में शांति'' (यूहन्ना 14:27), ''परमेश्वर की शांति'' (फिलि. 4:7) और ''शान्तिदाता परमेश्वर'' को चित्रित करता है।

''ईश्वर ही की शांति नदी ही सी है,
बढ़ती आगे बढ़ती जयवंत होती है,
पूरी है पर तौभी बढ़ती जाती है,
लम्बी चौड़ी, गहरी होती जाती है।
ईश्वर की समीपी देती है आराम
भक्तिमान के दिल को पूरा है विश्राम।।''

c. बलिदान की विधि : एक निर्दोष पशु को परमेश्वर की उपस्थिति में लाना होता था। बलि चढ़ानेवाले को अपना हाथ उस पशु के सिर पर रख कर उसे मार डालना होता था। याजक उसके लोहू को लेकर वेदी पर और उसके चारों तरफ छिड़कता था। चर्बी को पूरी तरह होमबलि की तरह चढ़ाना होता था।

d. भोज : चर्बी को चढ़ाने के पश्चात् मेलबलि का मांस याजकों,

उनके परिवार और बलिदान चढ़ाने वाले के बीच बाँटा जाता था। मात्र यही बलिदान ऐसा था जिसमें से उसे चढ़ाने वाले को भी हिस्सा मिलता था।

यह निश्चित रूप से धन्यवाद का बलिदान होता था। चढ़ावा चढ़ाने वाले को तेल से सने हुए अखमीरी फुलके, तेल से चुपड़ी हुई अखमीरी रोटियाँ और तेल से सने हुए मैदे के फुलके, तेल से तर चढ़ाना होता था। मेलबलि प्रभु यीशु के कष्ट उठाने को चित्रित करता था। आज प्रभु की मेज़ प्रभु के कष्टों का प्रतीक है।

याद करें : प्रेम में चलो, जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया, और हमारे लिए अपने आपको सुखदायक सुगंध के लिए परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया। (इफिसियों 5:2)

प्रश्न :

1. सुखदायक सुगंध वाले बलिदान कौन-कौन से थे?
2. ये तीनों बलिदान, मसीह को कैसे चित्रित करते हैं?
3. अन्नबलि से हम कौन सा आत्मिक पाठ सीखते हैं?
4. मेलबलि के तीन पहलू कौन से हैं?

पाठ-4

याजकीय बलिदान-2

लैव्य. 4:1-35; 6:25-30; 5:1-6:7; 7:1-7

सुनहरा पद :

''क्योंकि जब बकरों और बैलों का लोहू और कलोर की राख अपवित्र लोगों पर छिड़के जाने से शरीर की शुद्धता के लिए पवित्र करती है, तो मसीह का लोहू, जिस ने अपने आपको सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो?'' इब्रानियों 9:13-14

पिछले पाठ में हमने सुखदायक सुगंध वाले बलिदानों के विषय में सीखा। अब हम पापबलि और दोषबलि के विषय में सीखेंगे।

1. पापबलि :

इसकी स्थापना परमेश्वर ने की थी, ताकि मनुष्य अपने पापों की क्षमा प्राप्त करके दोषभावना के बगैर जी सके। पाप का दण्ड मृत्यु है। परन्तु परमेश्वर ने अपनी करुणा के कारण मनुष्य के एवज में पशु को स्वीकार किया। मनुष्य के अनंत छुटकारे के लिए परमेश्वर ने बलिदान स्वरूप अपने एकलौते पुत्र को दे दिया। क्योंकि लोहू बहाए बिना पापों की क्षमा नहीं होती (इब्रा. 9:22)। इस सिद्ध और संपूर्ण बलिदान के कारण, जो एक बार हमेशा के लिए चढ़ाया गया, अब और बलिदानों की आवश्यकता नहीं रही। (इब्रा. 10:17-18) पाप बलि के लिए परमेश्वर ने इस्राएलियों को चार वर्गों में बाँटा, जिन्हें चार प्रकार के पशुओं का बलिदान करना था :-

a. **याजक** को एक निर्दोष बछड़ा चढ़ाना होता था। (लैव्य. 4:3)।

b. **इस्राएल की मंडली** के लिए निर्दोष बछड़ा (लैव्य. 4:13)।

c. **प्रधान पुरुष** के लिए निर्दोष बकरा (लैव्य. 4:22)।

d. **साधारण लोगों** के लिए निर्दोष बकरी (लैव्य. 4:27)।

बलिदान की विधि और महत्व :

1. बलिदान के लिए निर्दोष पशु को लाया जाता था, उसी प्रकार हमारा प्रभु निर्दोष था, जिसने पापी मनुष्यों के लिए अपना बलिदान दे दिया।
2. बलि चढ़ाने वाला अपना हाथ बलि पशु के सिर पर रखता था कि स्वयं को उसकी समानता में समझे, और अपने पापों को उस पशु पर डाल दे। मसीह यीशु हमारे पापों को अपनी देह पर उठाए क्रूस पर चढ़ गया। (1 पतरस 2:24)। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यह घोषणा की थी ''देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है'' (यूहन्ना 1:29)।
3. बलिदान चढ़ाने वाला पशु को मारकर उसका लोहू बहाता था। परमेश्वर उसे बलिदान चढ़ाने वाले के स्थान पर स्वीकार करते थे।
4. याजक लोहू को परमेश्वर के सम्मुख परदे के आगे छिड़कता था, कुछ लोहू लेकर वेदी की सींगों पर लगाता था, और बचा हुआ वेदी के पाए पर उंडेल देता था। इस प्रकार उसे क्षमा प्राप्त होती थी। कलवरी के क्रूस पर बहाए अपने लोहू के द्वारा मसीह हमारे पापों के लिए प्रायश्चित ठहरा। (रोमियों 3:25)।
5. पशु की चर्बी को वेदी पर पूरी रीति से जलाया जाता था। मनुष्यजाति के पापों के विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध, क्रूस पर अग्नि की तरह भड़का। प्रभु होमबलि की तरह चढ़ाए गए। और उनका बलिदान परमेश्वर के सम्मुख सुखदायक सुगंध ठहरा।

इस प्रकार प्राप्त हुए पापों की क्षमा के साथ बलिदान चढ़ाने वाला शांति से घर जा सकता था। परंतु उसे वापस आकर फिर बलिदान चढ़ाना होता था जब फिर से कोई पाप हो जाता। अथवा वर्ष में एक बार इसे दोहराना होता था। क्योंकि बलि पशु अनंत उद्धार नहीं दे सकता था। अनंत उद्धार तब प्राप्त हुआ, जब प्रभु यीशु ने एक सिद्ध बलिदान के

रूप में अपना प्राण दिया, जो एक बार सदा के लिए था। जो कोई मनुष्य उस पर विश्वास करता है, उसे पापों की क्षमा प्राप्त हो जाती है।

2. दोषबलि :

दोष भावना से छुटकारा प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति को पापबलि करना होता था, जबकि परमेश्वर और संगी भाई के प्रति, अनजाने में किए हुए पाप के लिए दोषबलि चढ़ाना होता था।

a. परमेश्वर के प्रति विश्वासघात :

इसका संबंध, जाने अनजाने परमेश्वर की आज्ञा तोड़ने अथवा पवित्र वस्तुओं के दुरुपयोग करने से था। (लैव्य. 5–14, 17)।

b. मनुष्यों के प्रति विश्वासघात :

अपने पड़ोसी के प्रति पाँच प्रकार के विश्वासघात का उल्लेख किया गया है। (लैव्य. 6:2) :

1. पड़ोसी की धरोहर को हड़पना।
2. मित्र से छल करना
3. मित्र की संपत्ति को लूट लेना
4. मित्र से झूठ बोलना
5. पड़ी हुई वस्तु को पाकर उसे वापस न करना।

अन्य बलिदान :

1. अभिषेक के लिए बलिदान : (लैव्य. 8)

याजकीय सेवा कार्य के लिए हारून और उसके पुत्रों के अभिषेक के लिए चढ़ाया जाने वाला बलिदान ।

2. आग के द्वारा (नित्य होमबलि) : (गिनती 28:3, 4)

दो निर्दोष भेड़ी के बच्चे, जिनमें से एक भोर को और दूसरे को गोधूलि के समय चढ़ाया जाना था, जो परमेश्वर के लिए सुखदायक

सुगंध ठहरता था।

3. स्तुति के बलिदान :

यह मेलबलि का एक भाग है। इब्रा. 13:15 में स्तुतिरूपी बलिदान का उल्लेख है, जो हमारे होंठों का फल है। यह परमेश्वर को धन्यवाद देना है, उसके उस दान के लिए, जो वर्णन से परे है। (2 कुरि. 9:15)।

4. अर्घ देना : (गिनती 28:7)

नित्य होमबलि और विशेष दिनों के बलिदान के दौरान मदिरा का अर्घ यहोवा के लिए दिया जाता था।

याद करें : व्यवस्था के अनुसार प्रायः सब वस्तुएँ लोहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं, और बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती। (इब्रा. 9:22)

प्रश्न :

1. पापबलि कौन-कौन से थे?
2. पापबलि किन के लिए चढ़ाए जाते थे?
3. बलिदान चढ़ाने पर, चढ़ाने वाले पापी और याजक को क्या करना होता था?
4. ''मसीह हमारा पापबलि है'' इसकी व्याख्या करें।
5. दोषबलि की व्याख्या करें।
6. पापबलि और दोषबलि में क्या अन्तर है?

पाठ-5

यहोवा के पर्व-1

निर्गमन 12:1-14; लैव्य. 23:5-8; गिनती 28:16-31

सुनहरा पद :

अपनी मन्नतों और स्वेच्छाबलियों के अलावा, अपने-अपने नियत समयों में, ये ही होमबलि, अन्नबलि, अर्घ और मेलबलि, यहोवा के लिए चढ़ाना। गिनती 29:39

यहोवा के पर्व का महत्व :

परमेश्वर ने इस्राएलियों को पर्व मनाने की आज्ञा दी, ताकि वे-

1. सभा के रूप में इकट्ठे होकर, परमेश्वर के सम्मुख आनंद मनाएं।
2. धार्मिक बातों से संलग्न रहें।
3. मन्नत मानें और स्वेच्छाबलि चढ़ाएँ।
4. परमेश्वर के भवन में आकर परमेश्वर की महिमा को देखें और आराधना करें।

यहोवा के सात पर्वों के अलावा, एक वर्ष में 90 दिन, विभिन्न प्रकार के पर्वों के लिए अलग किए गए थे।

एक विश्वासी के लिए, प्रतिदिन यहोवा के पर्व का दिन होता है, अतः वह निरंतर प्रभु में आनंदित रहता है। (नीतिवचन 15:15; 1 कुरि. 5:8)।

1. फसह का पर्व :

इस्राएलियों के घरों के अलंगों और चौखटों के सिरों पर लगे मेम्ने के लोहू को देखकर मृत्यु का दूत उनके घरों को लाँघ गया और उनके पहिलौठे सुरक्षित रहे। परन्तु जिनके घरों के अलंगों और चौखटों के सिरों

पर लोहू नहीं लगा था, उन पर श्राप आया और उनके पहिलौठे मार डाले गए। उसी रात इस्राएली लोग अपनी बंधुआई से छुड़ाए गए।

मसीह हमारा फसह का मेम्ना है (1 कुरि. 5:7)। प्रभु पर हमारा विश्वास हमें छुटकारा देता है। यह महत्वपूर्ण बात है कि जिस दिन यहूदियों ने फसह का पर्व मनाया उसी दिन प्रभु यीशु की मृत्यु हुई। नए वर्ष के पहिले महीने में यह पर्व मनाया जाता था। हमारे फसह का मेम्ना मसीह हैं, जिनके लोहू के द्वारा छुटकारा पाए हुए विश्वासी नए जीवन में प्रवेश करते हैं। फिर वे शैतान की दासता से स्वतंत्र हैं।

2. अखमीरी रोटी का पर्व :

छुटकारे के फसह के पर्व के बाद अखमीरी रोटी का पर्व मनाया जाता था। आत्मिक अर्थ में खमीर दुष्टता का प्रतीक है। (1 कुरि. 5:8; मत्ती 15:11-12)। हमारे विचारों और कार्यों में दुष्टता के दाग लगे हैं। एक विश्वासी को परमेश्वर के सम्मुख पवित्र होना चाहिए।

इस्राएलियों ने 40 वर्षों तक मन्ना खाया जो खमीर रहित था। मन्ना परमेश्वर के वचन का प्रतीक है। हमें वचन पढ़ना, उसका अध्ययन करना और उस पर मनन करना चाहिए। फसह के पर्व में खमीर को पूर्ण रूप से दूर किया जाता था। मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के कारण हमें पवित्रीकरण प्राप्त हुआ है। (इब्रा. 10:14; 1 यूहन्ना 1:7)।

3. पहिली उपज का पर्व :

अखमीरी रोटी के पर्व के सप्ताह के दौरान ही पहिली उपज का पर्व मनाया जाता था, जो सब्त के बाद के पहिले दिन मनाया जाता था। यह फसल की कटाई का आरंभ था। पक्के खेत की पहिली उपज का पूला याजक यहोवा के सामने हिलाया करता था जो यह संकेत करता था कि भूमि की उपज परमेश्वर की है। पहला पूला परमेश्वर को समर्पित करके वे उस उपज को खा सकते थे। यह पर्व मसीह यीशु के जी उठने का प्रतीक है। मसीह जी उठने वालों में पहिला फल है। (1 कुरि. 15:20, 23) और परमेश्वर के सम्मुख ग्रहण किया गया है।

लैव्य. 23:11 के अनुसार सब्त के बाद वाले दिन यह पर्व होता था। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि मसीह भी सब्त (फसह) के बाद वाले दिन जिलाए गए, जो सप्ताह का पहिला दिन था। (मत्ती 28:1)।

ये तीनों पर्व इन तीन बातों की स्पष्ट व्याख्या करते हैं–हमारे छुटकारे के लिए मेम्ने का मारा जाना, छुटकारे के पश्चात् एक पवित्र जीवन व्यतीत करना और परमेश्वर की दृष्टि में एक विश्वासी का स्वीकार किया जाना।

याद करें : सो आओ, हम उस उत्सव में आनंद मनावें, न तो पुराने खमीर से और न बुराई और दुष्टता के खमीर से, परन्तु सीधाई और सच्चाई की अखमीरी रोटी से। (1 कुरि. 5:8)

प्रश्न :

1. पर्वों की स्थापना का क्या उद्देश्य था?
2. फसह के पर्व से हम क्या पाठ सीखते हैं?
3. आत्मिक अर्थ में हमें अखमीरी रोटी का पर्व कैसे मनाना है?
4. व्याख्या करो–''मसीह पहिला फल है।''

पाठ-6

यहोवा के पर्व-2

लैव्य. 23:16-44; 23:1, 2; प्रेरितों 2, गिनती 28:26-29:16

सुनहरा पद :

परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ। ताकि व्यवस्था के आधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले। गलातियों 4:4-5

4. सप्ताहों का पर्व :

यह फसल का पर्व है जिसे पिन्तेकुस्त भी कहते हैं। यह सातवें सब्त के अगले दिन मनाया जाता है। यूनानी भाषा में ''पिन्तेकुस्त'' का अर्थ है पचासवाँ''। सात सब्तों के 49 दिनों के बाद का दिन पचासवाँ दिन पिन्तेकुस्त था। इस पर्व की विशेषता थी कि, इस्राएलियों को अपने घरों से दो खमीरी रोटियाँ लानी थीं। किसी भी अन्य अवसर पर 'खमीर' की अनुमति नहीं थी, जो इस बात का संकेत था कि परमेश्वर की उपस्थिति में पाप नहीं आ सकता। ये खमीरी रोटियाँ इस बात का प्रतीक हैं कि यहूदी और अन्यजाति लोग ''मसीह में एक नया मनुष्य'' बनाए गए हैं। पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया अस्तित्व में आई।

50वाँ दिन पिन्तेकुस्त का दिन है जब पवित्र आत्मा संसार में आए। उस दिन 3000 लोग कलीसिया में जोड़े गए। यह कहा जाता है कि सीनै पर्वत पर इस्राएलियों को दी गई व्यवस्था के स्मरण में यह पर्व मनाया जाता है। नए नियम में इसके समानान्तर दी गई बातें ध्यान देने योग्य हैं। प्रभु यीशु फसह के पर्व के दिन क्रूस पर मारे गए और इस प्रकार पाप का प्रायश्चित पूर्ण हुआ। पहिली उपज की भेंट के दिन प्रभु मृतकों में से जी उठे। उनके पुनरुत्थान के बाद 50वें दिन पवित्र आत्मा आए और सभी विश्वास करने वालों को मसीह की देह, अर्थात् कलीसिया

से जोड़ दिया।

5. नरसिंगे का पर्व :

सातवें महीने के पहिले दिन इस पर्व को मनाया जाता था। एक भविष्यद्वाणी के रूप में यह इस्राएल के फिर एकत्र हो जाने का प्रतीक है। शीघ्र ही कलीसिया के युग का अंत हो जाएगा और प्रभु के आगमन की घोषणा में तुरहियाँ फूँकी जाएँगी। इस दिन परमेश्वर के मंदिर में कुछ भेंटें चढ़ाई जाती थीं परन्तु लोगों को अपने घर में रहना होता था और अपने कार्यों से विश्राम करना होता था। आने वाले पर्वों के प्रति उन्हें सतर्क करने के लिए तुरहियाँ फूँकी जाती थीं। हमें भी इस प्रकार प्रोत्साहित किया गया है कि हम प्रभु के आगमन के लिए तैयार रहें। इसका अर्थ यह है कि हमें पूरे संसार में सुसमाचार रूपी नरसिंगे को फूँकना है। नरसिंगे के फूँकने के द्वारा यरीहो नगर पर विजय प्राप्त हुई थी। प्रभु यीशु के नाम में शहरपनाएं गिर जाएँगी जो शैतान के गढ़ हैं, वे गिराए जाएँगे।

प्रायश्चित का दिन :

पापों के प्रायश्चित के लिए अलग-अलग बलिदान चढ़ाए जाते थे, परन्तु सातवें महीने के दसवें दिन चढ़ाया जाने वाला बलिदान समस्त इस्राएली जाति के प्रायश्चित के लिए होता था। यह छठवाँ पर्व था। हमारे स्वयं के पापों के प्रायश्चित के विषय में इब्रानियों 10:14 कहता है, ''क्योंकि उसने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिए सिद्ध कर दिया है।'' ''तो फिर पाप का बलिदान नहीं रहा।'' इब्रा. 10:18 ।

यह बलिदान महत्वपूर्ण था और इसमें दो बकरों का बलिदान चढ़ाया जाता था। एक परमेश्वर के लिए बलि किया जाता था, और दूसरे बलि के बकरे को पाप के बोझ के साथ जंगल में छोड़ दिया जाता था। यूहन्ना बपतिस्मादाता ने प्रभु यीशु की तरफ संकेत करके कहा था, ''देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत के **पाप उठा ले जाता है।**'' दोनों बकरे प्रभु यीशु की मृत्यु के दो अलग-अलग पहलुओं को

प्रकट करते हैं। पहला, प्रभु यीशु ने क्रूस पर स्वयं का बलिदान देकर पापों का दण्ड चुकाया। दूसरा, वे हमारे पापों को हमसे बहुत दूर ले गए कि वह फिर कभी पाया न जाएगा।

अंतरा :

1. परमेश्वर का प्यारा बेटा,
एकलौता और पवित्र था,
फिर भी आया उठाने को,
सारे संसार के पापों को।

स्थायी :

निष्कलंक और निर्दोष मेम्ना,
परमेश्वर का भेजा हुआ,
अपने लहू से करता साफ,
ख्रीस्त यीशु है वो पाक मेम्ना।

2. वो आया था हमारे बीच
और हमने उसको दिया क्रूस
उसने वह क्रूस उठा लिया
और जग के लिए प्राण दिया।

3. मैं पापों में जब खोया था,
यीशु प्रभु ने ढूँढा था,
दलदल में से निकाला था,
अपने लहू से धोया था।

(डोरा एलेक्स)

यह इस्राएल के लिए पश्चाताप का दिन भी था। उन्हें अपने जीव को कष्ट देना था। केवल पश्चाताप के द्वारा ही हमें पापों की क्षमा प्राप्त होती है। 50वाँ वर्ष **जुबली का वर्ष** होता था। इसका आरंभ प्रायश्चित के दिन से होता था। सारे ऋण माफ किए जाते थे। दासों को स्वतंत्र कर दिया जाता था, और बेची गई भूमि को वापस कर दिया जाता था। प्रभु

यीशु के क्रूस की मृत्यु के आधार पर हमारे सारे उधार माफ किए गए हैं। हम पाप की दासता से स्वतंत्र किए गए हैं और आत्मिक रूप से धनी हो गए (गलातियों 5:1; यूहन्ना 8:32)।

6. झोपड़ियों का पर्व :

इस्राएली लोग जंगल की यात्रा के 40 वर्षों के दौरान तंबुओं में रहे, जिसके स्मरण में यह पर्व मनाया जाता है। सातवें महीने के पंद्रहवें दिन से बाईसवें दिन तक उन्हें झोपड़ियों में रहना होता था। यह पर्व हमें स्मरण दिलाता है कि इस संसार में हमारा जीवन क्षणिक है। झोपड़ियाँ केवल अस्थायी घर होते हैं। (2 कुरि. 5:1)।

यह समय अलग किया गया था कि लोग अपनी भूमि की उपज में से परमेश्वर के लिए भेंट लेकर आएँ। हमें परमेश्वर की ओर से जो भरपूरी प्राप्त हुई है, उसके लिए हमें आभारी होना चाहिए, और उसमें से हमें परमेश्वर के कार्य के लिए प्रसन्नता से देना चाहिए।

7. सब्त :

यह लगातार जारी रहने वाला एक ''पर्व'' था जिसे पूरे देश में कार्य के स्थान में और अपने घरों में मनाना था। सब्त का दिन आज भी मनाया जाता है। यहूदी लोग शुक्रवार की शाम से लेकर अगले दिन शाम तक, एक दिन (24 घंटे) का विश्राम करते हैं, और किसी भी प्रकार का कार्य नहीं करते। हम विश्वासियों ने भी प्रभु के विश्राम में प्रवेश किया है। (इब्रा. 4:3)। यह हमारा सप्ताह के एक दिन का नहीं, परन्तु प्रतिदिन का अनुभव है।

परमेश्वर ने दो कारणों से फसह की स्थापना की :

1. यह स्मरण करने के लिए, कि परमेश्वर ने इस पृथ्वी की और जो कुछ उसमें है उन सब की सृष्टि छः दिन में की। यह बात विकासवाद के विपरीत है। ''जिसने सब कुछ बनाया, वह परमेश्वर है।'' (इब्रा. 3:4)।
2. मिस्र से उनके छुटकारे को स्मरण करने के लिए (व्यवस्था. 5:15)।

उसी प्रकार हम भी पाप के दासत्व से छुड़ाए गए हैं।

याद करें : ''और जब इन की क्षमा हो गई है, तो फिर पाप का बलिदान नहीं रहा।'' (इब्रा. 10:18)

प्रश्न :

1. पिन्तेकुस्त के दिन कौन सी तीन घटनाएँ हुईं?
2. तुरहियों के पर्व से हम कौन सा पाठ सीखते हैं?
3. प्रायश्चित के दिन के दो बकरे कैसे मसीह का प्रतीक हैं?
4. झोपड़ियों का पर्व किस बात का प्रतीक है?

पाठ–7

इस्राएली - कनान में

यहोशू अध्याय 3–4

सुनहरा पद :

इतना हो कि तू हियाव बांधकर और बहुत दृढ़ होकर जो व्यवस्था मेरे दास मूसा ने तुझे दी है, उन सबके अनुसार करने में चौकसी करना, और उस से न तो दहिने मुड़ना और न बाएँ, तब जहाँ जहाँ तू जाएगा वहाँ वहाँ तेरा काम सफल होगा। यहोशू 1:7

यरदन पार करना :

वायदे के देश के पास पहुँचने पर इस्राएलियों के सामने तीन चुनौतियाँ थीं। उस देश में प्रवेश करना, उस पर विजय प्राप्त करना और उसको वश में करना।

यहोशू ने शित्तीम से यरदन तक लोगों की अगुआई की और वहाँ पहुँचकर तीन दिन तक ठहरे रहे। इस पड़ाव के भी तीन पहलू थे।

1. यरदन पार करने के विषय में परमेश्वर से स्पष्ट निर्देश प्राप्त करना।
2. परमेश्वर के अद्‌भुत कार्यों पर पूर्ण रूप से विश्वास करने के लिए उनके हृदयों को तैयार करना। ताकि वे अर्थपूर्ण रूप से परमेश्वर की आराधना कर सकें।
3. परमेश्वर के सामर्थपूर्ण उपस्थिति के प्रति उनके विश्वास की पुष्टि करना।

यहोशू ने दिव्य निर्देश का अक्षरश: पालन किया। हम बार-बार पढ़ते हैं, ''परमेश्वर ने यहोशू से कहा'' (3:7, 4:15 आदि) और यहोशू ने आज्ञा मानी। गिनती 4:11 में दिए गए निर्देशानुसार याजकों ने वाचा का संदूक उठाकर लोगों की अगुआई की। (2 शमूएल 6 में हम पढ़ते हैं

कि किस प्रकार परमेश्वर का क्रोध भड़का, जब दाऊद परमेश्वर के संदूक के विषय में दिए गए निर्देशों का पूर्ण रूप से पालन करने में चूक गया था।)

याजकों के पाँव यरदन नदी के तीर के जल में डूब गए, तब नदी का बहता जल रुक गया और दीवार सा उठ गया और बँट गया और सूखी भूमि पर याजक खड़े रहे, और सब लोग पार उतर गए।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर जिसने पृथ्वी और जो कुछ उसमें है, सब वस्तुओं की सृष्टि की, वह आज्ञा देते हैं और पहाड़, नदियाँ और समुद्र उनकी आज्ञा का पालन करते हैं। परमेश्वर ''पृथ्वी भर का प्रभु'' हैं। (यहोशू 3:11; 3:13)।

आज के युग में, विज्ञान ने बहुत तरक्की कर ली है इस कारण मनुष्य आश्चर्यकर्मों पर तुरंत विश्वास नहीं कर पाते। परन्तु जो लोग सृष्टि पर परमेश्वर के प्रभुत्व पर विश्वास करते हैं, वे इस सत्य को सहज स्वीकार कर सकते हैं कि परमेश्वर नियत बातों में भी परिवर्तन कर सकते हैं।

नदी को पार करने के विषय में हम कुछ बातें सीखेंगे।

1. इस्राएली उसी समस्या का सामना कर रहे थे जो उन्होंने लाल समुद्र को पार करते समय किया था। हज़ारों पुरुष, स्त्री और बच्चे थे जिन्हें पार जाना था। वे लोग उस स्थान पर अजनबी थे, और इतने लोगों का नाव के द्वारा एक दिन में नदी पार करना असंभव था।
2. अस्थिर मन वाले इन लोगों को परमेश्वर की महान सामर्थ दिखाया जाना था, ताकि वे विश्वास में दृढ़ हो सकें।
3. मूसा की मृत्यु के पश्चात् उन्हें इस बात का अनुभव करना था कि परमेश्वर यहोशू के साथ हैं। (3:7) ताकि वे उसकी अगुआई पर विश्वास कर सकें।
4. इस आश्चर्यकर्म के द्वारा उन लोगों में हिम्मत आई कि अपने सामने के अन्यजाति देश के विरोध का सामना कर सकें। (3:10)।

स्मारक पत्थर :

मनुष्य आसानी से सब बातों को भूल जाते हैं। एक बार यरदन नदी पहले की तरह बहने लगती तो यह संभावना थी कि इस्राएली लोग परमेश्वर के आश्चर्यकर्म को भूल जाते।

जिस प्रकार मिस्र की दासता से उनके छुटकारे को स्मरण रखने के लिए परमेश्वर ने उनके लिए फसह की स्थापना की, उसी प्रकार यरदन को पार करने के स्मरण में एक स्मारक बनाने का निर्देश परमेश्वर ने उन्हें दिया। यरदन के बीच में, सूखी भूमि पर जहाँ याजकों ने पाँव धरे थे, वहाँ से बारह पत्थर उठाकर अपने साथ पार ले जाना था। इस कार्य के लिए यहोशू ने बारह गोत्रों में से बारह पुरुषों को चुन रखा था। इन पत्थरों को गिलगाल में खड़ा करना था, जहाँ उन्होंने डेरे डाले। (4:1-8)। और यरदन के बीच में भी जहाँ याजकों ने वाचा के सन्दूक को उठाए हुए अपने पाँव धरे थे, वहाँ यहोशू ने बारह पत्थर खड़े कराए (4:9)। और याजक संदूक उठाए हुए उस समय तक यरदन के बीच में खड़े रहे, जब तक ये सब बातें पूरी न हो चुकीं। तब सब लोग फुर्ती से पार उतर गए। यह स्मारक उनके लिए एक चिह्न था ताकि जब उनके बाल बच्चे उनसे उस स्मारक के विषय में पूछें तो माता-पिता उन्हें यरदन नदी के आश्चर्यकर्म के बारे में बताएँ। (4:6-7)

आत्मिक पाठ : इस्राएली लोगों के जीवन की महान घटनाएँ विश्वासी के जीवन में आत्मिक पाठ सिखाती हैं।

1. फसह : लोहू के द्वारा छुटकारा

यह कलवरी पर बहाए गए लोहू और विश्वास के द्वारा प्राप्त उद्धार की ओर संकेत करता है। (निर्गमन 12; 1 कुरि. 5:7)।

2. मिस्र की शत्रुता : यह विश्वासी के प्रति संसार की शत्रुता की ओर संकेत करता है। लाल समुद्र को पार करना इस बात का प्रतीक है कि विश्वासी को इस संसार और उसकी बातों से एक अलगाव का जीवन व्यतीत करना चाहिए।

3. मारा और एलीम के अनुभव और अमालेकियों से युद्ध की तुलना एक विश्वासी के जीवन को प्रतिबिंबित करता है।

4. यरदन पार करके अन्यजातियों पर प्राप्त किए गए विजय की तुलना, नया जन्म प्राप्त एक विश्वासी के विजयी मसीही जीवन से की जा सकती है।

5. गिलगाल के स्मारक पत्थर, एक विश्वासी के न्याय से छुटकारे और मसीह में सुरक्षा का प्रतीक है। यरदन के बीच रखे गए पत्थर मसीह के कष्टों का प्रतीक है, जिन्होंने न्याय के श्राप को अपने ऊपर उठा लिया ताकि हम बचाए जा सकें। (भजन 42:7)।

याद करें : हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है। (इफिसियों 1:3)

प्रश्न :

1. वायदे के देश के पास पहुँचने पर इस्राएलियों के सामने कौन सी चुनौतियाँ थीं?
2. इस्राएलियों ने यरदन नदी को कैसे पार किया?
3. इस आश्चर्यकर्म के लिए क्या स्मारक बनाया गया और यह स्मारक क्यों बनाया गया?
4. यरदन नदी के बीच लगाए गए पत्थर किसका प्रतीक हैं?
5. यरदन नदी को पार करने के आश्चर्यकर्म के द्वारा हम कौन सा आत्मिक पाठ सीखते हैं?

पाठ-8

यहोशू के युद्ध

यहोशू अध्याय 6, 7 व 10

सुनहरा पद :

तब यहोशू ने उनसे कहा, ''डरो मत, और न तुम्हारा मन कच्चा हो। हियाव बाँधकर दृढ़ हो, क्योंकि यहोवा तुम्हारे सब शत्रुओं से जिन से तुम लड़नेवाले हो, ऐसा ही करेगा।'' यहोशू 10:25

गिलगाल में डेरे डालकर बसने के बाद इस्राएली लोगों को अपने आस-पास के अन्यजातियों पर भी विजय प्राप्त करना था। सबसे बड़ा और सबसे मजबूत यरीहो नगर पास ही में था। वास्तव में वही वायदा किए हुए कनान देश का प्रवेश द्वार था। यरीहो पर विजय प्राप्ति उनके हिम्मत का कारण बन सकता था। अत: परमेश्वर ने स्वयं को यहोवा की सेना के प्रधान के रूप में यहोशू पर प्रकट किया (यहोशू 5:13-15)। और उसे निर्देश दिए कि लोगों को क्या करना होगा।

निश्चित रूप से युद्ध की कोई तैयारी नहीं हो रही थी। प्रतिदिन लोग उस दृढ़ शहरपनाह के चारों ओर घूम कर आते थे। सबसे आगे हथियारबंद पुरुष, फिर सात याजक जुबली के सात नरसिंगे लिए फूँकते हुए, फिर यहोवा का संदूक लेकर याजक और सबसे पीछे प्रजा। इस क्रम में उन्होंने छ: दिनों तक प्रतिदिन एक बार उस शहरपनाह का चक्कर लगाया। सातवें दिन वे भोर को बड़े तड़के उठकर उसी क्रम में नगर के चारों ओर सात बार घूम आए। तब यहोशू ने लोगों से कहा, ''जयजयकार करो, क्योंकि यहोवा ने यह नगर तुम्हें दे दिया है।'' तब लोगों ने जयजयकार किया और याजक नरसिंगे फूँकते रहे। तब शहरपनाह नेव से गिर पड़ी, तब लोग अपने अपने सामने से उस नगर में चढ़ गए और उस पर कब्जा कर लिया। इब्रानियों 11:30 कहता है कि ''विश्वास के द्वारा यरीहो की शहरपनाह गिर पड़ी। परमेश्वर ने आज्ञा दी थी कि उस

नगर का सब चाँदी, सोना, और पीतल और लोहे के पात्र यहोवा के लिए पवित्र हैं और उसी के भंडार में रखे जाएँ। बाकी सब वस्तुओं को आग लगाकर फूँका जाए। और कोई भी व्यक्ति अपने लिए कुछ भी न ले। यदि कोई अपने लिए कुछ लेगा तो परमेश्वर का श्राप उस पर आएगा।

ऐ में पराजय :

ऐ नामक नगर यरीहो के पश्चिमी की ओर 16 किलोमीटर की दूरी पर था। जिन लोगों को यहोशू ने उस नगर का भेद लेने के लिए भेजा था, उन्होंने यहोशू के पास लौटकर कहा, ''सब लोग वहाँ न जाएँ, कोई दो वा तीन हज़ार पुरुष जाकर ऐ को जीत सकते हैं क्योंकि वे लोग थोड़े ही हैं। इसलिए कुछ तीन हज़ार पुरुष वहाँ गए। परन्तु ऐ के रहनेवालों के सामने से भाग आए। ऐ के लोगों ने उनमें से 36 पुरुष मार डाले। यह एक शर्मनाक पराजय थी। यहोशू और इस्राएल के वृद्ध लोगों ने अपने-अपने सिर पर धूल डाली और यहोवा के संदूक के सामने मुँह के बल गिरकर पृथ्वी पर सांझ तक पड़े रहे। तब परमेश्वर ने उनकी पराजय का कारण प्रकट किया।

पराजय का कारण :

परमेश्वर ने यहोशू से कहा, लोगों के मध्य में पाप है (7:13)। उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया है। अतः उन्हें शुद्धिकरण की आवश्यकता है। यरीहो की धन संपत्ति में से अपने लिए कुछ ले लेने के द्वारा जो व्यक्ति इस्राएल पर श्राप लाया था, उसका पता लगाने में परमेश्वर ने यहोशू की सहायता की! आकान पकड़ा गया और उसकी लूट का सामान भी बरामद कर लिया गया। आकान को, उसके परिवार को और जो कुछ उसका था, सब कुछ को आकोर की तराई में ले जाया गया और सब इस्राएलियों ने उसको पत्थरवाह किया, और उनको आग में डालकर जलाया, और उनके ऊपर पत्थर डाल दिए। अपने शुद्धिकरण के पश्चात् इस्राएलियों ने ऐ नगर को जीत लिया। तब वे समझ गए कि विजय प्राप्त करने में पाप अवरोध उत्पन्न कर रहा था।

ऐ नगर पर विजय के पश्चात् परमेश्वर की इच्छा थी कि अपने लोगों को अपनी व्यवस्था स्मरण दिलाएँ। यहोशू ने समस्त प्रजा को इकट्ठा करके समूचे पत्थरों की एक वेदी बनवाई जिस पर औजार नहीं चलाया गया था। और उस पर बलिदान चढ़ाए। उसी स्थान पर उसने आशीष और शाप की व्यवस्था के सारे वचन पढ़कर सुना दिए। और उन्हीं पत्थरों पर यहोशू ने व्यवस्था की नकल कराई (यहोशू 8:30-35)।

कनान के निवासियों को पराजित करके इस्राएलियों को वहाँ बसाना वास्तव में परमेश्वर का कार्य था। नूह और लूत के दिनों में अपने अनेक पापों के द्वारा कनानी लोग अपने ऊपर परमेश्वर का श्राप लाए। एक दुष्ट भूमि पर परमेश्वर का न्याय आया था।

इस्राएल के विरुद्ध पाँच राजाओं का संगठन :

अपनी जान बचाने के लिए गिबोन के निवासियों ने इस्राएलियों के साथ वाचा बाँधी। जब यरुशलेम के राजा अदोनीसेदेक ने सुना कि गिबोन के निवासियों ने इस्राएलियों से मेल कर लिया है, तब उसने हेब्रोन के राजा होहाम, यर्मूत के राजा पिराम, लाकीश के राजा यापी और एग्लोन के राजा दबीर के साथ संधि करके एक साथ गिबोन पर चढ़ाई कर दी। गिबोनियों की विनती पर यहोशू अपने योद्धाओं को संग लेकर उनकी सहायता करने के लिए गया। और यहोवा ने यहोशू से कहा, ''उन से मत डर, क्योंकि मैंने उनको तेरे हाथ में कर दिया है।'' यहोवा ने आकाश से बड़े-बड़े पत्थर उन पर बरसाए, और वे मर गए। जो ओलों से मारे गए उनकी गिनती इस्राएलियों की तलवार से मारे हुओं से अधिक थी। अत: वे समझ गए कि यरीहो और ऐ नगरों की तरह परमेश्वर ने ही उनकी तरफ से युद्ध किया है। फिर जब यहोशू को पता चला कि शत्रु पहाड़ों की तरफ से बचकर भाग रहे हैं, तब उसने यहोवा से विनती की, कि सूर्य थम जाए (ताकि युद्ध के लिए रोशनी बनी रहे) और चन्द्रमा भी थम जाए (ताकि रात न हो जाए)। परमेश्वर ने यहोशू की प्रार्थना सुनी और ऐसा ही हो गया। फिर से यह प्रमाणित हो गया कि परमेश्वर ने इस्राएलियों की तरफ से युद्ध किया। (10:42)।

उत्तर दिशा के अभियान :

दक्षिण दिशा में इस्राएलियों की विजय का समाचार सुनकर उत्तर दिशा के हासोर के राजा याबीन ने घोड़ों और रथों के साथ एक बड़ी सेना तैयार की। तब यहोवा ने यहोशू से कहा, ''उनसे मत डर, क्योंकि कल इसी समय मैं उन सभी को इस्राएलियों के वश में करके मरवा डालूँगा।'' और यहोवा ने उनको इस्राएलियों के हाथ में कर दिया। इस्राएलियों ने और भी युद्ध जीते, और जैसा यहोवा ने मूसा से कहा, था, वैसा ही यहोशू ने वह सारा देश ले लिया, और उसे इस्राएल के गोत्रों और कुलों के अनुसार बाँट कर उन्हें दे दिया। और देश को लड़ाई से शान्ति मिली। (यहोशू 11:23)।

याद करें : चाहे सेना भी मेरे विरुद्ध छावनी डाले, तौभी मैं न डरूँगा; चाहे मेरे विरुद्ध लड़ाई ठन जाए, उस दशा में भी मैं हियाव बाँधे निश्चिंत रहूँगा। (भजन संहिता 27:3)

प्रश्न :

1. इस्राएलियों ने यरीहो के किले पर कैसे विजय प्राप्त की?
2. कनान में पहला युद्ध कौन सा था?
3. ऐ के साथ युद्ध में इस्राएली क्यों पराजित हुए?
4. यहोशू के युद्ध की सूची बनाएँ जो उसने इस्राएल के लिए किए।

पाठ–9

शरण नगर

यहोशू अध्याय 20

सुनहरा पद :

तब ऐसे नगर ठहराना, जो तुम्हारे लिए शरणनगर हों, कि जो कोई किसी को भूल से मार के खूनी ठहरा हो, वह वहाँ भाग जाए। वे नगर तुम्हारे निमित्त पलटा लेने वाले से शरण लेने के काम आएँगे, कि जब तक खूनी न्याय के लिए मण्डली के सामने खड़ा न हो तब एक वह न मार डाला जाए। गिनती 35:11-12

यहोशू ने जब सारे देश को अपने वश में कर लिया, तब परमेश्वर ने उससे कहा कि वह शरण नगरों को ठहराए। उसके विषय में परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दे दिए थे। ये नगर उस व्यक्ति की सुरक्षा के लिए थे, जिसके हाथ से अनजाने या गलती से किसी दूसरे की हत्या हो जाए, तो वह खून का बदला लेने वाले से बचकर उस शरण नगर में रह सकता था।

व्यवस्था के अनुसार खूनी को मार डाला जाना चाहिए (व्यवस्थाविवरण 19:11, 12, 20, 21)। इस प्रकार के पापपूर्ण कार्य से दूर रहने के उद्देश्य से ही कठोर दण्ड ठहराया गया था। फिर भी यदि कोई पुरुष किसी को गलती से मार डाले, तो वह इन शरण नगरों में से किसी में भी जाकर अपनी जान बचा सकता था।

अनजाने की गई हत्या का अर्थ है–जैसे कोई किसी के संग लकड़ी काटने को जंगल में जाए, और वृक्ष काटने को कुल्हाड़ी उठाए, और कुल्हाड़ी बेंट से निकलकर उस दूसरे व्यक्ति को ऐसे लगे कि वह मर जाए, तो वह उन नगरों में से किसी में भागकर जीवित रहे। व्यवस्थाविवरण 19:4-5 । इस प्रकार उसका निर्दोष प्राण बचाया जाएगा।

इस उद्देश्य से छः नगर चुने गए थे। महत्वपूर्ण बात यह है कि ये

छः नगर उन नगरों में से चुने गए जो याजकों के गोत्र लेवी को दिए गए थे। हत्यारा भागकर अपने पास के नगर में शरण ले सकता था, और नगर के फाटक पर पुरनियों के पास जा सकता था। अपना न्याय होने तक या महायाजक की मृत्यु हो जाने तक वह उस शरण नगर में रह सकता था। मसीह यीशु हमारा शरणस्थान हैं जहाँ हम सुरक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

इनमें से तीन नगर यरदन के पश्चिम की ओर थे और तीन नगर पूरब की ओर थे। इसका अर्थ यह है कि ये शरण नगर इतने करीब थे कि भागकर उनमें शरण लेना आसान था। इन नगरों में वही खूनी शरण ले सकता था जो निर्दोष था। परन्तु प्रभु यीशु में उद्धार और शरण पाने के लिए पापी के लिए कोई भी शर्त ठहराई नहीं गई है। इन नगरों के विषय में हम विस्तार से सीखेंगे।

यरदन के पश्चिम की ओर के शरण नगर :

1. गलील का केदेश : जो नप्ताली के पहाड़ी देश में है। इसका अर्थ है ''पवित्रता'' अथवा ''पवित्र स्थान''। यह पवित्र उद्धारकर्ता का प्रतीक है, जो पवित्र और निर्मल है। (इब्रा. 7:26)। पर जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चालचलन में पवित्र बनो। (1 पतरस 1:15)।

2. एप्रैम के पहाड़ी देश में शकेम : इसका अर्थ है ''कंधे'' जो बोझ उठाते हैं। मत्ती 11:28 कहता है–''हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।'' वही हमारा शरणस्थान है जो हमारे सभी बोझों का उठा लेता है।

3. यहूदा के पहाड़ी देश में हेब्रोन : इसका अर्थ है ''सहभागिता''। परमेश्वर और मनुष्यों के साथ हमारी सहभागिता का आधार मसीह यीशु हैं। वास्तविक सहभागिता मसीह में और मसीह के द्वारा ही प्राप्त हो सकती है। (1 यूहन्ना 1:3)।

यरदन के पूर्व की ओर के शरण नगर :

1. जंगल में चौरस भूमि पर बसे रूबेन के गोत्र के भाग में

बेसेर : इसका अर्थ है, ''अजेय किला''। भजन 61:3 और 62:6 उद्धारकर्ता को ''ऊँचा गढ़'' और ''शरणस्थान'' के रूप में चित्रित करता है। वहाँ कोई भी सदा के लिए शरण और सुरक्षा प्राप्त कर सकता है।

2. गाद के गोत्र के भाग में गिलाद का रमोत : इसका अर्थ है- ''गवाही का स्थान''। प्रभु एक सिद्ध उदाहरण हैं। उनके शत्रु उनमें कोई दोष न पा सके। स्वर्ग ने इस बात की गवाही दी कि वह प्रिय पुत्र है जिससे परमेश्वर प्रसन्न हैं। (लूका 3:22; मत्ती 3:17)। उसी प्रकार जो लोग मसीह में हैं उन्हें सत्य और उच्च नैतिक स्तर के साथ जीवन व्यतीत करना चाहिए। (1 यूहन्ना 3:19-20)।

3. मनश्शे के गोत्र के भाग में बाशान का गोलान : इसका अर्थ है ''सेवा''। ''मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे।'' (मत्ती 20:28; मरकुस 10:45)। रोमियों 6:18 कहता है कि हमें ''धर्म के दास'' होना चाहिए। अपनी सभी पत्रियों के परिचय में पौलुस स्वयं को ''प्रभु यीशु का सेवक'' कहते हैं।

ऐतिहासिक रूप से, किसी निर्दोष व्यक्ति की सुरक्षा के लिए ये शरण नगर ठहराए गए थे। आत्मिक रूप से ये हमें अद्‌भुत सत्य सिखाते हैं। यह उस प्रावधान की ओर संकेत करता है, जो परमेश्वर ने हमारे उद्धार के लिए किया है।

याद करें : जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा। मैं यहोवा के विषय कहूँगा, कि वह मेरा शरणस्थान और गढ़ है। वह मेरा परमेश्वर है, मैं उस पर भरोसा रखूँगा। (भजन संहिता 91:1-2)

प्रश्न :

1. शरण नगर का क्या अर्थ है?
2. शरणनगरों के नाम और उनके अर्थ बताएँ।
3. उन शरणनगरों से हम कौन से आत्मिक पाठ सीखते हैं?

पाठ-10

यहोशू और कालेब

गिनती 13, 14:6, 24, 29, 30, 26:64-65, 32:11-12

सुनहरा पद :

''आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे।'' यहोशू 24:15

''और अब देख, जब से यहोवा ने मूसा से यह वचन कहा था, तब से पैंतालीस वर्ष हो चुके हैं, जिन में इस्राएली जंगल में घूमते फिरते रहे, उनमें यहोवा ने अपने कहने के अनुसार मुझे जीवित रखा है और अब मैं पचासी वर्ष का हूँ। जितना बल मूसा के भेजने के दिन मुझ में था उतना बल अभी तक मुझ में है; युद्ध करने, व भीतर बाहर आने जाने के लिए जितनी उस समय मुझ में सामर्थ्य थी, उतनी ही अब भी मुझमें सामर्थ्य है।'' यहोशू 14:10-11

मूसा के पश्चात् यहोशू और कालेब इस्राएल के दो महान अगुए हुए। सर्वशक्तिमान परमेश्वर पर उनका अटूट विश्वास था, और इस विश्वास के द्वारा उन्होंने इस्राएल के लिए वीरता से युद्ध किए और विजयी हुए।

गिनती 13 में इसका विवरण दिया गया है। मिस्र से निकलकर दो वर्ष की यात्रा करके वे कनान की सीमा में, कादेश बर्ने पहुँचे। उस देश का और उस देश के लोगों का भेद लेना आवश्यक था। अतः मूसा ने प्रत्येक गोत्र में से एक-एक अगुए को इस कार्य के लिए चुना। नून का पुत्र यहोशू (होशे) और कालेब भी चुने गए।

कनान का भेद लेकर सब अगुए लौट आए। यहोशू और कालेब को छोड़कर बाकी दसों अगुओं ने उस देश का और वहाँ के निवासियों का वर्णन करके इस्राएलियों को भय, शंका और दहशत से भर दिया। परन्तु यहोशू और कालेब ने दृढ़ निश्चय के साथ कहा कि वे उस देश को जीत सकते हैं क्योंकि परमेश्वर उनके साथ हैं। इस्राएलियों ने उन दस

अगुओं की बात का विश्वास किया और यहोशू और कालेब को पत्थरवाह करने के लिए तैयार हो गए। तब परमेश्वर का कोप उन पर आया। परमेश्वर का तेज सब इस्राएलियों पर प्रकाशमान हुआ और परमेश्वर ने उनसे बातें कीं।

कितनी सरलता से इस्राएली उन आश्चर्यकर्मों को भूल गए जिनके द्वारा मिस्र की दासता से उनको छुटकारा प्राप्त हुआ था। कितनी जल्दी वे जंगल की यात्रा के दौरान मिली, परमेश्वर की अद्भुत अगुआई को भूल गए। वे बुड़बुड़ानेवाले और अविश्वासी ही बने रहे। अत: परमेश्वर ने कहा, कि यहोशू और कालेब के अलावा कोई भी इस्राएली उस वायदे के देश में प्रवेश नहीं कर पाएगा। (गिनती 14:29)। अपने अविश्वास के कारण वे इस श्राप को स्वयं अपने ऊपर लाए। इसके परिणामस्वरूप उन्हें अगले अड़तीस वर्षों तक जंगलों में भटकते रहना पड़ा। यरीहो के निकट मोआब के मैदानी इलाके में पहुँचने पर मूसा ने लोगों की गिनती की। चालीस वर्ष पूर्व सीनै के जंगल में जिनकी गिनती हुई थी, उनमें से यहोशू और कालेब को छोड़ और कोई जीवित नहीं बचा था। (गिनती 26:63-65 और 32:10-12)।

उन्होंने विश्वास के साथ मिस्र देश को छोड़ा था, परन्तु वायदे के देश को जीत लेने के समय उन्होंने उस विश्वास को खो दिया था। इस कारण अड़तीस वर्षों तक उन्हें जंगल में भटकना पड़ा। और अंत में जंगल में ही मरना पड़ा।

इसके विपरीत यहोशू और कालेब अपने विश्वास में स्थिर रहे। उस देश में पहुँचकर अपने अधिकार को स्थापित करने के द्वारा उन्हें अपने दृढ़ विश्वास का प्रतिफल प्राप्त हुआ। कालेब यहूदा के गोत्र में से था और यहोशू एप्रैम गोत्र का। सीनै पर्वत पर मूसा के साथ रहने का सौभाग्य यहोशू को प्राप्त हुआ। हम देखते हैं कि अपनी वृद्धावस्था तक कालेब अपने विश्वास को दृढ़ता से थामे रहा। वह अपने भाग किर्यतर्बा (हेब्रोन) को गया और वहाँ के निवासियों को निकालकर अपना अधिकार स्थापित किया (यहोशू 15:13-15, 65)। उसके गोत्र के लोगों ने सोच

लिया था कि यह कार्य असंभव था, क्योंकि शत्रु शक्तिशाली थे। कालेब ने अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजना को स्वीकार कर लिया था, इसी कारण उसने विश्वास के साथ उस कार्य को पूरा किया। इस्राएलियों के इतिहास में यहोशू की अगुआई एक महत्वपूर्ण बात है, क्योंकि वायदा किए हुए देश तक लेकर जाने, शत्रुओं को पराजित करने और देश को अपने वश में करने में यहोशू ने इस्राएलियों की अगुआई की थी। वह परमेश्वर के मार्गों से हटा नहीं। उसने विश्वासयोग्यता के साथ अपने उत्तरदायित्वों को पूरा किया।

अपनी महानता और पहचान बनाकर भी इन दो महान अगुओं में अहंकार नहीं आया। वे सच्चे और विनम्र बने रहे। अतः परमेश्वर ने उन्हें आशीषों से परिपूर्ण कर दिया।

याद करें : निदान, प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो। (इफिसियों 6:10)

प्रश्न :

1. परमेश्वर ने यहोशू को कौन सा कार्य सौंपा था?
2. समस्त इस्राएलियों के विरुद्ध किस विषय में यहोशू और कालेब एकमत रहे?
3. कालेब के चरित्र की उत्तम विशेषता क्या थी?
4. कालेब को अपने लिए भूमि कहाँ मिली थी?

पाठ-11

न्यायी-1

न्यायियों अध्याय 1-5

सुनहरा पद :

इस्राएलियों में से जितने कनान में की लड़ाइयों में भागी न हुए थे, उन्हें परखने के लिए यहोवा ने इन जातियों को देश में इसलिए रहने दिया, कि पीढ़ी-पीढ़ी के इस्राएलियों में से जो लड़ाई को पहिले न जानते थे, वे सीखें, और जान लें। न्यायियों 3:1-2

यहोशू की दृढ़ अगुआई ने इस्राएलियों को वायदा किए हुए देश में पहुँचाया। बहुतायत के देश कनान में बसी इस नई पीढ़ी ने अपने मूर्तिपूजक पड़ोसियों का अनुकरण करते हुए, आलस्यपूर्ण जीवन शैली अपनाई।

परमेश्वर ने उन्हें कनान के निवासियों को पूर्ण रूप से नाश करने या भगा देने की आज्ञा दी थी। परन्तु उन्होंने आज्ञा नहीं मानी, और जो कनानी उनके बीच में रह गए थे उनके बुरे प्रभाव के कारण परमेश्वर के लोग धर्मत्याग में पड़ गए। न्यायियों की पुस्तक में सात बार इस बात का उल्लेख है कि ''इस्राएलियों ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया।'' तथापि, जब भी उन्होंने पश्चाताप करके परमेश्वर को पुकारा, तब परमेश्वर ने उनके लिए न्यायी ठहराया कि युद्ध में उनकी अगुआई करे, और शांति के समय उन पर राज करे। उन्हें छुड़ानेवाला भी कहा जाता था। (न्यायियों 3:9, 15)। न्यायी लोग प्रभु यीशु का प्रतीक हैं, जो छुड़ानेवाले के रूप में पृथ्वी पर आए। प्रभु हमारे विश्वास की रक्षा करते हैं और शीघ्र ही वे हमारे न्यायी की तरह आने वाले हैं।

1. ओत्नीएल (न्यायियों 3:9)

इस नाम का अर्थ है ''परमेश्वर का सिंह''। पहला न्यायी ओत्नीएल था जिसने अराम के राजा कूशत्रिशातैम से इस्राएलियों को छुड़ाया था।

इस्राएलियों ने परमेश्वर को त्याग दिया और बाल देवताओं और अशेरा देवियों की उपासना करने लगे। इस कारण परमेश्वर ने उन्हें अराम के राजा के अधीन कर दिया। वे आठ वर्ष तक अराम के राजा के अधीन रहे। तब इस्राएलियों ने यहोवा की दोहाई दी। तब परमेश्वर का आत्मा ओत्नीएल में समाया, और वह कूशत्रिशातैम पर जयवन्त हुआ। और ओत्नीएल की मृत्यु तक चालीस वर्ष देश में शांति बनी रही।

2. एहूद : (न्यायियों 3:15)

तब इस्राएलियों ने फिर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया और यहोवा ने उन्हें मोआब के राजा एग्लोन के अधीन कर दिया। अठारह वर्ष तक वे एग्लोन की अधीनता में रहे। फिर इस्राएलियों ने यहोवा की दोहाई दी, तब यहोवा परमेश्वर ने एहूद नाम के एक बिन्यामीनी को उनका छुड़ानेवाला ठहराया। वह बैंहत्था था। एहूद ने हाथ भर लम्बी एक दोधारी तलवार बनवाई। परमेश्वर की ओर से एक संदेश देने के बहाने से वह एग्लोन के पास गया, और अपनी तलवार को उसके पेट में घुसेड़ दी। तब एहूद ने मोआबियों से युद्ध करने और उन्हें अपने अधीन करने के लिए इस्राएलियों की अगुआई की। फिर अस्सी वर्ष तक देश में शांति बनी रही।

3. शमगर : (न्यायियों 3:31)

शमगर ने इस्राएलियों को पलिश्तियों के हाथ से छुड़ाया। एक बार उसने छः सौ पलिश्ती पुरुषों को बैल के पैने से मार डाला।

4. दबोरा : (न्यायियों 4 व 5)

दबोरा का अर्थ है, ''मधुमक्खी''। दबोरा जो नबिया थी, इस्राएलियों का न्याय करती थी। कनान के राजा याबीन और उसकी सेना के सेनापति सीसरा के हाथ से इस्राएलियों को छुड़ाने के लिए परमेश्वर ने दबोरा का उपयोग किया। उसने बाराक को आज्ञा दी कि सीसरा के विरुद्ध युद्ध में इस्राएल का सेनापति बने। उसके ज़ोर देने पर दबोरा उसके साथ गई। कनानी लोग पराजित हो गए और सीसरा याएल नाम

की स्त्री के डेरे में जाकर छिप गया। जब वह सो रहा था तब याएल ने उसे डेरे की खूंटी से मार डाला। न्यायियों का अध्याय एक गीत है। यह माना जाता है कि दबोरा ने इसे लिखा है।

याद करें : परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएँगे। वे उकाबों की नाईं उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे। (यशायाह 40:31)

प्रश्न :

1. न्यायियों की पुस्तक का मुख्य विषय क्या है?
2. इस्राएली क्यों उनके शत्रुओं के अधीन किए जाते थे?
3. इस्राएल का पहला न्यायी कौन था? उसने इस्राएलियों को शत्रु के हाथ से कैसे छुड़ाया?
4. ओत्नीएल नाम का क्या अर्थ है?
5. कनानियों के विरुद्ध युद्ध में दबोरा की क्या भूमिका थी?

पाठ-12

न्यायी-2

न्यायियों 6:11- 8: 35

सुनहरा पद :

तब गिदोन और उसके संग तीन सौ पुरुष, जो थके मांदे थे, तौभी खदेड़ते ही रहे थे, यरदन के तीर आकर पार हो गए। न्यायियों 8:4

5. गिदोन :

कनानियों से छुटकारा मिलने के पश्चात् इस्राएली चालीस वर्षो तक शांति से रहे। फिर एक नई पीढ़ी आई जिन्होंने अपने प्रति परमेश्वर की करुणा और दया की परवाह नहीं की। उन्होंने इस सच्चाई को नहीं पहिचाना कि परमेश्वर उनके दुष्ट कार्यों का न्याय करेंगे। अत: वे अपने बुरे कार्यों में लगे रहे और परमेश्वर को अप्रसन्न करते रहे। तब परमेश्वर का क्रोध उन पर भड़का और परमेश्वर ने उन्हें मिद्यानियों के अधीन कर दिया जिन्होंने सात वर्षो तक उन पर अन्धेर किया।

क. गिदोन की बुलाहट (न्यायियों 6:11-24)

मिद्यानी लोग बड़े दलों में आते और इस्राएलियों के पशुओं और भोजन वस्तुओं को लूटकर ले जाते थे। इस्राएलियों ने यहोवा की दोहाई दी और यहोवा ने उन पर तरस खाया।

योआश का पुत्र गिदोन एक दाखरस के कुंड में गेहूँ इसलिए झाड़ रहा था ताकि उसे मिद्यानियों से छिपा सके। उसको यहोवा के दूत ने दर्शन देकर कहा कि परमेश्वर उसकी अगुआई में इस्राएलियों को छुड़ाएँगे। उसने दूत को बड़ी नम्रता से उत्तर दिया, ''मेरा कुल मनश्शे में सबसे कंगाल है, फिर मैं अपने पिता के घराने में सबसे छोटा हूँ।'' यहोवा ने

उससे कहा ''निश्चय मैं तेरे संग रहूँगा।'' गिदोन ने कहा, ''यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो, तो मुझे इसका कोई चिह्न दिखा कि तू ही मुझ से बातें कर रहा है।'' अत: गिदोन को वह चिह्न दिया गया (न्या. 6:20-22)। तब गिदोन ने वहाँ यहोवा की एक वेदी बनाकर उसका नाम यहोवा शालोम रखा, और यहोवा की आराधना की। परमेश्वर की आराधना करना ही उनको जानना है। यह प्रत्येक विश्वासी का अनुभव होना चाहिए।

परमेश्वर ने गिदोन को आज्ञा दी कि वह बाल की वेदी को गिरा दे और परमेश्वर यहोवा की वेदी बनाए। गिदोन ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया (6:25-27) और परमेश्वर ने उसे एक नाम दिया-यरुब्बाल (जिसका अर्थ है-बाल वाद-विवाद करे।)

ख. गिदोन की अगुआई में किए गए युद्ध :

जब इस्राएल से युद्ध करने के लिए मिद्यानी, अमालेकी और पूरब दिशा के लोग एक साथ आए, तब परमेश्वर का आत्मा गिदोन में समाया। अपनी अगुआई में उसने एक बड़ी सेना बनाई। परन्तु पहले उसने चिह्नों के द्वारा यह निश्चित कर लिया था कि इस कार्य के लिए परमेश्वर ने ही उसे चुना था। (6:38-39)। इन चिह्नों ने परमेश्वर पर उसके विश्वास को और उसके साथ हो लिए लोगों के विश्वास को भी दृढ़ किया।

प्रभु के कार्यों को करने से पूर्व विश्वासी को दो बातों को सुनिश्चित करना आवश्यक है–

1. कि वह परमेश्वर के आत्मा से परिपूर्ण है।

2. कि वह परमेश्वर की इच्छानुसार कार्य कर रहा है। यह उसे सामर्थ देगा कि सभी विरोधों का सामना कर सके।

गिदोन की सेना में पहले बत्तीस हज़ार लोग थे। तब यहोवा ने गिदोन से कहा, ''जो लोग तेरे साथ हैं वे इतने अधिक हैं कि वे यह कहकर मेरे विरुद्ध अपनी बड़ाई मारकर कहेंगे कि हम अपने ही भुजबल के द्वारा बचे हैं। इसलिए उनमें से कुछ लोगों को छाँट लो।'' उनमें से

बाईस हज़ार लौट गए और दस हज़ार रह गए। (7:3)। तब यहोवा ने गिदोन से कहा, ''अब भी लोग अधिक हैं। उन्हें सोते के पास ले चलो और वहाँ मैं उन्हें परखूँगा।'' जिन्होंने मुँह में हाथ लगाकर चपड़-चपड़ करके पानी पीया वे तीन सौ थे। बाकी सब लोगों ने घुटने टेककर पानी पीया। यहोवा ने उन तीन सौ लोगों को चुना।

प्रभु अपने कार्य के लिए उन लोगों को चाहते हैं जो चौकन्ने हैं और नम्र भी। परमेश्वर के सेवाकार्य में गिनती की बहुतायत नहीं, बल्कि पूर्ण रूप से व्यक्तिगत समर्पण की आवश्यकता है।

फिर गिदोन और उसके साथियों ने परमेश्वर के निर्देशों का पालन किया। उसने एक-एक पुरुष के हाथ में एक नरसिंगा और खाली घड़ा दिया, और घड़ों के भीतर एक मशाल थी। उसने सौ-सौ पुरुषों के तीन झुण्ड बनाए और शत्रु की छावनी में पहुँच गए। वहाँ उन्होंने नरसिंगों को फूँका और घड़ों को तोड़कर मशालों को अपने बाएँ हाथ में पकड़ लिया। दाहिने हाथ में नरसिंगा लिए हुए सब चिल्ला उठे-''यहोवा की तलवार और गिदोन की तलवार।'' तब वे छावनी के चारों ओर खड़े रहे, और सेना में खलबली मच गई और वे दौड़ने लगे, और यहोवा ने एक-एक पुरुष की तलवार उसके संगी पर चलवाई। ओरेब और जेब नाम मिद्यान के दो हाकिम पकड़े गए और मार डाले गए।

परमेश्वर ने इस्राएलियों को दिखा दिया कि महत्वहीन वस्तुओं से वह विशाल सेना को हरा सकते हैं।

ग. युद्ध का परिणाम 8:1-35

आठवें अध्याय में इस्राएलियों की गहरी शत्रुता, द्वेष और स्वार्थ का वर्णन है। एप्रैमी पुरुषों ने गिदोन से पूछा कि उन्हें युद्ध के लिए क्यों नहीं बुलवाया गया। सो उन्होंने उससे बड़ा झगड़ा किया। सुक्कोत और पनूएल के निवासियों ने गिदोन और उसके थके हुए साथियों को माँगने पर भी भोजन नहीं दिया। (8:1-17)। तब गिदोन ने जेबह और सल्मुना का पीछा करके उन्हें पकड़ लिया और सारी सेना को भगा दिया। (8:12)।

6. अबीमेलेक : (न्यायियों 9:1-57)

गिदोन के अनेक पुत्रों में से एक था-अबीमेलेक। उसकी माता शकेम की थी। उसने अपने मामाओं और नाना के घराने के साथ मिलकर अपने ही सत्तर भाइयों को मार डाला। (9:15)। परन्तु उसकी शर्मनाक मृत्यु तब हुई जब एक स्त्री ने चक्की के ऊपर का पाट अबीमेलेक के सिर पर डाल दिया, और उसकी खोपड़ी फट गई। तब उसने झट अपने हथियारों के ढ़ोने वाले जवान को बुलाकर कहा, ''अपनी तलवार खींचकर मुझे मार डाल, ऐसा न हो कि लोग मेरे विषय में कहने पाएं कि उसको एक स्त्री ने मार डाला।'' इस प्रकार जो दुष्ट काम अबीमेलेक ने अपने सत्तर भाइयों को घात करके अपने पिता के साथ किया था, उसको परमेश्वर ने उसके सिर पर लौटा दिया।

7. तोला : (न्यायियों 10:1-2)

इस्साकार के गोत्र के तोला नाम पुरुष ने तेईस वर्षों तक इस्राएल का न्याय किया। उस समय देश में शांति बनी रही।

8. याईर : (न्यायियों 10:3)

गिलादी याईर ने बाईस वर्षों तक इस्राएल का न्याय किया। उसके शासन काल में भी देश में शांति बनी रही।

याद करें : परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको। (इफि. 6:11)

प्रश्न :

1. मिद्यानियों पर गिदोन की विजय का वर्णन करें।
2. गिदोन के युद्धों के क्या परिणाम रहे?
3. अबीमेलेक को उसके दुष्ट कार्यों की सज़ा कैसे मिली?

पाठ-13

न्यायी-3

सुनहरा पद :

क्योंकि तेरी सहायता से मैं सेना पर धावा करता हूँ; और अपने परमेश्वर की सहायता से शहरपनाह को लाँघ जाता हूँ। भजन संहिता 18:29

9. यिप्तह : (11:1-12:7)

यिप्तह नामक गिलादी बड़ा शूरवीर था। उसकी माता एक वेश्या थी। उसके पिता गिलाद को अपनी पत्नी से बहुत पुत्र उत्पन्न हुए। जब वे बड़े हो गए, तब उन्होंने यिप्तह को घर से निकाल दिया। वह तोब नामक देश में जाकर रहने लगा। तब उस देश के लुच्चे मनुष्य उसके पास इकट्ठे हो गए और वह उनके संग रहकर उनका अगुआ बन गया।

(क) यिप्तह - इस्राएल की सेना का सेनापति (11:4-11)

कुछ दिनों के बाद अम्मोनी लोग इस्राएल से लड़ने लगे। तब गिलाद के वृद्ध लोग यिप्तह के पास तोब देश को गए। उन्होंने उससे कहा, ''चलकर हमारी तरफ से अम्मोनियों से लड़ो।'' यिप्तह ने गिलाद के लोगों से कहा, ''तुम लोगों ने मुझ से बैर करके मुझे मेरे पिता के घर से निकाल दिया था। अब यदि मैं तुम्हारी तरफ से लडूं, और यहोवा अम्मोनियों को मेरे हाथ में कर दे तो क्या तुम मुझे अपना प्रधान बनाओगे?'' तब यिप्तह गिलाद के वृद्ध लोगों के साथ चला और उन्होंने उसको अपने ऊपर मुखिया और प्रधान ठहराया, और यिप्तह उनकी ओर से अम्मोनियों से लड़ा।

(ख) अम्मोनियों पर यिप्तह की विजय (11:29, 33)

परमेश्वर के आत्मा से परिपूर्ण होकर यिप्तह पहले मिस्पा में आया।

वहाँ पर उसने यहोवा की मन्नत मानी जिससे यह स्पष्ट होता है कि यिप्तह परमेश्वर पर विश्वास करता था और उनकी अगुआई पर आश्रित था।

11:12-27 तक के पदों से हम यह समझ सकते हैं कि इस्राएलियों की जंगल की यात्रा और वायदे के देश तक पहुँचने तक किस प्रकार परमेश्वर ने उनकी अद्‌भुत रीति से देखभाल और अगुआई की, उन सभी बातों की जानकारी यिप्तह को थी। इस कारण वह अम्मोनियों के राजा को चेतावनी देता है। प्रभु यीशु के ''योद्धा'' को वचन का ज्ञान और प्रभु पर अटूट विश्वास होना चाहिए। 11:33 में हम पढ़ते हैं कि यिप्तह ने अम्मोनियों को पूरी तरह से पराजित कर दिया।

(ग) पुत्री की बलि (11:36-40)

यिप्तह ने यह कहकर यहोवा की मन्नत मानी, ''यदि तू निःसन्देह अम्मोनियों को मेरे हाथ में कर दे, तो जब मैं कुशल के साथ लौट आऊँ, तब जो कोई मेरे भेंट के लिए मेरे घर के द्वार से निकले, वह यहोवा का ठहरेगा, और मैं उसे होमबलि करके चढ़ाऊँगा।'' जब यिप्तह अम्मोनियों को हराकर मिस्पा में अपने घर आया, तब उसकी बेटी डफ बजाती और नाचती हुई उससे भेंट करने के लिए निकल आई। यिप्तह ने अपने वचन के अनुसार अपनी पुत्री को परमेश्वर के लिए समर्पित कर दिया।

(घ) एप्रैम से युद्ध (12:1-6)

एप्रैमी पुरुषों ने जिस प्रकार गिदोन का विरोध किया था, उसी प्रकार वे यिप्तह के पास गए और कहने लगे, ''जब तू अम्मोनियों से लड़ने गया तो हमें क्यों नहीं बुलवाया? हम तुझे और तेरा घर जला देंगे।'' गिदोन ने तो अपने समय में समझा कर भेज दिया था, परन्तु यिप्तह ने उनके साथ कठोरता का व्यवहार किया और उन्हें पूरी रीति से नाश कर दिया। यिप्तह ने छः वर्ष तक इस्राएल का न्याय किया।

10. इबसान : (12:8-10)

यिप्तह के पश्चात् बैतलहम का निवासी इबसान इस्राएल का न्याय

करने लगा। उसके तीस पुत्र और तीस पुत्रियाँ थीं। उन सबका विवाह करवाना ही उसके जीवन का मुख्य उद्देश्य रहा। यहाँ हम एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण देखते हैं जिसे परमेश्वर की बातों से ज़्यादा अपने परिवार की चिन्ता थी।

11. एलोन : (12:11)

जबूलूनी एलोन ने इस्राएल का न्याय दस वर्ष तक किया।

12. अब्दोन :

एलोन के पश्चात् पिरातोनी हिल्लेल का पुत्र अब्दोन इस्राएल का न्याय करने लगा। उसने आठ वर्ष तक इस्राएल का न्याय किया।

याद करें : मेरी आँखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूँ। (भजन संहिता 119:18)

प्रश्न :

1. यिप्तह किस प्रकार इस्राएलियों का अगुआ बना?
2. यिप्तह का अम्मोनियों पर विजय के कारण बताओ।
3. यिप्तह ने परमेश्वर के सम्मुख क्या मन्नत मानी थी?
4. यिप्तह और गिदोन के जीवन की तुलना करें।

पाठ–14

न्यायी–4

न्यायियों अध्याय 13–16

सुनहरा पद :

क्या ही धन्य है वह मनुष्य, जो तुझ से शक्ति पाता है, और वे, जिनको सिय्योन की सड़क की सुधि रहती है। भजन संहिता 84:5

13. शिमशोन :

दान के गोत्र का मानोह नामक एक पुरुष था। उसके कोई संतान नहीं थी क्योंकि उसकी पत्नी बांझ थी। एक दिन इस स्त्री को यहोवा के दूत ने दर्शन देकर कहा, ''सुन, अब तू गर्भवती होगी, और तेरे बेटा होगा। इसीलिए अब सावधान रह, कि न तो तू दाखमधु या और किसी भांति की मदिरा पीए, और न कोई अशुद्ध वस्तु खाए। क्योंकि तू गर्भवती होगी और तेरे एक बेटा उत्पन्न होगा। उसके सिर पर छुरा न फिरे, क्योंकि वह जन्म ही से परमेश्वर का नाज़ीर रहेगा, और इस्राएलियों को पलिश्तियों के हाथ छुड़ाएगा।''

शिमशोन का जन्म (न्यायियों 13:1–25)

स्वर्गदूत के वचन के अनुसार उस स्त्री ने एक पुत्र को जन्म दिया और उन्होंने उसका नाम रखा–शिमशोन, जिसका अर्थ है ''छोटा सूर्य''। परमेश्वर की आशीष उसके साथ थी। और यहोवा का आत्मा सोरा और एश्ताओल के बीच महनेदान में उसको उभारने लगा।

शिमशोन के वीरतापूर्ण कार्य :

परमेश्वर के आत्मा ने शिमशोन को अत्यंत बल और सामर्थ्य से परिपूर्ण कर दिया। परमेश्वर से प्राप्त विशेष सामर्थ्य के द्वारा शिमशोन ने निम्नलिखित कार्य किए–

1. निहत्थे शिमशोन ने एक जवान सिंह को फाड़ डाला। (14:6)
2. अश्कलोन जाकर वहाँ उसने तीस पलिश्तियों को मार डाला। (14:19)
3. जब शिमशोन ने अपनी पत्नी के पास जाना चाहा, तब उसके ससुर ने उसे रोका। तब शिमशोन ने जाकर तीन सौ लोमड़ियाँ पकड़ीं, और मशाल लेकर दो-दो लोमड़ियों की पूंछ एक साथ बाँधी, और उनके बीच एक-एक मशाल बाँधी। तब मशालों में आग लगाकर उसने लोमड़ियों को पलिश्तियों के खड़े खेतों में छोड़ दिया। और पूलों के ढेर और खड़े खेत और जैतून की बारियाँ भी जल गईं। (15:4-5)
4. दो नई रस्सियों से बाँधे जाने पर उसने उन्हें ऐसे तोड़ दिया जैसे वह गलकर टूट गए। (15:14)
5. एक गदहे के जबड़े की हड्डी से शिमशोन ने एक हज़ार पलिश्तियों को मार डाला। (15:15)
6. जब शिमशोन को बड़ी प्यास लगी तब उसने यहोवा को पुकारा। तब यहोवा परमेश्वर ने एक ओखली सा गढ़हा कर दिया और उसमें से पानी निकलने लगा। (15:19)
7. जब पलिश्ती उसको मारने के लिए घात लगाए बैठे थे, तब शिमशोन ने नगर के फाटक के दोनों पल्लों और दोनों बाजुओं को पकड़कर बेड़ों समेत उखाड़ लिया, और अपने कंधों पर रखकर उन्हें एक पहाड़ की चोटी पर ले गया। (16:3)
8. उसने दागोन के मंदिर में तीन हज़ार लोगों को मार डाला। (16:29-30)

शिमशोन का पतन :

जब तक शिमशोन ने अपने नाज़ीर होने के नियम का पालन किया, तब तक परमेश्वर की विशेष उपस्थिति उसके साथ रही। परन्तु जब वह पापपूर्ण इच्छाओं के वश में हो गया तब उसका पतन हो गया। अपने माता-पिता की इच्छा के बगैर और परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध उसने

एक पलिश्ती स्त्री से विवाह करके अपनी मन्नत को तोड़ा। (14:3) एक नाज़ीर होने के कारण उसे किसी भी शव को छूना वर्जित था। परन्तु उसने मरे हुए सिंह की लाश में से शहद निकालकर खाया। (14:9; 15:15)। वह परमेश्वर के लिए अलग किया हुआ पवित्र व्यक्ति था, और उसे मदिरा और दाखमधु से दूर रहना था। परन्तु शिमशोन ने उस नियम को भी तोड़ा जब उसने जवानों की रीति के अनुसार उन्हें भोज दिया। (14:10)। उसके बालों में उसकी ताकत का रहस्य छुपा था, जिसे बता देने के कारण उसका शर्मनाक अंत हुआ जब उसकी सामर्थ उससे ले ली गई।

शिमशोन की मृत्यु (16:1-31)

अपनी ताकत का रहस्य उसने दलीला नाम की स्त्री पर प्रकट किया। जब शिमशोन ने अपनी मन्नत के वाचा को तोड़ दिया तब परमेश्वर ने उसे त्याग दिया। पलिश्तियों ने उसे अंधा करके अपमानित किया। उसे पीतल की बेड़ियों से जकड़ दिया और वह कैदखाने में चक्की पीसने लगा। जब पलिश्तियों के सरदार अपने दागोन नामक देवता के लिए बलिदान चढ़ाने लगे तब उन्होंने शिमशोन को बुलवा लिया ताकि उनके लिए तमाशा करे। शिमशोन ने प्रार्थना की, ''हे प्रभु यहोवा, मेरी सुधि ले और मुझे बल दे।'' परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी और उसे बल प्रदान किया। तब शिमशोन ने उन दोनों बीचवाले खम्भों को, जिनसे घर सम्भला हुआ था, पकड़कर एक पर दाहिने हाथ से और दूसरे पर बाएं हाथ से बल लगा दिया। और वह अपना सारा बल लगाकर झुका, तब वह घर सब सरदारों और उसमें सारे लोगों पर गिर पड़ा। इस प्रकार जिनको उसने मरते समय मार डाला, वे उनसे भी अधिक थे, जिन्हें उसने अपने जीवन काल में मार डाला था। तथापि, उनके साथ शिमशोन की भी मृत्यु हो गई। यद्यपि शिमशोन ने स्वयं को अपवित्र किया था, फिर भी परमेश्वर पर उसके अटूट विश्वास के कारण उसका नाम विश्वास के महानायकों की सूची में पाया जाता है। (इब्रा. 11:32)।

याद करें : जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। (गलातियों 5:24)

प्रश्न :

1. नाज़ीर होने की कौन-कौन सी शपथ होती है?
2. शिमशोन की वीरता के कार्य कौन-कौन से थे?
3. शिमशोन के पतन का क्या कारण था?
4. शिमशोन के जीवन से हम क्या सीखते हैं?

पाठ-15

एली

1 शमूएल, अध्याय- 1

सुनहरा पद :

जो बार-बार डाँटे जाने पर भी हठ करता है, वह अचानक नष्ट हो जाएगा, और उसका कोई भी उपाय काम न आएगा। नीतिवचन 29:1

एली :

एली, शीलो में यहोवा के मंदिर का याजक था। उसने चालीस वर्ष इस्राएल का न्याय किया। वह धर्मी, नम्र और परमेश्वर का भय मानने वाला था। परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने के नतीजे को वह अच्छी तरह जानता था।

एली के पुत्र :

यद्यपि एली एक अच्छा पुरुष था, फिर भी एक न्यायी और एक पिता के रूप में असफल रहा। वह अपने घर, परिवार और देश पर सही रीति से शासन न कर सका। एली के पुत्र तो लुच्चे थे और उन्होंने यहोवा को न पहिचाना था। (1 शमूएल 2:12)। उन्होंने परमेश्वर के बलिदान को आदर नहीं दिया। वे अपने पिता की आज्ञा का पालन नहीं करते थे। वे कुमार्गों पर चलते थे, और उनका पाप यहोवा की दृष्टि में बहुत भारी हुआ।

एली का दोष :

परमेश्वर एली के परिवार को आशीषित करके संभालना चाहते थे। तथापि एली के दोनों पुत्र होप्नी और पीनहास परमेश्वर का भय नहीं मानते थे। परमेश्वर की भेंटों और बलिदानों का तिरस्कार और अपमान करने से एली उन्हें रोक न सका। वास्तव में एली परमेश्वर से अधिक

अपने पुत्रों का आदर करता था। (1 शमूएल 2:29)। क्योंकि एली ने उन्हें इस प्रकार के पाप से नहीं रोका, इस कारण परमेश्वर का न्याय पूरे परिवार पर आया।

परिणाम :

परमेश्वर के प्रति निरादर का परिणाम पूरे परिवार को उठाना पड़ा। परमेश्वर ने एक भविष्यद्वक्ता (2:27-35), और छोटे बालक शमूएल का उपयोग किया कि अपनी चेतावनी के संदेश को एली तक पहुँचाए। (3:11-18) एली के परिवार की दुष्टता के कारण उन पर परमेश्वर का न्याय यह था कि उसके परिवार में सब अपनी पूरी जवानी ही में मर मिटेंगे। उसके परिवार में कोई वृद्ध न होगा। एली के परिवार में यदि कोई बचेगा, तो वह उस व्यक्ति के पास जाकर धन या रोटी के लिए भीख माँगेगा, जिसे परमेश्वर याजक ठहराएँगे। इस प्रकार याजक पद प्राप्त लोग कंगाल भिखारी बन जाएँगे।

एली की मृत्यु :

एली के बुढ़ापे में परमेश्वर का न्याय उस पर आया। यहोवा की वाचा का संदूक पलिश्ती लोग ले गए। युद्ध में तीस हज़ार इस्राएली मारे गए जिनमें एली के दो पुत्र भी थे। वाचा के संदूक के छीन लिए जाने का समाचार सुनकर एली अपने कुर्सी से पछाड़ खाकर गिर पड़ा, और मर गया। परमेश्वर का न्याय परिवार पर आ गया था।

याद करें : जो मेरा आदर करें, मैं उनका आदर करूँगा, और जो मुझे तुच्छ जानें, वे छोटे समझे जाएँगे। (1 शमूएल 2:30)

प्रश्न :

1. एली के पुत्र कैसे पुरुष थे?
2. एली के घराने का पाप क्या था?
3. परमेश्वर ने एली के परिवार का न्याय कैसे किया?

पाठ–16

शमूएल

सुनहरा पद :

तब शमूएल ने एक पत्थर लेकर मिस्पा और शेन के बीच में खड़ा किया, और यह कहकर उसका नाम एबेनेजेर रखा, ''यहाँ तक यहोवा ने हमारी सहायता की है।'' 1 शमूएल 7:12

शमूएल की पहिली पुस्तक शमूएल के जीवन चरित्र के विषय में कुछ बातें बताती है। शमूएल इस्राएल का अंतिम न्यायी और पहला भविष्यद्वक्ता था। (प्रेरितों के काम 13:20) मूसा के पश्चात् शमूएल ही सबसे महत्वपूर्ण भविष्यद्वक्ता था। (यिर्मयाह 15:1)।

शमूएल का जन्म और बचपन : (1 शमूएल 1:1–2:11; 3:1–21)

शमूएल के पिता एल्काना और माता हन्ना बहुत भक्त लोग थे। हन्ना के कोई सन्तान नहीं थी। उसने मन में व्याकुल होकर परमेश्वर से प्रार्थना की, ''हे सेनाओं के यहोवा, मेरी सुधि ले, और अपनी दासी को पुत्र दो।'' परमेश्वर ने उसे एक पुत्र दिया, और उन्होंने यह कहकर उसका नाम ''शमूएल'' रखा कि ''मैंने यहोवा से माँगकर इसे पाया है।'' जब हन्ना ने उसका दूध छुड़ाया तब उसे लेकर शीलो में यहोवा के भवन में एली के पास पहुँचा दिया। तब हन्ना ने कहा, ''यहोवा ने मुझे मुँह माँगा वर दिया है। इसीलिए मैं भी उसे यहोवा को अर्पण कर देती हूँ, कि वह अपने जीवन भर यहोवा ही का बना रहे।''

शमूएल की बुलाहट (3:4–12)

बालक शमूएल परमेश्वर की उपस्थिति में बढ़ता गया (3:21)। वह परमेश्वर के भवन में सेवाकार्य और आराधना करता रहा। उसका जीवन परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला था और इस कारण परमेश्वर उसके साथ थे। एक रात जब वह सोने के लिए लेटा, तब यहोवा परमेश्वर ने

उसे पुकारा। शमूएल ने उत्तर दिया, ''कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है।'' (3:10)। परमेश्वर ने शमूएल के द्वारा एली के परिवार को चेतावनी दी। एली और उसके पुत्रों की मृत्यु के पश्चात् शमूएल याजक बना, यद्यापि वह हारून के गोत्र से नहीं था परन्तु वह लेवी था।

शमूएल का सेवाकार्य : (7:1-9:37)

इस्राएलियों ने यह स्वीकार कर लिया था कि शमूएल परमेश्वर का नबी है क्योंकि उसकी सभी भविष्यवाणियाँ पूरी हुईं। (9:6)। शमूएल ने बीस वर्ष इस्राएलियों का न्याय किया। इस्राएलियों के लिए यह जागृति के वर्ष रहे।

निम्नलिखित कारणों से लोगों में जागृति आई :

इस्राएली अपने पूर्ण मन से परमेश्वर की ओर फिरे (7:3) उन्होंने बाल देवताओं और अश्तोरेत देवियों को दूर कर दिया, और केवल यहोवा की ही उपासना करने लगे (7:4)। उन्होंने उपवास किया और अपने पापों को मान कर पश्चाताप किया। (7:6)।

इस जागृति के पश्चात् शत्रु ने फिर से आक्रमण किया। यिप्तह और गिदोन के समान शमूएल वीर योद्धा तो नहीं था, परन्तु उसने बड़े विश्वास से प्रार्थना की (7:9-10) और परमेश्वर ने पलिश्तियों को उनके हाथ में कर दिया।

शमूएल के पुत्र : (8:3, 5)

शमूएल के पुत्र, एली के पुत्रों के समान दुष्ट तो नहीं थे, परन्तु वे परमेश्वर के मार्गों पर नहीं चलते थे। इस विषय में परमेश्वर ने शमूएल से कुछ नहीं कहा। यह इस बात का संकेत हो सकता है कि उसने अपने पुत्रों को धार्मिकता के मार्गों पर चलने के लिए प्रशिक्षित करने का प्रयत्न किया होगा। हेमान गवैया शमूएल का पोता था। (1 इतिहास 6:33)।

शाऊल और दाऊद का राज्याभिषेक

परमेश्वर इस्राएल के सभी गोत्रों की एकता और उन पर अपना

दिव्य राजत्व चाहते थे। शमूएल इस्राएलियों के प्रति परमेश्वर की इस योजना को जानता था। परन्तु उन्होंने परमेश्वर को त्याग दिया और शमूएल से अपने लिए राजा की माँग की। शमूएल ने उसके परिणाम की चेतावनी लोगों को दी। तब परमेश्वर ने शमूएल से कहा, कि उनके पहले राजा के रूप में बिन्यामीनी शाऊल का अभिषेक करे। (10:1-15)।

परन्तु शाऊल ने याजक के कार्य में हस्तक्षेप किया। अत: परमेश्वर ने उसको राजा होने के लिए अयोग्य माना क्योंकि उसने परमेश्वर की आज्ञा को नहीं माना। (13:8-14)। उसके स्थान पर राजा होने के लिए यिशै के पुत्र दाऊद का अभिषेक किया गया (16:11-12)। परन्तु दाऊद का राज्य आरंभ होने से पूर्व ही शमूएल की मृत्यु हो गई। इस्राएली लोगों ने शमूएल के जीवन भर उसका आदर किया।

याद करें : सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से, और कान लगाना मेढ़ों भी चर्बी से उत्तम है। (1 शमूएल 15:22)

प्रश्न :

1. शमूएल के माता-पिता कौन थे? वे कैसे लोग थे?
2. शमूएल के बचपन के विषय में आप क्या जानते हैं?
3. शमूएल ने किन दो राजाओं का अभिषेक किया?
4. पहले राजा के शासनकाल के दौरान ही दूसरे राजा का अभिषेक क्यों किया गया?

पाठ–17

मत्ती रचित सुसमाचार

मत्ती 9:9–13; मरकुस 2:14–17, लूका 5:27–32

सुनहरा पद :

क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है, और प्रभुता उसके काँधे पर होगी, और उसका नाम अद्‌भुत युक्ति करनेवाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शांति का राजकुमार रखा जाएगा। यशायाह 9:6

लेखक :

यह माना जाता है कि पहले सुसमाचार का लेखक प्रेरित मत्ती है। इस बात की पूरी संभावना है कि मत्ती 9:10 में जिस घर का उल्लेख है, वह मत्ती का ही था। यह इंगित करता है कि मत्ती ही इस सुसमाचार का लेखक है। वह लेवी भी कहलाता था। जब वह अपने चुंगी लेने के कार्य में व्यक्त था, तब हमारे प्रभु ने उसे बुलाया। तुरंत ही वह सब कुछ छोड़कर प्रभु के पीछे हो लिया। उसने अपना सब कुछ और स्वयं का समर्पण किया और प्रभु को और उनके शिष्यों को अपने घर ले गया। मत्ती ने अपने साथियों और पड़ोसियों को भी बुलाया ताकि प्रभु को देखने और उनके वचनों को सुनने का अवसर उन्हें भी प्राप्त हो। वे लोग आए और प्रभु के चरणों पर बैठकर उनके वचनों को सुना। मत्ती के जीवन में आए परिवर्तन को देखें। पहले उसके जीवन का उद्देश्य धन कमाना था, परन्तु अब उसके जीवन में प्रभु सबसे अनमोल थे। मत्ती के जीवन के विषय में अधिक लिखा नहीं गया, परन्तु कहा जाता है कि इथियोपिया में वह शहीद हो गया।

नए नियम की सत्ताईस पुस्तकों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है—इतिहास, सिद्धान्त और भविष्यवाणियाँ। पहली पाँच पुस्तकें इतिहास से संबंधित हैं। पत्रियाँ, सिद्धान्तों की शिक्षा देती हैं और प्रकाशितवाक्य

भविष्यवाणी की पुस्तक है। इतिहास की पाँच पुस्तकों को भी हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं। चारों सुसमाचार प्रभु यीशु मसीह के जीवन-चरित्र को बताते हैं और प्रेरितों के कार्य की पुस्तक नए नियम की कलीसिया का इतिहास बताता है। मत्ती रचित सुसमाचार नए नियम की पहिली पुस्तक है जिसका हम अध्ययन करेंगे।

सुसमाचार :

चारों सुसमाचार प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व के चार पहलुओं का वर्णन करते हैं। मत्ती प्रभु को राजा के रूप में चित्रित करता है। वह प्रभु यीशु की वंशावली से आरंभ करता है और यह प्रकट करता है कि प्रभु राजा दाऊद के वंशज हैं (1:1)। पूर्व दिशा से एक तारे का पीछा करते हुए ज्योतिषी आए और जब उन्हें वह बालक मिला, तब उन्होंने उसे सोना भेंट में दिया तो राजत्व का सूचक है, और एक राजा के रूप में उसकी आराधना की। पीलातुस के सामने स्वयं प्रभु की घोषणा (27:11) और क्रूस पर लगा दोषपत्र (27:37) भी प्रभु के राजत्व को प्रदर्शित करता है। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि निवासस्थान के द्वार के पर्दे चार रंगों के थे, जो सुसमाचारों की विशेषता बताते थे, जिनमें राजत्व का नीला रंग मत्ती रचित सुसमाचार का प्रतीक है।

मत्ती रचित सुसमाचार में ''राज्य'' शब्द लगभग 50 बार आता है, जैसे-''स्वर्ग का राज्य'', ''परमेश्वर का राज्य'', मेरे पिता का राज्य'' इत्यादि। अध्याय 5-7 में इस राज्य के घोषणा-पत्र का विस्तृत विवरण है। अध्याय 10 इस राज्य की उद्घोषणा करता है। (10:7)। अध्याय 18 इस राज्य में सहभागिता के बारे में बताता है। अध्याय 24-25 इस राज्य के पूर्ति की घोषणा करता है।

जब याकूब ने यहूदा को आशीष दी थी, तब उसे सिंह (राजा) कहा था। और यह भी कि यहूदा से राजदण्ड न छूटेगा। प्रकाशितवाक्य 5:5 में प्रभु यीशु को ''यहूदा के गोत्र का सिंह'' कहा गया है।

किसके लिए लिखा गया :

प्रभु यीशु के एक शिष्य मत्ती ने यह सुसमाचार विशेषकर यहूदियों

के लिए लिखा था। यहूदी राष्ट्र को मसीहा के आगमन की प्रतीक्षा थी। परन्तु प्रभु यीशु को वे मसीहा के रूप में स्वीकार न कर सके। उन्होंने प्रभु यीशु पर ईश्वर-निंदा का दोष लगाकर उन्हें अन्यजातियों के हाथों में सौंप दिया। मत्ती लगभग साठ बार पुराने नियम के वचनों का उल्लेख करता है और लगभग चालीस बार उन्हें उद्धृत करता है, ताकि वह यहूदियों को विश्वास दिला सके।

"तब जो वचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हुआ।" इस कथन की पुनरावृत्ति अनेक बार इसलिए की गई ताकि मत्ती यहूदियों को दिखा सके कि पुराने नियम में मसीहा के आने के विषय में की गई भविष्यद्वाणियाँ मसीह यीशु में पूरी हुईं। इसके साथ ही हम प्रेरित पतरस के शब्दों की तुलना कर सकते हैं, "परमेश्वर ने उसी यीशु को, जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।" (प्रेरितों 2:36)।

याद करें : यीशु मसीह को स्मरण रख, जो दाऊद के वंश से हुआ, और मरे हुओं में से जी उठा, और यह मेरे सुसमाचार के अनुसार है। (2 तीमुथियुस 2:8)

प्रश्न :

1. आप नए नियम की पुस्तकों का वर्गीकरण किस प्रकार करेंगे।
2. पहले सुसमाचार के लेखक के विषय में आप क्या जानते हैं?
3. मत्ती प्रभु यीशु का शिष्य कैसे बना?
4. शिष्य के रूप में मत्ती की क्या विशेषताएं थीं?
5. अपने सुसमाचार में मत्ती प्रभु यीशु को कैसे चित्रित करता है?
6. प्रभु यीशु के राजत्व से संबंधित, पुराने नियम के कुछ संदर्भ बताएं।
7. हम कैसे जान सकते हैं कि यह सुसमाचार यहूदियों को ध्यान में रखकर लिखा गया था?

पाठ-18

मरकुस रचित सुसमाचार

प्रेरितों 12:12, 25; 15:36-41; मरकुस 14:51-52; 2 तीमु. 4:11; कुलु. 4:10; 1 पतरस 5:13

सुनहरा पद :

क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसीलिए आया कि आप सेवा टहल करे और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे। मरकुस 10:45

लेखक :

मरकुस जिसे यूहन्ना भी कहा जाता है, वह यरूशलेम का निवासी था। उसकी माता का नाम मरियम था। मरकुस यूहन्ना, बरनबास का भतीजा था (कुलु. 4:10)। 1 पतरस 5:13 के अनुसार वह पतरस का आत्मिक पुत्र था। यह सुझाव दिया जाता है कि मरकुस 14:51-52 में जिस जवान व्यक्ति का उल्लेख है वह मरकुस ही है।

जब पौलुस और सीलास अपने पहले सुसमाचार प्रचार की यात्रा के लिए निकले तब यूहन्ना मरकुस आधे रास्ते में उनके साथ हो लिया था। परन्तु कुछ अनजान कारणों से उसने पिरगा पहुँचकर उनका साथ छोड़ दिया। तीमुथियुस को लिखे अपने पत्र में पौलुस मरकुस के विषय में कहते हैं कि ''सेवा में वह मेरे बहुत काम का है।'' (2 तीमु. 4:11)। मरकुस अधिकतर पतरस की सेवकाई में उसके साथ रहा। यह माना जाता है कि वास्तव में मरकुस रचित सुसमाचार, प्रभु यीशु मसीह के बारे में पतरस के दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करता है। अतः इसे अक्सर पतरस का सुसमाचार भी कहते हैं। यह माना जाता है चारों सुसमाचारों में यही सबसे पहले लिखा गया था।

जिस प्रकार मिलापवाले तंबू के खंभे उसके पर्दों की सुंदरता को प्रदर्शित करने में सहायक थे, उसी प्रकार सुसमाचार के लेखकों ने भी

अपनी पहचान बताए बगैर ही प्रभु यीशु के बारे में लिखा। सुसमाचार के लेखकों में मत्ती और यूहन्ना प्रेरित हैं। मरकुस और लूका ने प्रेरितों के साथ यात्रा की और सेवाकार्य किया।

सुसमाचार :

मिलापवाले तंबू के द्वार का लाल पर्दा इस सुसमाचार का प्रतीक है, जो प्रभु यीशु को परमेश्वर के सेवक के रूप में प्रस्तुत करता है। इस सुसमाचार में दृष्टांत और पुराने नियम के उद्धरण बहुत कम हैं। इसमें प्रभु को सेवक के रूप में प्रदर्शित किया गया है, अतः उनका बचपन और वंशावली अप्रासंगिक हैं। इस सुसमाचार का संकेत शब्द है ''तुरन्त''। (1:10, 18, 20)। इसका संकेत पद 10:45 है, जो मसीह को सेवक के रूप में दिखाता है, और जिसका हमारे छुटकारे के लिए बलिदान चढ़ाया गया। (उस बलि पशु की तरह जो खेतों में जुए में जोता गया था, और बलिदान चढ़ाया गया।) इस सुसमाचार में हम प्रभु यीशु को किसी भोज में नहीं देखते, ना ही प्रार्थना करते हुए देखते हैं। परन्तु हम उस प्रभु को देखते हैं जो निरंतर अपने सेवा कार्य में लगे हुए हैं। पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों को लिखा, ''जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था, वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।'' (फिलि. 2:5)। मसीह का स्वभाव कैसा था? इसका उत्तर हम इसके 6-8 पदों में पढ़ते हैं। दास की तरह दीन होने का स्वभाव।

किसके लिए लिखा गया :

यह सुसमाचार अन्यजातियों के लिए लिखा गया था, विशेषकर रोमी लोगों के लिए। उन्हें पुराने नियम की जानकारी नहीं थी। अतः इसमें पुराने नियम से उद्धरण नहीं दिए गए हैं। जहाँ कहीं भी ऐसे शब्दों का प्रयोग हुआ है जो रोमी लोग नहीं समझते, या जहाँ यहूदी रीति रिवाज़ों का उल्लेख हुआ है, उन सभी स्थानों पर लेखक ने उन बातों का विस्तृत वर्णन किया है (3:17; 5:41; 7:3-4; 7:11, 34; 14:12; 14:36; 15:42) इसमें कुछे लैटिन (लतीनी) शब्द भी हैं जिनका उपयोग रोमी करते थे। वे 'शब्दों' से अधिक महत्व 'कार्य' को देते थे। अतः यह

पुस्तक उनके लिए आकर्षक ढंग से लिखी गई है।

इस पुस्तक का आरंभ इन शब्दों से हुआ है-''परमेश्वर का पुत्र, यीशु मसीह''। हमारे जीवनों में भी यह लागू होता है। हमें परमेश्वर के पुत्र/पुत्री बनना होगा। तब ही हम नम्रता के साथ और ''मसीह के स्वभाव'' के साथ सेवाकार्य कर सकेंगे।

याद करें : जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन् अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। (फिलिप्पियों 2:6, 7)

प्रश्न :

1. लेखक के बारे में आप क्या जानते हैं? इस सुसमाचार को लिखने में किसने लेखक की सहायता की?
2. लेखक ने मसीह के चरित्र के किस पहलू को चित्रित किया है?
3. इस सुसमाचार का संकेत पद कौन सा है?
4. यह सुसमाचार किसके लिए लिखा गया? पुष्टि करो।
5. प्रभु यीशु के जन्म, वंशावली और बचपन के विषयों को इस पुस्तक में क्यों नहीं लिखा गया?
6. इस सुसमाचार में हम ''सेवा'' (सेवकाई) के विषय में क्या सीखते हैं?

पाठ–19

लूका रचित सुसमाचार

लूका 1:1–14; कुलु. 4:10–14

सुनहरा पद :

क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है। जिसने अपने आप को सबके छुटकारे के दाम में दे दिया, और उसकी गवाही ठीक समय पर दी गई। 1 तीमुथियुस 2:5–6

लेखक :

तीसरे सुसमाचार और प्रेरितों के कामों की पुस्तक के लेखन का श्रेय अन्तकिया के यूनानी व्यक्ति लूका को प्राप्त है। पौलुस उसे ''प्रिय वैद्य'' भी कहते हैं। (कुलु. 4:14)। जिस पांडित्यपूर्णता के साथ यह पुस्तकें लिखी गई हैं, वह यह प्रकट करता है कि लूका एक विद्वान था। आश्चर्यकर्मों के संबंध में लूका के विशेष अवलोकन इस बात की पुष्टि करते हैं कि वह एक वैद्य था। वह पौलुस का संगी और सहयात्री था। अतः इस पुस्तक को कभी–कभी पौलुस का सुसमाचार भी कहते हैं। पौलुस के सेवाकार्य के दौरान अनेकों ने उसका साथ छोड़ा। परन्तु लूका अंत तक उसके साथ बना रहा। (2 तीमु. 4:11)।

सुसमाचार :

पिछले पाठों में हमने सीखा कि मत्ती प्रभु यीशु को एक राजा के रूप में प्रस्तुत करता है और मरकुस प्रभु को एक सेवक के रूप में प्रस्तुत करता है। लूका प्रभु यीशु मसीह को एक सिद्ध पुरुष के रूप में प्रस्तुत करता है। मिलापवाले तंबू के द्वार का ''बटी हुई सूक्ष्म सनी'' का पर्दा प्रभु यीशु के पापरहित जीवन को दर्शाता है। यही इस सुसमाचार का विषय–वस्तु है। इस में प्रभु यीशु की मानवता की विभिन्न विशेषताएँ प्रस्तुत की गई हैं।

मनुष्यजाति के उद्धार की आशा और प्रभु यीशु के सिद्ध मानवता पर ज़ोर दिया गया है। उद्धार सभी के लिए है। चाहे वह सामरी लोग हों (9:52-56; 10:30-37; 17:11-19) या अन्यजाति (2:32; 3:6, 8; 4:25-27; 7:9; 10:1; 24:47) या यहूदी (1:33; 2:10) या चुंगी लेने वाले और पापी (3:12; 5:27-32; 7:37-50; 19:2-10; 23:43) या फरीसी (7:36; 11:37; 14:1) या कंगाल (1:53; 2:7; 6:20; 7:22) अथवा अमीर (18:2; 23:50)।

लूका इस सत्य पर भी ज़ोर देते हैं कि उद्धारकर्ता प्रभु शरीर और आत्मा दोनों को ही चंगा करते हैं, और उद्धार अनंतकाल के लिए है। अन्य सुसमाचारों की अपेक्षा इसमें ऐतिहासिक विवरण दिए गए हैं। प्रार्थना का विषय भी इसमें महत्वपूर्ण है। इस सुसमाचार में उन प्रार्थनाओं का सर्वाधिक विवरण दिया गया है जो प्रभु यीशु ने कीं। मरियम, इलीशिबा, जकर्याह के स्तुतिगीत और अन्य अनेक घटनाओं का विस्तृत वर्णन केवल लूका ने ही किया है। उड़ाऊ पुत्र का दृष्टांत अध्याय 15 में दिया गया है, जो परमेश्वर के महान प्रेम को दर्शाता है।

प्रभु यीशु के जन्म, जीवन और सेवाकार्य से उनकी सिद्ध मानवता प्रकट होती है।

किसके लिए लिखा गया :

उच्च कोटि का लेखन इस बात का सुझाव देता है कि यह सुसमाचार बुद्धिजीवियों के लिए लिखा गया है। यूनानी ज्ञान की खोज करने वाले लोग थे। उनके साहित्य और दर्शनशास्त्र ऊँचे दर्जे के थे। यह सुसमाचार श्रीमान थियुफिलुस के नाम लिखा गया है। (1:3)। अतः यह सिद्ध होता है कि लूका ने यह विशेषकर यूनानियों के लिए लिखा था। इसके अलावा, इस पुस्तक में लिखी बातों को लूका ने उस समय की ऐतिहासिक घटनाओं के साथ जोड़ा है (उदा. 2:1) यह ध्यान में रखते हुए कि वे लोग इतिहास के अच्छे जानकर थे। यह माना जाता है कि यह सुसमाचार उस दौरान लिखा गया जब पौलुस कैसरिया के कैदखाने में थे।

याद करें : क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका

उद्धार करने आया है। (लूका 19:10)

प्रश्न :

1. सिद्ध करें कि लूका रचित सुसमाचार यूनानियों के लिए लिखा गया था, यहूदियों के लिए नहीं।
2. लूका किन पुस्तकों का लेखक है?
3. उदाहरण दें कि यह पुस्तक मसीह को सिद्ध पुरुष के रूप में प्रस्तुत करती है।
4. वे कौन से तथ्य हैं जो इस सुसमाचार को अन्य तीनों से पृथक करता है?

पाठ-20

यूहन्ना रचित सुसमाचार

यूहन्ना 1:1-18; 1 यूहन्ना 1:1-4

सुनहरा पद :

परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ। यूहन्ना 20:31

पहले तीन सुसमाचारों में बहुत सी बातें एक जैसी ही हैं। अत: उन्हें संक्षिप्त सुसमाचार कहा जाता है। परन्तु यूहन्ना रचित सुसमाचार उनसे अलग है, क्योंकि वह प्रभु यीशु के ईश्वरत्व पर ज़ोर देता है। यूहन्ना ने अनेक उन बातों का वर्णन दिया है, जिनको ''संक्षिप्त'' लेखकों ने छोड़ दिया है।

लेखक :

इस बात का विशेष उल्लेख नहीं है कि यूहन्ना ने यह सुसमाचार लिखा। उसने जिन घटनाओं का वर्णन किया है, उसमें वह स्वयं को एक गवाह के रूप में प्रस्तुत करता है। स्वयं के बारे में वह कहता है ''जिससे प्रभु यीशु प्रेम करता है''। यह भी स्पष्ट है कि लेखक को पुराने नियम और यहूदी त्यौहारों की अच्छी जानकारी थी। अनेक ऐसी बातें हैं जो यह प्रमाणित करती हैं कि यूहन्ना ही इस सुसमाचार का लेखक है। वह याकूब का भाई और जब्दी का पुत्र था। (मत्ती 4:21)। याकूब, पतरस और यूहन्ना प्रभु को बहुत प्रिय थे। उसकी माता सलोमी प्रभु यीशु की माता मरियम की बहिन थी। (मरकुस 15:40, 41)। ऐसा प्रतीत होता है कि उसका परिवार संपन्न था। यूहन्ना पहले यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का शिष्य था। यूहन्ना 1:35-42 में हम पढ़ते हैं कि वह अंद्रियास के साथ प्रभु यीशु के पास गया। यूहन्ना 13:23-25 से हम जान सकते हैं कि यूहन्ना प्रभु का सबसे प्रिय शिष्य था। यूहन्ना रचित

सुसमाचार का विषय-वस्तु प्रेम है, अतः यूहन्ना ''प्रेम का प्रेरित'' भी कहलाता है। सुसमाचार के साथ ही यूहन्ना की पत्रियाँ और ''यूहन्ना का प्रकाशितवाक्य'' के भी लेखक यूहन्ना ही हैं। ये सभी पहली सदी के अंत में लिखे गए थे। यूहन्ना के जीवन के अंतिम दिन इफिसुस में बीते थे। उन दिनों में प्रभु यीशु के ईश्वरत्व के विषय में कलीसियाओं में घुस आई गलत शिक्षाओं के विरुद्ध यूहन्ना को लड़ना पड़ा। पतमुस टापू पर जब वह कैद में था, तब उसे 'प्रकटीकरण'' प्राप्त हुआ। माना जाता है कि अपनी वृद्धावस्था में उसकी स्वाभाविक मृत्यु हुई।

सुसमाचार :

''परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु मसीह'' के विषय में बताने वाला यह सुसमाचार प्रभु के दिव्य स्वभाव को प्रकट करता है। मिलापवाले तंबू के पर्दे का नीला रंग मसीह की दिव्यता को चित्रित करता है। इस सुसमाचार को लिखने का कारण यूहन्ना यह बताता है- ''.....ताकि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।'' (20:31)। प्रभु यीशु के द्वारा किए गए आश्चर्यकर्म यह प्रमाणित करते हैं कि वे परमेश्वर हैं। उन्होंने पानी को दाखरस में परिवर्तित कर दिया (2:1-11) और यह प्रकट किया कि वे पानी में मिठास और गुण पैदा कर सकते हैं। प्रभु यीशु ने राजा के एक कर्मचारी के पुत्र को चंगा किया जो लगभग 20 मील की दूरी पर था, और यह प्रकट किया कि आश्चर्यकर्म करने के लिए दूरी किसी प्रकार उनके लिए बाधा नहीं बन सकती। (4:46-54)। प्रभु ''समय'' के ऊपर प्रभुता करते हैं, यह प्रमाणित हुआ जब उन्होंने 38 वर्षों से बीमारी में पड़े एक रोगी को चंगा किया। (5:1-18)। प्रभु ने पाँच रोटी से पाँच हज़ार लोगों को भोजन खिलाया, जिससे यह प्रमाणित होता है कि वे थोड़ी सी वस्तु को आशीषित करके प्रचुरता ला सकते हैं। (6:1-14)। सृष्टि के ऊपर प्रभु का अधिकार प्रकट हुआ, जब वे पानी पर चले (6:16-21)। प्रभु ने एक जन्म से अंधे को दृष्टिदान देकर यह प्रमाणित किया कि वे जन्म से रोगी व्यक्ति को चंगा करने का अधिकार रखते हैं। (9:1-11)। मृत्यु के ऊपर प्रभु ने अपने अधिकार को प्रमाणित

किया जब उन्होंने कब्र पर लाजर को पुकारा और वह जीवित हो गया।

किसके लिए लिखा गया :

पहले तीन सुसमाचार यहूदियों और अन्यजातियों के लिए लिखा गया था, परन्तु यह सुसमाचार परमेश्वर की कलीसिया के लिए लिखा गया। यूहन्ना चाहते थे कि प्रभु यीशु मसीह के ईश्वरत्व के सिद्धांत से विश्वासी लोग भटक न जाएँ। पहली सदी के अंत तक अनेक झूठे शिक्षकों ने कलीसिया में स्थान प्राप्त कर लिया था। यूहन्ना चाहते थे कि विश्वासीगण ऐसे झूठे सिद्धान्तों का विरोध करें। यह माना जाता है कि उन्होंने यह सुसमाचार इफिसुस में रहकर लिखा। इसकी भाषा सरल है, परन्तु विचार गहरे हैं। ''विश्वास'' और ''प्रेम'' जैसे शब्द अनेक बार आए हैं।

इस सुसमाचार की तुलना निवासस्थान के विभिन्न भागों से की गई है। आरंभ के ग्यारह अध्यायों में प्रभु यीशु सार्वजनिक रूप से सेवाकार्य में लगे हुए हैं, जिसकी तुलना हम निवासस्थान के बाहरी आंगन से कर सकते हैं। बारहवें अध्याय में हम पीतल की वेदी को देखते हैं, और यह इसलिए अर्थपूर्ण है क्योंकि प्रभु यीशु ने चार बार अपनी मृत्यु के विषय में बातें की। तेरहवाँ अध्याय पीतल की हौदी को दर्शाता है, और वहाँ हम प्रभु को अपने शिष्यों के पैर धोते हुए देखते हैं। अध्याय 14:17 में हम प्रभु को परम पवित्र स्थान में अपने पिता के साथ संगति में देखते हैं। अंतिम अध्याय उस छुटकारे को दर्शाता है, जो प्रभु यीशु ने अपना बहुमूल्य लोहू बहाकर हमारे लिए प्राप्त किया।

याद करें : हम यह भी जानते हैं कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उसने हमें समझ दी है कि हम उस सच्चे को पहचानें, और हम उसमें जो सत्य है, अर्थात् उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते हैं। सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है। (1 यूहन्ना 5:20)

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु के ''स्वभाव'' के विषय में चार सुसमाचार क्या प्रकट करते हैं?

2. प्रेरितों के द्वारा लिखे गए सुसमाचार कौन से हैं?
3. यूहन्ना रचित सुसमाचार की क्या विशेषताएँ हैं?
4. इस सुसमाचार को लिखने का उद्देश्य क्या था?
5. यूहन्ना बाइबल की कौन-कौन सी पुस्तकों का लेखक है?
6. यूहन्ना रचित सुसमाचार में बताए गए आश्चर्यकर्मों का कुछ शब्दों में वर्णन करें।

पाठ–21

पहाड़ी उपदेश

मत्ती अध्याय 5, 6, 7; लूका 6:20–49

सुनहरा पद :

भला मनुष्य अपने मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है, और बुरा मनुष्य अपने मन के बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है, क्योंकि जो मन में भरा है, वही उसके मुँह पर आता है। लूका 6:45

विश्व साहित्य में पहाड़ी उपदेश सुप्रसिद्ध है। इसे हम प्रभु यीशु की शिक्षाओं में सर्वश्रेष्ठ कह सकते हैं। धार्मिक मानसिकता रखने वाले अनेक महापुरुषों ने इन शिक्षाओं का आदर किया और उनके अनुसार जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न किया। प्रभु यीशु ने एक पहाड़ पर बैठ कर लोगों को ये शिक्षाएँ दीं, इसी कारण इन्हें ''पहाड़ी उपदेश'' कहते हैं। उस समय के श्रोता, प्रभु यीशु के बारह शिष्य और एक बड़ी भीड़ थी। परमेश्वर के राज्य के नागरिकों के स्वभाव और उत्तरदायित्व ही इन उपदेशों का विषय वस्तु है।

''धन्य'' कौन है :

कौन हैं जो धन्य हैं? वे मसीह यीशु के राज्य के नागरिक हैं पद 5:3–12 इन नागरिकों के आठ प्रकार से ''धन्य'' होने के बारे में बताते हैं। इस संसार के स्वीकृत माप–दंडों के लिए ये एक चुनौती है।

1. जो मन के दीन हैं (5:3) : अपनी आत्मिक भ्रष्टता को मान लेना ही पवित्रता के मार्ग का पहला कदम है। यह मान लेना आवश्यक है कि हमारे अंदर कुछ भी नहीं है, जो स्वभाव से अच्छा है, परन्तु वही अच्छा है जो हम परमेश्वर से प्राप्त करते हैं।

2. जो शोक करते हैं (5:4) : धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं।

यह शोक पाप से पश्चाताप करने के परिणामस्वरूप होता है।

3. जो नम्र हैं (5:5) : अक्सर किसी की नम्रता को उसकी कमज़ोरी माना जाता है। स्वर्ग के नागरिक शक्तिशाली होते हैं परन्तु नम्र होते हैं। सभी परीक्षाओं में वे संयम का पालन करते हैं। धैर्य के साथ कठिनाइयों का सामना करते हैं। ऐसे लोग महान आशीषों का अनुभव करते हैं।

4. जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं (5:6) : यह न्याय का शासन देखने की तीव्र लालसा है। अपने चारों ओर शांति और न्याय देखे बगैर हम संतुष्ट नहीं हो सकते।

5. जो दयावंत हैं (5:7) : यह आवश्यक है कि हम असहाय लोगों पर दया करें। प्रभु यीशु के समय के रोमी शासक बहुत क्रूर थे। दयालु होना मात्र एक रवैया ही नहीं बल्कि हमारी जीवन शैली होनी चाहिए।

6. जिनके मन शुद्ध हैं (5:8) : परमेश्वर का दर्शन प्राप्त करने के लिए हृदय का शुद्ध होना आवश्यक है। शारीरिक शुद्धता पर्याप्त नहीं है। परमेश्वर अपवित्र हृदय में वास नहीं कर सकते। मनुष्य का कोई भी प्रयत्न उसके हृदय को शुद्ध नहीं कर सकता। वचन से हम यह समझ सकते हैं कि केवल मसीह का लोहू है जो हमारे हृदय को पवित्र कर सकता है। तब ही हम परमेश्वर को देख सकते हैं।

7. जो मेल करानेवाले हैं (5:9) : इस संसार में मेल कराने का कार्य बहुत कठिन है। संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.) इस कार्य के लिए प्रयत्न कर रहा है। राष्ट्रों के बीच एकता रखना उनका उद्देश्य है। मसीह यीशु इस संसार में आए ताकि वे परमेश्वर से हमारा मेल करा सकें। प्रभु यीशु शांति का राजकुमार है (यशा. 9:6)। प्रभु के लोगों को शांति भंग करने वाले नहीं, बल्कि शांति स्थापित करने वाले और मेल कराने वाले होना चाहिए।

8. जो धर्म के कारण सताए जाते हैं (5:10, 11) : यह सच

है कि परमेश्वर के लोगों पर सताव आता है। सभी युगों में परमेश्वर लोगों को संसार की कठोरता को सहने की आवश्यकता है। (प्रेरितों. 14:22)।

राज्य के नागरिक कौन हैं?

प्रभु यीशु ने राज्य के नागरिकों की तुलना नमक और ज्योति से की है (5:13-16)। वस्तुओं को सड़ने से बचाने और संरक्षित करने के लिए नमक का उपयोग किया जाता है। परमेश्वर के लोगों का यह उत्तरदायित्व है, कि वे लोगों को नाश होने से बचाने के लिए निरंतर कार्य करें। और जिस प्रकार रोशनी अंधकार को हटा देती है, उसी प्रकार हमें संसार में ज्योति बनना है ताकि लोग मसीह को देख सकें।

राज्य के नैतिक स्तर का भी वर्णन है। प्रभु यीशु ने व्यवस्था का पालन किया। फरीसी और शास्त्री शिक्षकों की शिक्षा से भिन्न रूप में प्रभु ने व्यवस्था की व्याख्या की और महान अधिकार और सामर्थ के साथ उसकी शिक्षा दी। क्योंकि हत्या का कारण क्रोध या घृणा होती है इस कारण प्रभु ने शिक्षा दी कि क्रोध करना हत्या करने के समान होता है और दंडनीय होता है।

वर्तमान समय में विश्वासी लोग व्यवस्था के अधीन नहीं है (प्रेरितों 15:10; गलातियों 5:1)। हम व्यवस्था के श्राम से छुड़ाए गए हैं। (गल. 3:13)। हम रीति-रिवाज़ से भरे मूसा की व्यवस्था के अधीन नहीं हैं बल्कि हम उससे कहीं बेहतर मसीह की व्यवस्था के अधीन हैं। हमें मसीही नैतिक सिद्धान्तों का पालन करना चाहिए। यह हमारे उद्धार के लिए नहीं, बल्कि इसलिए कि हमारा उद्धार हो चुका है, और यह एक परिवर्तित जीवन का परिणाम है।

याद करें : इसलिए चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है। (मत्ती 5:48)

प्रश्न :

1. ''पहाड़ी उपदेश'' का विषय वस्तु क्या है?

2. कौन हैं जो ''धन्य'' हैं?
3. अर्थ बताएँ – ''तुम पृथ्वी के नमक हो।''
4. ''पहाड़ी उपदेश'' का पालन हम कैसे कर सकते हैं?
5. विश्वासियों का व्यवस्था से क्या संबंध है?

पाठ–22

मसीह के नाम व उपाधियाँ–1

यूहन्ना 1:1–5; 1 यूहन्ना 1:1–3; प्रका. 19:13;
यूहन्ना 1:14–18; यूहन्ना 3:16–18

सुनहरा पद :

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा, कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

बाइबल में प्रभु यीशु मसीह के अनेक नाम दिए गए हैं। अनेक नाम और पदवियाँ हैं जिनका स्वयं प्रभु ने दावा किया है। उनमें से दो के बारे में हम इस पाठ में विस्तार से सीखेंगे–''**वचन**'' और ''**एकलौता**''।

1. वचन :

यूनानी शब्द ''लोगोस'' का अनुवाद है ''वचन''। परन्तु लोगोस शब्द का प्रयोग विस्तृत रूप से किया जाता है, और यह बहुत अर्थपूर्ण है। इसका अर्थ है कि किसी विचार अथवा अवधारणा का होना और उसका प्रकटीकरण या व्यक्त किया जाना।

धर्मशास्त्र, परमेश्वर का लिखित वचन है। पुराना नियम परमेश्वर का प्रकटीकरण है जो उन्होंने मूसा और भविष्यद्वक्ताओं को दिया। परमेश्वर का वचन परमेश्वर की सामर्थ को प्रदर्शित करता है। ''उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है, वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिए मैंने उसको भेजा है,उसे वह सफल करेगा।'' (यशा. 55:11)। ''हो जाए'' शब्दों में सृष्टि करने की सामर्थ है, जिसके द्वारा समस्त सृष्टि अस्तित्व में आई। (2 पतरस 3:5) प्रभु यीशु मसीह के देहधारण को ''वचन देहधारी हुआ'' कहते हैं। यूहन्ना इस बात को

स्पष्ट करता है कि अनंत मसीह ने देहधारण किया। ''वचन'' के विषय में कुछ बिंदुओं पर ध्यान दें -

* वचन आरंभ से अस्तित्व में था। अत: वचन अनंत है।

* वचन परमेश्वर पिता के साथ था। इससे हम यह समझते हैं कि ''वचन'' का पृथक व्यक्तित्व है।

* और यह भी, कि ''वचन'' का परमेश्वर के साथ अंतरंग सहभागिता है।

* ''वचन'' परमेश्वर था, और यही आदि में परमेश्वर के साथ था।

* सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ। देखी, अनदेखी सभी वस्तुओं की सृष्टि उसके ''वचन'' के द्वारा हुई। (कुलु. 1:16; इब्रा 1:2)।

2. जीवन :

उस में जीवन था। जीवन मनुष्यों की ज्योति था (यूहन्ना 1:4)। इसका अर्थ है कि प्रभु यीशु मसीह ज्योति का स्रोत हैं और वह ज्योति मनुष्यों के जीवन की तरह कार्य करता है।

इस संबंध में पौलुस का वक्तव्य सुसंगत है- ''उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है'' (कुलु. 2:9)।

3. एकलौता :

नए नियम में परमेश्वर को पिता और प्रभु यीशु मसीह को पुत्र कहा गया है। परमेश्वर (वचन) जो परमेश्वर के साथ था, वह मनुष्यों के साथ वास करने के लिए मनुष्य बना। उसने देहधारण किया और हमारे बीच रहा। जब वह मनुष्य बना तब उसका ईश्वरत्व पूर्ण रूप से उसमें ही रहा। फिलि. 2:7 में हम पढ़ते हैं कि ''वह मनुष्य की समानता में हो गया।'' ''जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया।'' इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रभु ने अपना ईश्वरत्व छोड़ा, बल्कि यह कि मनुष्यों के

बीच में रहने के लिए उन्होंने परमेश्वर की महिमा को छोड़ा। इसका अर्थ यह है कि कुछ समय के लिए उनकी मानवता ने उनकी महिमा को ढाँप दिया था, और जब वे मनुष्य बने तब उनकी महिमा अदृश्य थी।

जैसे पुत्र अपने पिता के गुण और व्यक्तित्व को प्रकट करता है, उसी प्रकार प्रभु यीशु ने अपने पिता के गुण और व्यक्तित्व को प्रकट किया। अतः ''परमेश्वर का पुत्र'' प्रभु यीशु के लिए सटीक नाम है। मसीह, वह व्यक्तित्व हैं जिस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता और मनुष्यत्व एक हो गए। सभी युगों में परमेश्वर ने स्वयं को प्रकट किया। तथापि, जब परमेश्वर ने मनुष्य का स्वरूप अपनाया, तब परमेश्वर ने अनोखा स्तर अपनाया और मनुष्यों के बीच में मनुष्य बन कर रहे। अतः हम समझ सकते हैं कि मसीह यीशु का पुत्रत्व अनोखा है। वह एकलौता पुत्र है। (यूहन्ना 3:16)। ''पुत्र'' शब्द का प्रयोग किया गया है, क्योंकि इस से बेहतर शब्द नहीं है कि पिता परमेश्वर और पुत्र परमेश्वर के बीच के संबंध को समझा जा सके!

याद करें : और वचन देहधारी हुआ, और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा। (यूहन्ना 1:14)

प्रश्न :

1. ''लोगोस'' का क्या अर्थ है?
2. ''वचन'' के बारे में आप क्या समझते हैं?
3. यूहन्ना 1:1-5 में, हम मसीह यीशु के विषय में क्या सीखते हैं?
4. ''मसीह यीशु परमेश्वर का पुत्र है'' इस कथन से आप क्या समझते हैं?
5. प्रभु यीशु ने देहधारण करने पर क्या छोड़ा?
6. प्रभु यीशु के ईश्वरत्व का क्या हुआ जब उन्होंने देहधारण किया?

पाठ–23

मसीह के नाम व उपाधियाँ–2

यूहन्ना 1:4; 6:1–58; 11:25; 14:6

सुनहरा पद :

यीशु ने उससे कहा, ''मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।'' यूहन्ना 14:6

प्रभु यीशु ने अनेक बार ''मैं हूँ'' का दावा किया। उदाहरण के लिए–उन्होंने कहा, ''पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ।'' जब प्रभु ने दावा किया कि वे 'जीवन' हैं, तब उनका तात्पर्य मात्र शारीरिक जीवन से ही नहीं, बल्कि आत्मिक और अनंतकाल का जीवन था।

जीवन : (यूहन्ना 11:25)

जब परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की तब उसे जीवन दिया। (उत्पत्ति 2:7)। परमेश्वर जीवन का स्रोत हैं। प्रभु यीशु ने दावा किया, ''मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ।'' (यूहन्ना 14:6)। ''पिता इसलिए मुझ से प्रेम रखता है कि मैं अपना प्राण देता हूँ। और उसे फिर ले लेने का भी मुझे अधिकार है।'' (यूहन्ना 10:17–18)। प्रभु यीशु ने मृतक को जीवित करने के द्वारा अपने दावे को सिद्ध किया। और यह प्रकट किया कि प्रभु जीवन और मृत्यु पर सामर्थ और अधिकार रखने हैं। मृत्यु और नरक की कुंजियाँ प्रभु यीशु के पास हैं।

प्रभु यीशु मसीह न केवल शारीरिक रूप से मृत व्यक्ति को जीवन दान दे सकते हैं, परन्तु उनको भी जो अपने पापों और अपराधों के कारण आत्मिक रूप से मरे हुए हैं। (इफि. 2:1; यूहन्ना 10:28)। जो प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करते हैं वे लोग मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर लेते हैं। (यूहन्ना 5:24)। जो मसीह पर विश्वास करते हैं, उनका जीवन मसीह में है (कुलु. 3:3)। जो स्वयं

जीवन है और जीवन का स्रोत है वह कैसे मर सकता है? यह असंभव है। परन्तु प्रभु यीशु की मृत्यु के द्वारा उनका मनुष्यत्व सिद्ध हुआ और उनके जी उठने के द्वारा उनका ईश्वरत्व सिद्ध हुआ।

जीवन की रोटी : (यूहन्ना 6:48)

जीवन के अस्तित्व के लिए भोजन अनिवार्य है। प्रभु यीशु ने दावा किया- ''जीवन की रोटी मैं हूँ।'' इसका अर्थ यह है कि प्रभु यीशु के बगैर कोई व्यक्ति आत्मिक जीवन प्राप्त नहीं कर सकता। पाँच रोटी से पाँच हज़ार लोगों को प्रभु ने भोजन खिलाया। यही एक आश्चर्यकर्म है जो चारों सुसमाचारों में दर्ज है। इस आश्चर्यकर्म के कारण अनेक लोग प्रभु के पीछे-पीछे चले। आज भी अनेक लोग भौतिक लाभ के लिए प्रभु के पीछे हो लेते हैं।

प्रभु ने इस अवसर का लाभ उठाकर उन्हें शिक्षा दी कि वे आत्मिक रोटी के लिए भूख रखें। तब प्रभु ने उनसे कहा, ''जीवन की रोटी मैं हूँ।'' प्रभु वह रोटी हैं जो स्वग से उतरकर जगत को जीवन देती है। पुराने नियम का ''मन्ना'' प्रभु यीशु मसीह का प्रतीक है।

कुछ लोग गलत शिक्षा देते हैं कि प्रभु भोज के चिन्ह वास्तव में प्रभु यीशु की देह और लोहू बन जाते हैं। इसे ''तत्वांतरण'' का सिद्धांत (Transubstantiation) कहते हैं।

प्रभु के कथन ''मैं जीवन की रोटी हूँ'' को हमें आत्मिक अर्थ में स्वीकारना चाहिए। जैसे भोजन और जल हमारे भौतिक जीवन के लिए आवश्यक है, उसी प्रकार प्रभु यीशु मसीह हमारे आत्मिक जीवन के लिए आवश्यक हैं। जो प्रभु से अपना आत्मिक भोजन प्राप्त करेंगे, वे पूर्ण रूप से संतुष्ट होंगे। प्रभु यीशु जीवन की रोटी हैं।

याद करें : चोर किसी और काम के लिए नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है। मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएँ और बहुतायत से पाएँ। (यूहन्ना 10:10)

प्रश्न :

1. मैं जीवन हूँ'' अपने इस दावे को प्रभु यीशु ने कैसे सिद्ध किया?
2. ''जीवन की रोटी मैं हूँ'' इस कथन पर टिप्पणी करें।
3. तत्वांतरण का सिद्धान्त क्या है?

पाठ-24

मसीह के नाम व उपाधियाँ-3

यूहन्ना 8:12; 9:15; 14:6; 10:9

सुनहरा पद :

क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे, परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, अतः ज्योति की सन्तान के समान चलो। (क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई और धार्मिकता और सत्य है।) और यह परखो कि प्रभु को क्या भाता है। इफि. 5:8-10

प्रभु यीशु - जगत की ज्योति : (यूहन्ना 8:12; 9:5)

प्रभु यीशु ने कहा, ''जगत की ज्योति मैं हूँ।'' 1 यूहन्ना 1:5 में हम पढ़ते हैं कि ''परमेश्वर ज्योति हैं।'' क्योंकि परमेश्वर ज्योति हैं अत: प्रभु यीशु भी ज्योति हैं। प्रभु यीशु के देहधारण से पहले ही वह सच्ची ज्योति इस संसार में आई जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है। प्रभु यीशु जब इस संसार में आए तब उन्होंने स्पष्ट कहा, ''जगत की ज्योति मैं हूँ।'' इफिसियों 5:9 कहता है, ''क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, और धार्मिकता, और सत्य है।'' प्रभु यीशु में यह हमेशा ही देखा गया। रोशनी सब बातें प्रकट करती है और जहाँ प्रकाश है वहाँ अंधकार रह नहीं सकता। जो लोग प्रभु यीशु के अनुगामी हैं वे प्रकाश में हैं, अंधकार में नहीं। संसार को प्रभु यीशु के प्रकाश की आवश्यकता है। परन्तु पाप इस प्रकाश को संसार में चमकने से रोकता है। प्रभु यीशु ज्योति हैं। जहाँ भी वे प्रवेश करते हैं वहाँ ज्योति आती है। हमारे हृदय, घर और समाज प्रभु की उपस्थिति से ज्योतिर्मय हो जाते हैं। प्रभु जगत की ज्योति हैं।

द्वार : (यूहन्ना 10:9)

एक और दावा जो प्रभु यीशु ने किया - ''द्वार मैं हूँ।'' अनेक लोग अपने अधिकारों का दावा करते हैं। यूहन्ना 9 में हम पढ़ते हैं कि एक

जन्म के अंधे को प्रभु यीशु ने दृष्टिदान दिया था। अपने इसी अधिकार के कारण यहूदियों ने उसे आराधनालय से बाहर निकाल दिया था। प्रभु उन्हें ''चोर और डाकू'' कहते हैं। वे ऐसे लोग हैं जो दूसरों को धोखा देते हैं। प्रभु यीशु ने दावा किया ''द्वार मैं हूँ'' जो प्रभु के द्वारा प्रवेश करेगा उसे उद्धार प्राप्त होगा। वे अनंतकाल के लिए सुरक्षित रहेंगे। वे आत्मिक स्वतंत्रता और भरपूर आत्मिक पोषण प्राप्त करेंगे।

मार्ग, सत्य और जीवन : (यूहन्ना 14:16)

पिछले पाठों में हमने ''मार्ग'' और ''सत्य'' के विषय में कुछ बातें सीखीं।

अनेक लोग परमेश्वर के पास जाना चाहते हैं, परन्तु वहाँ पहुँच नहीं पाते क्योंकि वे वास्तविक द्वार से प्रवेश नहीं करते। वे नहीं समझते कि द्वार सिर्फ एक ही है, और अन्य स्थानों पर जाते हैं और निराश हो जाते हैं। ''जीवन का द्वार'' ही ''जीवन का मार्ग'' का आरंभ है।

द्वार, प्रभु यीशु हैं और मार्ग भी वही हैं।

निवास स्थान के बाहरी आंगन का द्वार उस मार्ग का आरंभ है जो पीतल की वेदी, हौदी, पवित्रस्थान और अति पवित्रस्थान तक जाता है। जो लोग प्रभु यीशु के द्वारा प्रवेश करते हैं उन्हें आगे का मार्ग स्वयं ही मिल जाता है और प्रभु यीशु के बारे में उनका ज्ञान दिन प्रतिदिन बढ़ता जाता है। द्वारा से निवासस्थान में प्रवेश करने वाले की पहुँच पीतल की वेदी, हौदी और पवित्रस्थान तक होती है। पवित्रस्थान में हम भेंट की रोटी की मेज़, सोने का दीवट और धूप की वेदी देखते हैं। भोजन, प्रकाश और सुगंध इस स्थान की विशेषताएँ हैं। पवित्र स्थान में प्रवेश करने वाला व्यक्ति संगति, आत्मिक प्रकाश और आराधना का भागी होता है। मसीह की मृत्यु के द्वारा हमारी पहुँच परम पवित्र स्थान तक है। मसीह यीशु का शरीर जो मंदिर के पर्दे का प्रतीक है, और जो ऊपर से नीचे तक फट गया था, उसके द्वारा हमारी पहुँच परम पवित्र स्थान तक है। वहाँ पर हम मसीह के साथ एक हो जाते हैं और परमेश्वर की महिमा के भागीदार भी हो जाते हैं।

याद करें : पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है। (1 यूहन्ना 1:7)

प्रश्न :

1. ज्योति की क्या विशेषताएँ हैं?
2. हम कैसे सिद्ध कर सकते हैं कि मसीह में अंधकार नहीं था?
3. ज्योति का फल क्या है?
4. ''प्रभु यीशु द्वार है'' - इस कथन से आप क्या समझते हैं?

पाठ-25

मसीह के नाम व उपाधियाँ-4

यूहन्ना 15:1-17; 10:1-18; 1:29-37

सुनहरा पद :

अच्छा चरवाहा मैं हूँ, अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपना प्राण देता है। यूहन्ना 10:11

दाखलता : यूहन्ना 15:1-17

धर्मशास्त्र में अनेक बार इस्राएल की तुलना दाखलता से की गई है। इनका उल्लेख हम भजन संहिता, यशायाह, यिर्मयाह और यहेजकेल में पाते हैं। यद्यपि, परमेश्वर ने उन्हें मिस्र से निकाला और उनकी हर आवश्यकता की पूर्ति की, परन्तु परमेश्वर की दाखलता के रूप में उन में फल नहीं लगे, जिसकी उनसे आशा की गई। परन्तु अध्याय 15 में हम स्पष्ट देखते हैं कि प्रभु यीशु सच्ची दाखलता हैं।

इससे हम कुछ पाठ सीखते हैं :

* प्रभु यीशु सच्ची दाखलता हैं और विश्वासी लोग डालियाँ हैं। फलवंत होने के लिए डालियों का दाखलता से अटूट संबंध होना चाहिए।
* डालियों को पूर्ण रूप से देखभाल और सुरक्षा प्राप्त होगी क्योंकि पिता परमेश्वर किसान हैं।
* फलवंत होने के लिए डालियों का दाखलता से अटूट संबंध होना चाहिए। प्रभु यीशु के बारे में जानना काफी नहीं है, फल लाने के लिए हमें प्रभु में बने रहना है।
* किसान डालियों को छाँटता है। सूखी और फलवंत न होने वाली डालियाँ अन्य डालियों के लिए अवरोध उत्पन्न करती हैं, अतः किसान उन्हें काट देता है। दाखलता जब आसामान्य रूप से बढ़ जाती है, तब उसमें फल नहीं लगते। सांसारिक समृद्धि का परिणाम

फलरहित मसीही जीवन हो सकता है।

* फलवंत होने वाली डालियाँ जब छाँटी जाती हैं, तब और भी फलवंत होती हैं। जब एक विश्‍वासी पूर्ण रूप से प्रभु यीशु के प्रति समर्पित होता है, और जब प्रभु उसमें वास करते हैं, तब वह अत्यंत फलवंत होगा। हमें यह सीखना होगा कि हमारे जीवन में जो कुछ होता है, वह हमारी भलाई के लिए है और उसके परिणामस्वरूप हम और भी फलवंत होंगे। (रोमियों 8:28)।

अच्छा चरवाहा : (यूहन्ना 10:1-18)

चरवाहा भेड़ों की देखभाल करता है और यह उसका कर्तव्य है कि वह उन्हें हरी चराइयों में ले जाए। चरवाहा यह चाहता है कि उसकी भेड़ें झुण्ड में रहें और उनकी बढ़ती हो, और वे जंगली जानवरों का शिकार न बने। इसी उद्देश्य से परमेश्‍वर ने इस्राएलियों को चरवाहे दिए। परन्तु उन्होंने अपनी भेड़ों की रक्षा नहीं की। परिणामस्वरूप वे भटक गए और खो गए। अत: परमेश्‍वर ने वायदा किया कि वे स्वयं भटकी हुई भेड़ों को ढूँढ़ने इस संसार में आएँगे। (यहेजकेल 34:1-25)।

जब प्रभु यीशु ने कहा, ''अच्छा चरवाहा मैं हूँ'', तब उन्होंने यह स्पष्ट किया कि वे उन चरवाहों के समान नहीं हैं जो उनसे पहले आए। उन्होंने वायदा किया कि वे अपनी भेड़ों के लिए वह कार्य करेंगे जो किसी और चरवाहे ने नहीं किया।

इस कथन से हम कुछ बातें सीखते हैं :-

* प्रभु यीशु वह चरवाहा है जो द्वार से भेड़शाला में प्रवेश करता है। अर्थात् वह अधिकार के साथ परमेश्‍वर के पास से आए ताकि उनकी इच्छा पूरी करें।
* उन्होंने दावा किया कि वे अपनी भेड़ों को हरी चराइयों में ले जा सकते हैं और उनकी आवश्यकतानुसार उन्हें आत्मिक भोजन से तृप्त कर सकते हैं। (भजन 23)
* प्रभु यीशु ने कहा कि वह अच्छा चरवाहा हैं, जो अपनी भेड़ों के

लिए अपने प्राण देने के लिए आया है, ताकि उन्हें शत्रु शैतान से छुड़ा सके। प्रभु ने यह भी कहा कि भेड़ें बहुतायत का जीवन प्राप्त करेंगी। प्रभु यीशु ने दावा किया कि वे यहूदियों और अन्यजातियों के लिए चरवाहा हैं।

भजन 22 में हम उस अच्छे चरवाहे के विषय में पढ़ते हैं, जो भेड़ों के लिए अपना प्राण देता है। और वह महान चरवाहा है, क्योंकि वह मृतकों में से जी उठे। (इब्रा. 13:20)। प्रभु प्रधान रखवाला भी हैं (1 पतरस 5:4) जो विश्वस्त चरवाहों को प्रतिफल देने के लिए वापस आएँगे। यही भजन 24 का विषय है।

परमेश्वर का मेम्ना (यूहन्ना 1:29-37)

सदियों तक यहूदियों को परमेश्वर की ओर से कोई भविष्यद्वक्ता या प्रकटीकरण प्राप्त नहीं हुआ। फिर यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जंगल में प्रकट हुआ और उसने मन फिराव का प्रचार किया। उसके चारों तरफ बड़ी भीड़ लग गई। अगुओं ने संदेह किया कि क्या यही तो मसीहा नहीं जिसके आने का वादा किया गया था। याजक और लेवीयों ने उसके पास आकर इस विषय में पूछा। यूहन्ना ने उन्हें उत्तर दिया कि वह न मसीहा है, न एलिय्याह है, और न ही कोई भविष्यद्वक्ता है। परन्तु वे परेशान हो गए जब उन्होंने यह सुना कि मसीहा उनके ही बीच में है परन्तु वे उसे नहीं पहिचानते। अगले दिन प्रभु यीशु को अपनी ओर आते देखकर यूहन्ना ने ऊँचे शब्द से कहा, ''देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है।''

नए नियम के मूल लेख में मात्र चार स्थानों पर ''मेम्ना'' शब्द का प्रयोग हुआ है। इस शब्द का अर्थ है- बलि चढ़ाया जाने वाला मेम्ना। प्रत्येक वर्ष प्रायश्चित के दिन दो बकरों को समस्त इस्राएली प्रजा के पापों के लिए अलग किया जाता था। उनमें से एक को बलि चढ़ाया जाना था और दूसरे को जंगल में छोड़ दिया जाता था। (लैव्य. 16)

यूहन्ना इन दोनों मेम्नों में प्रभु यीशु की झलक देखता है। प्रभु यीशु वह मेम्ना है, जो मनुष्य जाति के पापों के प्रायश्चित के लिए मारा गया,

और वह भी, जो जगत का पाप उठा ले गया।

प्रत्येक वर्ष दोहराए जाने वाले बलिदान पापों का अस्थायी समाधान लाते थे। परन्तु मसीह का बलिदान स्थायी समाधान लाया। अब और बलिदानों की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मसीह परमेश्वर का मेम्ना है। सदा के लिए एक बार चढ़ाए गए मसीह के बलिदान को स्वीकार करते हुए हमें परमेश्वर के निकट आना चाहिए। स्वर्गीय आराधना का केन्द्र मसीह है, परमेश्वर का वह मेम्ना जो मारा गया। (प्रका. 5)

याद करें : वे यह नया गीत गाने लगे, ''तू इस पुस्तक के लेने, और इसकी मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तू ने वध होकर अपने लहू से हर एक कुल और भाषा और लोग और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है।'' (प्रका. 5:9)

प्रश्न :

1. किसान दाखलता से क्या आशा करता है?
2. दाख की बारी की देखभाल कैसे की जानी चाहिए?
3. दाखलता के दृष्टांत से हम क्या पाठ सीखते हैं?
4. भेड़शाला किस बात को चित्रित करता है?
5. प्रायश्चित के दिन की तुलना प्रभु यीशु के क्रूस की मृत्यु से कीजिए।

पाठ–26

भविष्यद्वक्ताओं की गवाही

सुनहरा पद :

तब उस ने उन से कहा, ''हे निर्बुद्धियों, और भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों पर विश्वास करने में मन्दमतियों! क्या अवश्य न था कि मसीह ये दु:ख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करें?'' तब उसने मूसा से और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरम्भ करके सारे पवित्रशास्त्र में से अपने विषय में लिखी बातों का अर्थ, उन्हें समझा दिया।

भविष्यद्वक्ताओं ने प्रभु यीशु के जन्म, जीवन, सेवाकार्य, मृत्यु और पुनरुत्थान के विषय में बहुत पहले ही भविष्यवाणी की थी। इन भविष्यवाणियों के अनुसार ही सब बातें पूरी हुईं।

भविष्यद्वाणी	**पुराने नियम का संदर्भ**	**पूरा होना**
मसीह का जन्म स्थान (बैतलहम)	मीका 5:2	मत्ती 2:1
कुंवारी से जन्म	यशा. 7:14	लूका 1:27
ज्योतिषियों का आगमन	यशा: 60:3, 4	मत्ती 2:2, 11
मिस्र की ओर यात्रा और वापसी	होशे 11:1	मत्ती 2:14–15
नवजात शिशुओं का मारा जाना	यिर्म. 31:15	मत्ती 2:16–18
मंदिर की सफाई	भजन 69:9	मत्ती 21:12–13
यरूशलेम में विजय प्रवेश (गदहे पर)	जकर्याह 9:9	मत्ती 21:4–15
मित्र के द्वारा धोखा दिया जाना	भजन 41:9	मत्ती 26:48, 50
प्रभु यीशु के पकड़े जाने पर शिष्यों का भाग जाना	जकर्याह 13:7	मरकुस 14:50

क्रूस पर चढ़ाया जाना : हाथ-पाँव में कीलों का ठोका जाना	भजन 22:16	लूका 23:33
क्रूस पर प्रभु का प्यासा होना और सिरका दिया जाना	भजन 69:21	यूहन्ना 19:29, 30
प्रभु के वस्त्रों पर चिट्ठी डाला जाना	भजन 22:18	मत्ती 27:35
प्रभु की हड्डी नहीं टूटेगी	भजन 34:20	यूहन्ना 19:32, 33

इन भविष्यवाणियों के विषय में हम कुछ बातों पर ध्यान देंगे। ये भविष्यवाणियाँ अपने पूरे होने के सदियों पहले की गई थीं। संयोग होने की संभावना का प्रायोगिक रूप से प्रश्न ही नहीं उठता। यह बाइबल धर्मशास्त्र के दिव्य उद्गम को बताता है। प्रभु यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने की भविष्यवाणी वास्तविक घटना से 1000 वर्ष पूर्व की गई थी। जबकि उस समय यहूदी लोगों में मृत्यु-दंड का तरीका पत्थरवाह करना होता था। क्रूस पर चढ़ाने का तरीका ई.पू. 63 में आरंभ हुआ जब रोमी लोगों ने पलिश्तीन को अपने अधीन कर लिया। दानिय्येल की भविष्यवाणियों में हम मसीह यीशु के इस संसार में रहने के समय को देखते हैं। यह भी कहा गया कि ''मसीह'' ''काट डाला'' जाएगा।

मनुष्य जाति के इतिहास में सबसे महान घटना यह है कि मनुष्यजाति को बचाने के लिए प्रभु यीशु संसार में आए। किसी भी उच्च पदाधिकारी के आगमन की पूर्व सूचना दी जाती है। उसके आने का समय, स्थान, और कार्य आदि की भी घोषणा की जाती है। प्रभु यीशु मसीह के आने से 1000 वर्ष पूर्व ये पूर्व सूचनाएँ दी गईं।

प्रभु यीशु के द्वितीय आगमन के विषय में भी स्पष्ट भविष्यवाणियाँ की गई हैं। प्रभु के प्रथम आगमन की हर एक भविष्यवाणी पूरी हुई। इसी कारण हम प्रभु के द्वितीय आगमन के बारे में निश्चित हो सकते हैं।

याद करें : हमारे पास जो भविष्यद्वक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा। तुम यह अच्छा करते हो, जो यह समझकर उस पर

ध्यान करते हो कि वह एक दीया है, जो अन्धियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे। (1 पतरस 1:19)

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु के जन्म और शैशावस्था की कौन सी भविष्यवाणियाँ पूरी हुईं?
2. वह तीन भविष्यवाणियाँ बताएँ जो क्रूस पर पूरी हुईं?
3. हम प्रभु के द्वितीय आगमन के बारे में निश्चित कैसे हो सकते हैं?

पाठ-27

मसीह के विषय में गवाही

मत्ती 3:16; मरकुस 1:9-11; लूका 1:21, 22;
यूहन्ना 12:28, 29; मत्ती 17:1-8; मरकुस 9:2-8; लूका 9:28-36

सुनहरा पद :

और यीशु बुद्धि और डील-डौल में, और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया। लूका 2:52

हमारे प्रभु को एक महान कार्य करने के लिए स्वर्ग से भेजा गया था। अत: परमेश्वर ने (यूहन्ना 18:8), व्यवस्था ने (यूहन्ना 8:17, 18), भविष्यद्वक्ताओं ने (प्रेरितों. 13:27) और स्वयं प्रभु के कार्यों ने गवाही दी कि वह परमेश्वर की ओर से आए थे। इसके अतिरिक्त, स्वर्गदूतों, मनुष्यों और शैतान ने भी गवाही दी।

क. स्वर्ग से गवाही : (मत्ती 3:17)

प्रभु यीशु का बपतिस्मा होने के तुरंत बाद ही प्रभु परमेश्वर ने प्रभु यीशु की गवाही दी-

1. ''यह मेरा प्रिय पुत्र है'' प्रभु यीशु परमेश्वर का पुत्र है। दाख की बारी का वारिस, जो फल प्राप्त करने गया था (मत्ती 21:33-39)। परमेश्वर ने पुत्र को ठहराया कि समस्त संसार पर राज्य करे (भजन 2:8) और एकलौता पुत्र जो सब विश्वास करने वालों के उद्धार के लिए भेजा गया (यूहन्ना 3:16)।
2. ''जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ''। यह प्रभु के जीवन के तीस वर्षों की गवाही है। मसीह का जीवन हमेशा ही परमेश्वर के अनुग्रह में रहा (लूका 2:52)। हमें परमेश्वर की दृष्टि में अनुग्रह प्राप्त करने की आवश्यकता है।

ख. रूपान्तरण के पर्वत पर : (मत्ती 17:5)

रूपान्तरण के पर्वत पर परमेश्वर ने अपनी गवाही देते हुए कहा, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूँ, इस की सुनो।''

ग. यरूशलेम से : (यूहन्ना 12:28, 29)

प्रभु यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने का समय निकट था तब प्रभु ने प्रार्थना की ''पिता, अपने नाम की महिमा कर''। तुरन्त ही उत्तर आया, ''मैं ने उसकी महिमा की है, और फिर करूँगा''। प्रभु यीशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर की महिमा होने वाली थी।

याद करें : इससे सन्देह नहीं कि भक्ति का भेद गम्भीर है, अर्थात्, वह जो शरीर में प्रगट हुआ, आत्मा में धर्मी ठहरा, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया, अन्यजातियों में उसका प्रचार हुआ, जगत में उस पर विश्वास किया गया, और महिमा में ऊपर उठाया गया। (1 तीमुथियुस 3:16)

प्रश्न :

1. हमारे प्रभु यीशु के बपतिस्मा लेने के समय उनके विषय में परमेश्वर की क्या गवाही थी?
2. रूपान्तरण के पर्वत पर किन्हें गवाही दी गई?
3. यरूशलेम में, मसीह यीशु के विषय में परमेश्वर की क्या गवाही थी?

पाठ–28

मनुष्यों की गवाही

सुनहरा पद :

तुम जानते हो कि वह इसलिए प्रगट हुआ कि पापों को हर ले जाए, और उसके स्वभाव में पाप नहीं। 1 यूहन्ना 3:5.

न तो उसने पाप किया, और न उसके मुँह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दु:ख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था। 1 पतरस 2:22, 23

1. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला :

प्रायश्चित के दिन चढ़ाए जाने वाला बलिदान उस प्रायश्चित की प्रतिछाया है जो प्रभु यीशु ने क्रूस पर हमारे लिए प्राप्त किया। दो बकरे उस प्रायश्चित के दोहरे पहलुओं को दर्शाता है (लैव्य. 16)। एक बकरा बलि चढ़ाया जाता था और दूसरा जंगल में छोड़ दिया जाता था। पहला बकरा हमारे लिए प्रभु की मृत्यु को दर्शाता है, और दूसरा यह दिखाता है कि किस प्रकार प्रभु हमारे पापों को उठा ले गए। इस प्रकार हमारे पाप फिर कभी स्मरण न किए जाएँगे। प्रभु यीशु की ओर देखकर यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने कहा, ''देखो, यह **परमेश्वर का मेम्ना** है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है।'' उसने पुराने नियम के बलिदान की प्रतिछाया के रूप में प्रभु यीशु का परिचय भीड़ से करवाया।

2. शमौन की गवाही : (लूका 2:25–35)

मसीह यीशु के जन्म के समय यरूशलेम में शमौन नाम का एक पुरुष रहता था। वह एक धर्मी और भक्त वृद्ध था, और वह इस्राएल की शांति की बाट जोह रहा था। पवित्र आत्मा के द्वारा उस पर प्रगट हुआ था कि जब तक वह प्रभु के मसीह को देख न लेगा, तब तक मृत्यु

को न देखेगा। कुछ लोग मंदिर के आसपास रहते थे। और उनकी भी यही उम्मीद थी। (लूका 2:38)

जब प्रभु यीशु के माता-पिता उन्हें चालीसवें दिन मंदिर में लाए, तब पवित्र आत्मा की अगुआई से शमौन मंदिर में आया और प्रभु यीशु को अपनी गोद में लिया और परमेश्वर का धन्यवाद करके कहा, ''मेरी आँखों ने तेरे उद्धार को देख लिया है, जिसे तू ने सब देश के लोगों के सामने तैयार किया है, कि वह अन्यजातियों को प्रकाश देने के लिए ज्योति, और तेरे निज लोग इस्राएल की महिमा हो।''

3. सामरी स्त्री का कथन :

यहूदी लोग सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते थे। (यूहन्ना 4:1-26)। वह एक पापिनी स्त्री थी, फिर भी प्रभु यीशु ने ''जीवन का जल'' और ''मसीहा'' के रूप में स्वयं को उस पर प्रकट किया। (यूहन्ना 4:26) उस स्त्री ने उन बातों पर विश्वास किया और दौड़कर नगर में गई ताकि लोगों को बताए कि उसे मसीहा मिल गया। उसकी गवाही सुनकर अनेक सामरी प्रभु यीशु से मिलने आए।

4. सूबेदार : (लूका 7:2-10)

रोमी सेना में एक सूबेदार सौ सिपाहियों पर कप्तान नियुक्त होता था। यद्यपि वह एक अन्यजाति था, परन्तु वह विश्वास करता था कि प्रभु यीशु मसीह रोगों और मृत्यु पर अधिकार रखते हैं। उसका वह सेवक मरने पर था, जिससे वह बहुत प्रेम करता था। इस सूबेदार ने प्रभु से कहा, कि प्रभु के वचन से ही उसका सेवक चंगा हो सकता है। इस प्रकार उसने गवाही दी कि प्रभु यीशु सर्वसामर्थी हैं।

5. पिलातुस : (यूहन्ना 18:38, 19:4, 6)

पिलातुस एक रोमी हाकिम था, उसने प्रभु यीशु की जाँच-पड़ताल की और प्रभु को निर्दोष पाया। परन्तु वह कायर था इसलिए लोगों के दबाव मे आकर उसने प्रभु को क्रूस पर चढ़ाने का आदेश दिया। परन्तु उसने तीन बार इस बात की पुष्टि की, कि प्रभु यीशु निर्दोष हैं।

6. पिलातुस की पत्नी : (मत्ती 27:19)

यहूदियों प्रभु यीशु पर परमेश्वर की निंदा करने का दोष लगाया। और वे चिल्लाए कि उसे क्रूस पर चढ़ाया जाए। पिलातुस की पत्नी ने एक स्वप्न देखा और उसे यह कहला भेजा, ''तू उस धर्मी के मामले में हाथ न डालना।''

7. क्रूस के पास खड़ा सूबेदार :

प्रभु यीशु को क्रूस पर चढ़ाने का उत्तरदायित्व उसे मिला था, और वह प्रभु को छः या सात घंटों से देख रहा था। प्रभु की मृत्यु को देखकर वह बोला, ''सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था।'' (मत्ती 27:54; मरकुस 15:39; लूका 23:47)।

8. मन फिराने वाला कुकर्मी :

क्रूस पर लटकते हुए उसने प्रभु यीशु पर विश्वास किया। कुछ समय तक दूसरे कुकर्मी के साथ मिलकर उसने भी प्रभु की निन्दा की। परन्तु शीघ्र ही वह समझ गया कि प्रभु यीशु मसीहा भी हैं और राजा भी। उसने कहा, ''हे यीशु, जब तू अपने राज्य मे आए, तो मेरी सुधि लेना।'' (लूका 23:42)।

9. पतरस की गवाही : (मत्ती 16:13-20)

कैसरिया फिलिप्पी में प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों से पूछा, ''लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?'' उन्होंने कहा, ''कुछ तो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं, और कुछ एलिय्याह, और कुछ यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं।'' उसने उनसे पूछा, ''परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?'' शमौन तुम मुझे क्या कहते हो?'' शमौन पतरस ने उत्तर दिया, ''तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।'' यह हमारा भी उत्तरदायित्व है कि हम संसार के सामने यह गवाही दें कि यीशु ही प्रभु है। वही मसीहा, उद्धारकर्ता, और राजा है।

याद करें : जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ। (2 कुरिन्थियों 5:21)

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु के विषय में पिलातुस की क्या गवाही थी?
2. पिलातुस की पत्नी ने उसे क्या संदेश भेजा?
3. सूबेदार ने क्यों कहा ''सचमुच यह मनुष्य, परमेश्वर का पुत्र था।''
4. प्रभु के विषय में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने क्या कहा?

पाठ-29

स्वर्गदूतों की गवाही

सुनहरा पद :

वह यीशु को दूर ही से देखकर दौड़ा, और उसे प्रणाम किया और ऊँचे शब्द से चिल्लाकर कहा, ''हे परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र, मुझे तुझ से क्या काम? मैं तुझे परमेश्वर की शपथ देता हूँ कि मुझे पीड़ा न दे।'' मरकुस 5:6, 7.

मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु जो मेरे बाद आने वाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है, मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। मत्ती 3:11

1. शैतान की गवाही :

शैतान ने गवाही दी कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। (मत्ती 8:29)। यह रुचिकर बात है कि शैतान ने, जो झूठा है और झूठ का पिता है, उसने प्रभु यीशु के बारे में सत्य कहा (यूहन्ना 8:44)।

शैतान मनुष्यों से कहीं अधिक परमेश्वर की बातों को जानता है। उसने स्वीकार किया कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। इसी कारण उसने प्रभु यीशु के जन्म होने पर उसे मार डालना चाहा। (मत्ती 2:16)। जब प्रभु ने अपनी सार्वजनिक सेवा आरंभ की तब भी शैतान ने प्रभु को मारने का प्रयत्न किया। उसने प्रभु से कहा, ''यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे, क्योंकि लिखा है : 'वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा, और वे तुझे हाथों-हाथ उठा लेंगे; कहीं ऐसा न हो कि तेरे पाँवों में पत्थर से ठेस लगे।'' वास्तव में शैतान प्रभु यीशु के पुत्रत्व के विषय में उनके मन में संदेह उत्पन्न कर रहे थे। परन्तु वह सफल न हो सका। उसने यहूदी अगुओं को भड़काया कि वे

प्रभु यीशु को मार डालें। (यूहन्ना 11:47, 53)। शैतान बहुत चालाक है। वह बहकाने वाला है। हमें उसके चालों से सावधान रहना चाहिए। (2 कुरि. 2:11)।

प्रभु यीशु कौन हैं? परमेश्वर का पुत्र, मनुष्य का पुत्र, दाऊद की संतान, अब्राहम का वंश (गल. 3:16), स्त्री का वंश (उत्पत्ति 3:15)। प्रभु यीशु मसीह के अनेक नाम हैं। वह अनंत परमेश्वर का अनंत पुत्र है। प्रभु यीशु के द्वारा हम परमेश्वर की संतान हैं। (इब्रा. 2:10) और मसीह के साथ संगी वारिस भी। (रोमियों 8:17)।

2. स्वर्गदूतों की गवाही :

जिस दिन प्रभु यीशु का जन्म हुआ तब चरवाहे रात को मैदान में अपने झुण्ड का पहरा दे रहे थे। और प्रभु का एक दूत उनके पास आया और उनसे कहा, ''मत डरो, क्योंकि देखो, मैं तुम्हें एक बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूँ, जो सब लोगों के लिए होगा कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है।''

याद करें : वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएँ, क्या प्रधानताएँ, क्या अधिकार, सारी वस्तुएँ उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं। (कुलु. 1:15,16)

प्रश्न :

1. शैतान ने प्रभु यीशु के विषय में क्या गवाही दी?
2. नवजात शिशु के विषय में स्वर्गदूत ने क्या कहा?

पाठ-30

चित्रांकन

सुनहरा पद :

इन अंतिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया, और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है। इब्रा. 1:2

उत्पत्ति : उत्पत्ति की पुस्तक में मसीह को **स्त्री का वंश** कहा गया है। (3:15)। यह इस बात पर ज़ोर देता है कि प्रभु यीशु का जन्म कुँवारी से हुआ। इसके अलावा हाबिल का बलिदान, नूह का जहाज़, इसहाक का बलि चढ़ाया जाना, यूसुफ का जीवन इत्यादि प्रभु यीशु का प्रतीक हैं।

निर्गमन : निर्गमन का विषय-वस्तु 'फसह' है। यह फसह के मेम्ने के मारे जाने के विषय में हैं। (निर्गमन 12:5) यह मेम्ने का लोहू था, जिसके द्वारा उन्हें न्याय से छुटकारा प्राप्त होता था। प्रभु यीशु हमारा फसह का मेम्ना है (1 कुरि. 5:7)। इस पुस्तक में प्रभु यीशु की अन्य तस्वीरें भी हैं जैसे-मन्ना, चट्टान और निवासस्थान इत्यादि। (निर्ग. 17:1-6)।

लैव्यव्यवस्था : इस पुस्तक के पहले सात अध्याय पाँच बलिदानों के विषय में बताते हैं। सभी बलिदान मसीह यीशु की मृत्यु के विभिन्न पहलुओं की तस्वीर है।

गिनती : वह आत्मिक चट्टान जो उनके साथ-साथ चलती थी, वह मसीह था। (1 कुरि. 10:4)। एक अन्य महत्वपूर्ण प्रतीक है-पीतल का सर्प (गिनती 21:4-9, यूहन्ना 3:14)।

व्यवस्थाविवरण : इस पुस्तक में प्रभु यीशु को परमेश्वर के द्वारा भेजे भविष्यद्वक्ता के रूप में प्रस्तुत करता है। पुरानी वाचा मूसा के द्वारा

प्राप्त हुई और प्रभु यीशु नई वाचा का मध्यस्थ है। (इब्रा. 12:24)

यहोशू : प्रभु यीशु, परमेश्वर की सेना के प्रधान के रूप में यहोशू के सामने प्रकट हुए। कनान के युद्ध में यहोवा ने उनकी अगुआई की। यहोशू स्वयं भी मसीह की तस्वीर है।

न्यायियों : यहोशू के पश्चात् इस्राएल पर शासन करने के लिए परमेश्वर ने न्यायी नियुक्त किए। शाऊल के राजा बनने तक न्यायी लोग राज्य करते रहे। हम प्रभु यीशु को ''परमेश्वर के दूत'' के रूप में देखते हैं। (2:1; 6:20; 13:15-22)। अत: सभी परिस्थितियों में प्रभु ही थे जो वास्तव में इस्राएलियों का छुड़ानेवाला ठहरे। (2:16)।

रूथ : रूथ की पुस्तक में प्रभु यीशु छुड़ानेवाला-कुटुम्बी है। (रूथ 2:1; 3:9-10; 4:10)।

1 शमूएल - 2 इतिहास : ये पुस्तकें एक सिद्ध राजा की ओर इशारा करते हैं जो दाऊद का पुत्र, प्रभु यीशु मसीह हैं। साथ ही उस सिद्ध राज्य की ओर भी जो प्रभु स्थापित करने वाले हैं (लूका 1:32-33)।

एज्रा-नहेम्याह : इन पुस्तकों में प्रभु यीशु को मंदिर का पुनर्निर्माण करने वाले के रूप में देखा जा सकता है। सुलैमान के मंदिर को नबूकदनेस्सर ने तबाह कर दिया था। बाद में उसी स्थान पर यरूब्बाबेल ने मंदिर का पुनर्निर्माण किया था। प्रभु यीशु ने नए नियम की कलीसिया का निर्माण किया।

एस्तेर : इस्राएल का एक शक्तिशाली शत्रु हामान, परमेश्वर के लोगों को नाश करना चाहता था। तब यहूदी मोर्दकै आया जो ''यहूदियों की दृष्टि में बड़ा था, और उसके सब भाई उससे प्रसन्न थे, क्योंकि वह अपने लोगों की भलाई की खोज में रहा करता था और अपने सब लोगों से शान्ति की बातें कहा करता था।'' उसकी विश्वस्तता और प्रार्थनाओं के कारण शत्रु का विनाश हो गया। मोर्दकै उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह का प्रतीक है। (10:3)।

अय्यूब : अय्यूब की पुस्तक में हम मसीह को जीवित छुड़ानेवाले

के रूप में देखते हैं, जो में अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा।

भजन संहिता : इस पृथ्वी पर मनुष्य का जीवन अनेक समस्याओं और कठिनाइयों से भरा हुआ है। प्रभु हमारे लिए युगों की चट्टान हैं जिस पर हम विश्वास कर सकते हैं। (1 कुरि.10:4)

नीतिवचन - सभोपदेशक : नीतिवचन और सभोपदेशक में प्रभु यीशु दिव्य बुद्धि हैं। (कुलु. 2:3)।

श्रेष्ठगीत : श्रेष्ठगीत की पुस्तक में मसीह 'अति प्रिय' और शूनेमिन कलीसिया है। (5:10)।

भविष्यद्वाणी की पुस्तकें : भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के प्रवक्ता हैं, जो परमेश्वर के संदेश को लोगों तक पहुँचाते हैं। सभी भविष्यवाणियों का विषय वस्तु ''शान्ति का राजकुमार'' है। (यशा. 9:6)।

सुसमाचार : मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है। उस उद्धारकर्ता का जीवन, उसकी सेवकाई और शिक्षाएँ, उद्धार का मार्ग, प्रभु के पास आए हुओं का अनुभव इत्यादि बातों का वर्णन सुसमाचारों में किया गया है।

प्रेरितों के काम : उद्धार का सुसमाचार सारे संसार को सुनाया गया और अनेक स्थानीय कलीसियाओं की स्थापना हुई। प्रभु यीशु ने कहा था, ''मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा।'' अपने शिष्यों और प्रेरितों के द्वारा प्रभु ने यह कार्य किया।

पत्रियाँ : पत्रियों में हम प्रभु यीशु को परमेश्वर और मनुष्यों के बीच के मध्यस्थ के रूप में देखते हैं। प्रभु को हम सबसे ऊँचा उठाया हुआ देखते हैं। प्रभु यीशु को हम कलीसिया का पालन-पोषण करते हुए देखते हैं।

प्रकाशितवाक्य : प्रकाशितवाक्य में हम प्रभु को महिमा में वापस आते देखते हैं। वह राजाधिराज शासक और न्यायी है।

याद करें : आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था,

और वचन परमेश्वर था। (यूहन्ना 1:1)

प्रश्न :

1. पुराने नियम के कुछ सन्तों के नाम बताएँ जो प्रभु यीशु के प्रतीक हैं।
2. पुराने नियम में मसीह को दिए गए कुछ नाम बताएँ।
3. वर्णन करें - प्रभु यीशु छुड़ानेवाला-कुटुम्बी है।
4. श्रेष्ठगीत का विषय-वस्तु क्या है?

पाठ-31

गतसमनी

लूका 22:39-51; मत्ती 26:36-45;
मरकुस 13:32-50; यूहन्ना 18:1-11

सुनहरा पद :

तब मैं ने कहा, ''देख, मैं आया हूँ: क्योंकि पुस्तक में मेरे विषय ऐसा ही लिखा हुआ है। हे मेरे परमेश्वर, मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ; और तेरी व्यवस्था मेरे अंतःकरण में बसी है।''

गतसमनी, जैतून के पेड़ों का एक उपवन है जो जैतून पहाड़ी की तलहटी में बसा हुआ है। यह यरूशलेम के पूर्व की ओर किद्रोन की तराई के पार है। प्रभु अपने शिष्यों के साथ अक्सर यहाँ आते थे। (यूहन्ना 18:12)। यरूशलेम में फसह के पर्व का भोजन करने के बाद प्रभु यीशु अपने शिष्यों के साथ देर रात को उस बगीचे में आए। वहाँ प्रभु ने उनसे कहा, ''यहाँ बैठे रहो, जब तक मैं प्रार्थना करूँ।'' तथापि प्रभु ने पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ लेकर गए। प्रभु ने उनसे कहा, ''मेरा मन बहुत उदास है, यहाँ तक कि मैं मरने पर हूँ, तुम यहाँ ठहरो, और जागते रहो।'' फिर वह आगे बढ़ा और भूमि पर गिरकर प्रार्थना करने लग, ''हे पिता, इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले, तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, पर जो तू चाहता है, वही हो।'' तब स्वर्ग से एक दूत उसको दिखाई दिया जो उसे सामर्थ्य देता था। वह अत्यंत संकट में व्याकुल होकर और भी हार्दिक वेदना से प्रार्थना करने लगा, और उसका पसीना मानो लहू की बड़ी-बड़ी बूंदों के समान भूमि पर गिर रहा था। जब वह अपने चेलों के पास आया तो उन्हें सोते पाया। प्रभु ने उनसे कहा, ''उठो और प्रार्थना करो कि परीक्षा में न पड़ो।''

प्रभु का पकड़वानेवाला यहूदा भी वह जगह जानता था, क्योंकि प्रभु यीशु अपने चेलों के साथ अक्सर वहाँ जाया करते थे। तब यहूदा, सैनिकों के एक दल को, और प्रधान याजकों और फरीसियों की ओर से

प्यादों को लेकर, दीपकों और मशालों और हथियारों को लिए हुए वहाँ आया। यहूदा ने पहले ही उन लोगों से तीस चाँदी के सिक्कों के बदले प्रभु यीशु को पकड़वा देने का वायदा किया था। (मत्ती 26:14-16)। वह प्रभु के पास आया और प्रभु को चूमा। यह प्रभु को पहचानने के लिए एक चिन्ह था। प्रभु यीशु ने उससे कहा, ''हे मित्र, क्या तू चूमा लेकर मनुष्य के पुत्र को पकड़वाता है?'' प्रभु ने भीड़ से पूछा, ''किसे ढूँढ़ते हो?'' उन्होंने उत्तर दिया, ''यीशु नासरी को''। यीशु ने उनसे कहा, ''मैं हूँ।'' ये वे पवित्र शब्द हैं जो केवल परमेश्वर ही कह सकते हैं, और जिन्हें सुनकर वे पीछे हटकर भूमि पर गिर पड़े। तब प्रभु यीशु ने फिर उनसे वही प्रश्न पूछा और उन्होंने वही उत्तर दिया। प्रभु ने उनसे कहा, ''मैं तो तुम से कह चुका हूँ कि मैं हूँ। यदि मुझे ढूँढ़ते हो तो इन्हें जाने दो।'' डर और घबराहट में पतरस ने तलवार निकाली और महायाजक के दास मलखुस पर चला दी और उसका दायाँ कान उड़ा दिया। प्रभु यीशु ने पतरस से कहा, ''अपनी तलवार म्यान में रख। जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है, क्या मैं उसे न पीऊँ?'' तब सैनिकों ने प्रभु यीशु को पकड़ कर बंदी बना लिया।

उसके पश्चात् जो हुआ, वह हमारे पाप की भयावहता और मसीह के प्रेम का परिमाण और उस महान कीमत को दिखाता है जो प्रभु यीशु ने हमारे लिए चुकाई। प्रभु ने हमसे प्रेम किया और अपने आप को हमारे लिए दे दिया।

स्थायी : चढ़ाता हूँ मैं धन्यवाद प्रभु
क्रूस के उस प्रेम के लिए
मारा गया और गाड़ा गया था,
जी उठा मेरे लिए।

अंतरा : काँटों का ताज पहना तू ने सिर पर,
हाथ-पाँव ठोके क्रूस पर तेरे
हुआ था बलि मेम्ने की नाईं
सहा सब मेरे लिए।

2. दु:ख सहा तूने कि शान्ति मैं पाऊँ,
क्रूस पर चढ़ा कि पाऊँ मुकुट,
मरण को सहा मैं जीवन पाऊँ,
कैसा प्रेम मेरे लिए।

3. देखता हूँ महिमित स्वर्ग मेरा,
न पाया गुण से यह मेरे,
खुशी के आँसू के साथ भजूँ मैं,
यह सब दान मेरे लिए।

4. घृणित पाप से करता हूँ घृणा,
क्रूस पर वह हो गया है दूर,
लगाओ सिंहासन मेरे हृदय में,
गाऊँ मैं तेरे लिए।

याद करें : फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर मुँह के बल गिरा, और यह प्रार्थना की, ''हे मेरे पिता, यदि हो सके तो यह कटोरा मुझ से टल जाए, तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है, वैसा ही हो।'' (मत्ती 26:39)

प्रश्न :

1. गतसमनी का बगीचा कहाँ स्थित है?
2. बगीचे में, अपने कठिन घड़ी में प्रभु यीशु किन्हें अपने साथ लेकर गए?
3. प्रभु यीशु को पकड़वाने में यहूदा की क्या भूमिका थी?
4. गतसमनी में प्रभु के पकड़े जाने की घटना का वर्णन करें।

पाठ–32

क्रूस

(लूका 23; मत्ती 27; मरकुस 15; यूहन्ना 19)

सुनहरा पद :

क्योंकि कुत्तों ने मुझे घेर लिया है; कुकर्मियों की मंडली मेरे चारों ओर मुझे घेरे हुए है। भजन 22:16.

रोमी लोग जघन्य अपराधियों को क्रूस पर चढ़ाते थे। रोमी कानून के अनुसार रोमी नागरिक को क्रूस पर नहीं चढ़ाया जाता था। सुबह के समय लगभग 9 बजे गुलगुता की पहाड़ी पर, दो कुकर्मियों के बीच प्रभु यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया। दोपहर के लगभग 3 बजे उनकी मृत्यु हो गई। हमारे प्रभु यीशु ने भयंकर पीड़ी सही जो हमारे पापों की सज़ा थी। उन्होंने शैतान से युद्ध किया और हमारे स्थान पर शरीर, प्राण और आत्मा में भयंकर कष्ट उठाया। अत: वह हमारे उद्धारकर्ता हैं। जब हम यह विश्वास करते हैं कि उन्होंने हमारे लिए कष्ट उठाए और प्राण दिए, तब हमारी आत्मा का उद्धार होता है और हमें अनन्त जीवन प्राप्त होता है। (गल. 3:1; 2 तीमु. 2:8; प्रका. 5:12; फिलि. 3:9–11; 1 कुरि. 1:23; 1 कुरि. 2:2)।

क्रूस पर से कहे गए सात वचन :

सुसमाचारों में हम पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु ने क्रूस पर से सात वचन कहे। उनमें से तीन, प्रभु ने परमेश्वर से कहे, एक उस डाकू से जिसने पश्चाताप किया था, एक अपनी माता से, एक वहाँ खड़े लोगों से और अंतिम वचन पूरे संसार से।

1. हे पिता, इन्हें क्षमा कर : लूका 23:34

यह एक मध्यस्थता की प्रार्थना थी। यह उनके लिए थी जिन्होंने उन को क्रूस पर चढ़ाया था। उन्होंने जिन बातों की शिक्षा दी, यह उसका

प्रायोगिक रूप था। (मत्ती 5:39, 44, 45)।

2. आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा : (लूका 23:43)

प्रभु यीशु ने ये शब्द उस डाकू से कहे, जो उनके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था।

इसके विषय में हम कुछ बातें सीखेंगे :-

1. यद्यपि रोमी कानून के अनुसार उस डाकू क्रूस को मृत्युदंड मिला था, परन्तु उसके पाप परमेश्वर के द्वारा क्षमा किए गए।
2. वह मर गया तौभी वह प्रभु यीशु के साथ स्वर्गलोक गया।
3. जिन्होंने प्रभु यीशु पर विश्वास करके उद्धार प्राप्त किया है, वे अपनी मृत्यु के पश्चात् प्रभु के साथ होते हैं।
4. एक पापी कभी भी उद्धार प्राप्त कर सकता है, यदि वह सचमुच अपने पापों से पश्चाताप करता है, चाहे वह मरने ही पर क्यों न हो।
5. मनुष्यों को किसी भी स्थिति से बचाने के लिए प्रभु यीशु सक्षम हैं। (इब्रा. 7:25)।

3. हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है : (यूहन्ना 19:26-27)

प्रभु यीशु ने ये शब्द अपनी माता से कहे, जो क्रूस के पास खड़े होकर अपने प्रिय पुत्र के दर्द और पीड़ा को देख रही थी। शमौन के शब्द यहाँ पूरे हुए कि ''तेरा प्राण भी तलवार से वार पार छिद जाएगा।'' प्रभु ने अपनी माता को अपने प्रिय शिष्य यूहन्ना को सौंप दिया। कितना धन्य प्रभु!

4. हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया: (मत्ती 27:46, 47; मरकुस 15:34, 35)।

भजन 22 का पहला पद यही कहता है। भविष्यवक्ता की आत्मा में होकर भजनकार प्रभु के क्रूस की वेदना का वर्णन कर रहा है। यहाँ एक पुत्र है जो पिता के द्वारा त्यागा हुआ है। इस समय परमेश्वर ने अपने पुत्र की प्रार्थना का उत्तर नहीं दिया। लाज़र की कब्र पर प्रभु यीशु ने

कहा था, ''पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ क्योंकि तू ने मेरी प्रार्थना सुनी है।'' तब प्रभु ने पुकारा, ''हे लाज़र निकल आ।'' और वह जीवित बाहर आ गया था। परन्तु यहाँ क्रूस पर प्रभु को कोई उत्तर न मिला। प्रभु यीशु हमारे पापों का दण्ड उठा रहे थे और धर्मी और न्यायी परमेश्वर ने ऐसा होने दिया और कोई उत्तर न दिया। परमेश्वर के द्वारा त्यागा जाना ही वह कड़वा प्याला था।

5. मैं प्यासा हूँ :

जिसने महान समुद्र और नदियाँ बनाईं, उसने कहा, ''मैं प्यासा हूँ'' प्रभु यीशु के शरीर का लोहू हमारे लिए बहाया गया। अपने बहुमूल्य लोहू से प्रभु ने हमारे पापों को धो दिया। (इफि. 1:7; 1 यूहन्ना 1:7) उसने हमें अपने बहुमूल्य लोहू से खरीद लिया और राज-पदधारी याजकों का समाज बना दिया। (प्रका. 5:9; 1 पतरस 2:9)।

6. पूरा हुआ : (यूहन्ना 19:30)

बहुत ही अर्थपूर्ण शब्द: मनुष्यजाति के उद्धार के लिए जिन बातों की आवश्यकता थी, वह सब कुछ क्रूस पर पूरा हुआ। जो कोई क्रूस पर पूरे हुए कार्य पर विश्वास करता है, उसका उद्धार होता है।

7. हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ : (लूका 23:46)

ये अंतिम वचन हैं जो प्रभु ने क्रूस पर से कहे। यह कहकर उन्होंने प्राण त्याग दिए। प्रभु यीशु ने समस्त संसार के लिए अपने आप को दे दिया। (यूहन्ना 10:11, 15, 18; इब्रा. 7:27; 9:14)।

जब स्तिफनुस को पत्थरवाह किया जा रहा था, तब उसने कहा, ''हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर।'' मृत्यु के समय हमारी आत्मा शरीर छोड़ देती है और प्रभु के पास चली जाती है। अत: हमें भयभीत होने की कोई आवश्यकता नहीं है।

याद करें : वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिए मर कर धार्मिकता के लिए जीवन बिताएँ। उसी के मार खाने से तुम चँगे हुए। (1 पतरस 2:24)

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु को कहाँ और कब क्रूस पर चढ़ाया गया?
2. क्रूस पर से प्रभु ने कौन से सात वचन कहे?
3. ''पूरा हुआ'' से क्या तात्पर्य है?
4. हमें मृत्यु से डरने की आवश्यकता नहीं है – क्यों?

पाठ–33

पुनरुत्थान

सुनहरा पद :

जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। मरकुस 16:16

प्रभु यीशु मृतकों में से जी उठे। प्रभु यीशु के जी उठने से पहले अनेक लोग जी उठे थे (लाज़र, याईर की बेटी, नाईन नगर की विधवा का पुत्र, सारफत की विधवा का पुत्र, शूनेमिन का पुत्र, एलीशा की कब्र में दफनाया गया व्यक्ति आदि)। परन्तु वे सभी नाशवान भौतिक शरीर में ही जी उठे थे, परन्तु प्रभु यीशु महिमान्वित शरीर में जी उठे जिस पर मृत्यु का कोई अधिकार नहीं। प्रभु यीशु के द्वितीय आगमन पर सभी सन्त उस प्रकार के शरीर के साथ जी उठेंगे।

अपने पुनरुत्थान से प्रभु यीशु ने मृत्यु की सामर्थ को नाश कर दिया। प्रभु यीशु ने अपनी मृत्यु के द्वारा और जी उठने के द्वारा शैतान और मृत्यु की शक्ति को पराजित कर दिया। (इब्रा. 2:14)। मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ प्रभु के पास हैं। प्रका. 1:18। पृथ्वी और स्वर्ग का सारा अधिकार और सामर्थ प्रभु यीशु को दिया गया है। मत्ती 28:18। एक दिन वे राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में पूर्ण अधिकार के साथ आएँगे। अपने जी उठने और स्वर्गारोहण के बीच के चालीस दिन तक प्रभु ने अनेक बार अपने शिष्यों को दर्शन दिया।

पुनरुत्थान के बाद दिखाई देना :

1. मरियम मगदलीनी को : (मरकुस 16:9–11; यूहन्ना 20:11–18)

मरियम मगदलीनी प्रभु से अत्यंत प्रेम करती थी। प्रभु यीशु ने उसके पापों को क्षमा किया था, और उसमें से सात दुष्टात्माओं को निकाला था। प्रभु यीशु के सार्वजनिक सेवा कार्य के दौरान मरियम कुछ अन्य स्त्रियों

के साथ प्रभु के पीछे हो लेती थी। वह क्रूस के पास भी खड़ी थी। जब प्रभु की देह को कब्र में रखा जा रहा था, तब भी वह वहाँ पर उपस्थित थी। रविवार को अति भोर को ही वह कब्र पर पहुँची। प्रभु के प्रति उसके प्रेम ने उसे सामर्थ दी कि अंधेरे में ही वह कब्र पर पहुँच गई। प्रभु ने उसे दर्शन दिया। उसने प्रभु को तब पहचाना जब प्रभु ने उसे पुकारा, ''हे मरियम''। अपने पुनरुत्थान के पश्चात् प्रभु ने सबसे पहले एक स्त्री को दर्शन दिया। जो प्रभु को ढूँढ़ेगा, वह पाएगा।

2. स्त्रियों को : (मत्ती 28:8-10)

प्रभु यीशु के क्रूस के पास चार स्त्रियाँ थीं -

1) प्रभु यीशु की माता (2) मरियम मगदलीनी (3) सलोमी, जो याकूब और यूहन्ना की माता और जब्दी की पत्नी थी। वह प्रभु यीशु की माता मरियम की बहन भी थी। (4) क्लोपास की पत्नी मरियम। मरियम मगदलीनी, याकूब की माता मरियम और योआना रविवार को अति भोर कब्र पर गए। (लूका 24:10)।

यूहन्ना उस बात का उल्लेख करते हैं (यूहन्ना 20:11-18) जब प्रभु यीशु ने मरियम को दर्शन दिया। उसके पश्चात प्रभु अन्य दो स्त्रियों को भी दिखाई दिए थे और उन्होंने प्रभु के पाँव छुए और आराधना की। (मत्ती 28:10)।

3. पतरस को : (लूका 24:34; 1 कुरि. 15:5)

यह स्पष्ट नहीं है कि प्रभु ने पतरस को कब दर्शन दिया। पतरस बहुत उदास था क्योंकि उसने तीन बार प्रभु का इंकार किया था। अत: यह संभव है कि उसे ढ़ाढ़स बंधाने के लिए प्रभु ने उसे विशेष दर्शन दिया था।

4. उन चेलों को जो इम्माऊस जा रहे थे : (मरकुस 16:12, 13, लूका 24:13-25)

प्रभु एक अजनबी की तरह उन दो शिष्यों के साथ चले जो इम्माऊस जा रहे थे। रास्ते में प्रभु ने उन्हें समझाया कि वचन में क्या लिखा है।

अंततः जब वे उसके साथ भोजन करने बैठे, तब उनकी आँखें खुल गईं और उन्होंने प्रभु यीशु को पहिचाना।

5. दस शिष्यों को : (यूहन्ना 20:19-23)

चेले भयभीत थे, और द्वार बंद करके कमरे में बैठे थे। प्रभु वहाँ आए और उनसे कहा, ''तुम्हें शांति मिले''। तब प्रभु ने उन्हें अपने हाथ और पसली दिखाए। उन्होंने देखा और विश्वास किया। वे आनंद से भर गए। उस समय थोमा उनके बीच में नहीं था। जब उसे प्रभु के दर्शन की बात पता चली, तब उसने उनसे कहा, ''जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के छेद न देख लूँ और कीलों के छेदों में अपनी उँगली न डाल लूँ, और उसके पँजर में अपना हाथ न डाल लूँ, तब तक मैं विश्वास नहीं करूँगा।''

6. शिष्यों को, जब थोमा उपस्थित था : (मरकुस 16:14; यूहन्ना 20:26-31)

इस घटना के लगभग एक हफ्ते बाद प्रभु के शिष्य फिर से एक जगह इकट्ठे हुए और थोमा भी उनके साथ था। वह एक रविवार का दिन था। प्रभु आए और उनके बीच खड़े हुए। प्रभु ने थोमा से कहा, ''अपनी उँगली यहाँ लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल, और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो।'' थोमा ने तुरंत कहा, ''हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!''

7. तिबरियास के किनारे सात शिष्यों को : (यूहन्ना 21:1-23)

यरूशलेम में प्रभु की मृत्यु हुई और पुनरुत्थान हुआ। प्रभु ने अपने शिष्यों से पहले ही कहा था कि वे गलील को चले जाएँ। (मत्ती 26:32; 28:10)। प्रभु के कहने के अनुसार उन्होंने किया। समय बीतने पर उन लोगों ने अपनी रोजी-रोटी कमाने का विचार किया। पतरस ने कहा, ''मैं मछली पकड़ने जाता हूँ।'' और छः शिष्य भी उसके पीछे हो लिए। वे गलील की झील में मछली पकड़ने गए। परन्तु उस रात उन्होंने कुछ न पकड़ा। सवेरा होने पर वे किनारे के पास ही थे, और प्रभु किनारे पर

ही खड़े थे परन्तु उन्होंने प्रभु को न पहिचाना। प्रभु ने उन्हें पुकारा, ''हे बालकों, क्या तुम्हारे पास कुछ मछलियाँ हैं?'' उन्होंने उत्तर दिया, ''नहीं''। तब उसने उनसे कहा, ''नाव की दाहिनी ओर जाल डालो तो पाओगे।'' अत: उन्होंने जाल डाला, और अब मछलियों की बहुतायत से उसे खींच न सके। इस आश्चर्यकर्म के द्वारा प्रभु ने अपने चेलों को विश्वास में दृढ़ किया। (लूका 5:1-11)।

8. गलील में एक पहाड़ी पर : (मत्ती 28:16-20)

मत्ती 28 में प्रभु के दर्शन का उल्लेख है। यह गलील की एक पहाड़ी पर हुआ। इस बात की पूरी संभावना है कि यह वही घटना है जो 1 कुरि. 15:6 में दी गई है, जहाँ प्रभु ने एक साथ 500 लोगों को दर्शन दिया।

9. बैतनिय्याह में, स्वर्गारोहण के समय : (प्रेरितों. 1:11,12; लूका 24:50,51)

बैतनिय्याह एक गाँव है जो जैतून की पहाड़ी के पास बसा हुआ है। इसी पहाड़ी पर से प्रभु स्वर्ग को उठा लिए गए थे। चेलों के देखते-देखते प्रभु यीशु ऊपर उठा लिए गए, और बादल ने प्रभु को उनकी आँखों से छिपा लिया। जब वे लोग आकाश की ओर ताक रहे थे, तब दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उनके पास आ खड़े हुए, और उनसे कहा, ''हे गलीली पुरुषों, तुम क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है, उसी रीति से वह फिर आएगा।''

10. प्रभु यीशु के भाई याकूब को : (1 कुरि. 15:7)

प्रभु यीशु का भाई याकूब (मत्ती 13:53; मरकुस 6:3) प्रभु पर विश्वास नहीं करता था (यूहन्ना 7:5)। जी उठने पर प्रभु ने अपने भाई को दर्शन दिया जिस कारण से उसका जीवन परिवर्तित हो गया। तब उसने विश्वास किया कि प्रभु यीशु ही मसीहा और उद्धारकर्ता है। याकूब, यरूशलेम की कलीसिया में प्रमुख अगुआ बना। (प्रेरितों 15:12-21; गल. 1:19; 12:9)। अंतत: एक शहीद की तरह उसकी मृत्यु हुई।

11. दमिश्क के रास्ते में शाऊल को : (1 कुरि. 15:8)

तरसुस का शाऊल, प्रभु यीशु और उनके अनुगामियों का शत्रु था। उसने ठान लिया था कि किसी भी कीमत पर मसीहियत का नाश करना है। एक दिन वह दमिश्क से यरूशलेम को जा रहा था, ताकि मसीही लोगों को पकड़कर और बाँधकर यरूशलेम ले आए। परन्तु रास्ते में एक आश्चर्यकर्म हुआ। वह दोपहर का समय था। एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी, और वह भूमि पर गिर पड़ा। वहाँ उसने जीवित प्रभु को देखा। इस दर्शन के विषय में हम प्रेरितों 9:1-16; 22:3-21; और 26:12-18 में पढ़ते हैं।

हमारे प्रभु यीशु के जी उठने की ठोस नींव पर टिका हुआ है हमारा मसीही विश्वास। अब प्रभु जीवित हैं। प्रभु हमारे हृदयों में वास कर सकते हैं। अत: एक मसीही कह सकता है ''जीना मेरे लिए मसीह, और मरना लाभ है।''

याद करें : वरन हमारे लिए भी जिनके लिए विश्वास धार्मिकता गिना जाएगा, अर्थात् हमारे लिए जो उस पर विश्वास करते हैं, जिस ने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया। वह हमारे अपराधों के लिए पकड़वाया गया, और हमारे धर्मी ठहरने के लिए जिलाया भी गया। (रोमियों 4:24-25)

प्रश्न :

1. इम्माऊस के मार्ग पर प्रभु ने दो शिष्यों को जो दर्शन दिया उसका वर्णन करें।
2. प्रभु यीशु का भाई याकूब कैसे विश्वासी बना?
3. किसने ये शब्द कहे, और कब कहे-''हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!''
4. संदेह करने वाले शिष्यों को फिर से विश्वास में कैसे दृढ़ किया गया?
5. जी उठने के पश्चात् प्रभु ने सबसे पहले किसे दर्शन दिया, और कैसे?

पाठ–34

स्वर्गारोहण

लूका 24:51; प्रेरितों. 1:6–11

सुनहरा पद :

परन्तु उसने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की महिमा को और यीशु को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखकर कहा, ''देखो, मैं स्वर्ग को खुला हुआ, और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखता हूँ।'' प्रेरितों 7:55–56.

अपने सेवाकार्य के अंत में प्रभु ने अपने शिष्यों से कहा, ''मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुम से कह देता; क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूँ। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा, कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो।'' (यूहन्ना 14:2–3)। अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा प्रभु ने उद्धार के कार्य को पूरा कर लिया था, और अब स्वर्ग में अपने पिता के घर वापस जाने का समय आ गया था। अपने पुनरुत्थान के पश्चात् प्रभु ने अनेक बार अपने शिष्यों को दर्शन दिया था, और अपने जीवित होने का प्रमाण दिया था। (प्रेरितों 1:3)।

अपने जी उठने के चालीसवें दिन की सुबह, अंतिम बार प्रभु ने अपने ग्यारह शिष्यों को दर्शन दिया। अब उनके जाने का समय निकट आ गया था जो परमेश्वर की अनंत योजना के अनुसार था। प्रभु ने हाथ उठाकर उन्हें आशीर्वाद दिया और फिर वह उनके देखते–देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया। जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तो दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उनके पास आ खड़े हुए और उनसे कहा, ''हे गलीली पुरुषों, तुम क्यों

खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है, उसी रीति से वह फिर आएगा।''

लूका कहता है, ''तब वे उसको दण्डवत् करके बड़े आनन्द से यरूशलेम को लौट गए।'' (लूका 24:52)। इब्रानियों 1:3 में हम पढ़ते हैं, ''वह पापों को धोकर ऊँचे स्थानों पर महामहिमन के दाहिने जा बैठा।'' वहाँ पर प्रभु हमारे लिए सहायक (1 यूहन्ना 2:1), महायाजक (इब्रा. 4:14) और मध्यस्थ (इब्रा. 12:24) का कार्य कर रहे हैं। हर एक विश्वासी के दिन प्रतिदिन का पवित्रीकरण हमारे प्रभु यीशु की मध्यस्थता और महायाजक के कार्य पर आधारित है। अपने वायदे के अनुसार एक दिन प्रभु जैतून के पर्वत पर महिमा सहित वापस आएँगे। परन्तु उससे पहले ही कलीसिया प्रभु के पास उठा ली जाएगी। (1 थिस्स. 4:13-18;1 कुरि. 15:50-58)।

याद करें : क्योंकि मसीह ने उस हाथ के बनाए हुए पवित्र स्थान में, जो सच्चे पवित्र स्थान का नमूना है, प्रवेश नहीं किया पर स्वर्ग ही में प्रवेश किया, ताकि हमारे लिए अब परमेश्वर के सामने दिखाई दे। (इब्रा. 9:24)

प्रश्न :

1. अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले ही प्रभु ने अपने स्वर्गारोहण के विषय में चेलों से क्या कहा था?
2. प्रभु यीशु के स्वर्गारोहण का वर्णन करें।
3. अब स्वर्ग में प्रभु की सेवकाई क्या है?
4. विश्वासी लोग कब प्रभु के पास जाएँगे?

पाठ-35

पिन्तेकुस्त

प्रेरितों के काम-अध्याय 2.

सुनहरा पद :

मैं पिता से विनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे। यूहन्ना 14:16

''पिन्तेकुस्त'' शब्द का अर्थ है ''पचासवाँ दिन''। यह यहोवा के सात पर्वों में से एक है। इस्राएलियों को आज्ञा दी गई थी, कि ''कटनी के पर्व'' से सात विश्रामदिन गिन लेना। सातवें विश्राम दिन के दूसरे दिन तक पचास दिन गिनना, और पचासवें दिन यहोवा के लिए नया अन्नबलि चढ़ाना। (लैव्य. 23:16) उस दिन मैदे की दो खमीर वाली रोटियाँ भेंट के लिए चढ़ाई जानी थी।

जैसे पिता ने समय के पूरा होने पर पुत्र को भेजा, उसी प्रकार समय के पूरा होने पर पिता ने पवित्र आत्मा को भी भेजा जिसका वायदा किया गया था। क्योंकि सब्त के बाद वाला दिन ''पिन्तेकुस्त'' पड़ता था, अत: वह हमेशा ही रविवार का दिन होता है। प्रभु यीशु के जी उठने के पचासवें दिन पिन्तेकुस्त का दिन था, जो युगान्तरकारी घटना थी। इस दिन प्रभु के शिष्यों को एक शरीर अर्थात् कलीसिया को बनाया गया। एक अर्थ में यह कलीसिया का जन्म दिवस था। हम उस विशेष दिन की घटनाओं और उसके महत्व का अध्ययन करेंगे।

प्रभु की आज्ञा के अनुसार (लूका 24:49; प्रेरितों 1:4) ''पिता के वायदे'' के लिए शिष्य लोग यरूशलेम में प्रतीक्षा कर रहे थे। यह पिन्तेकुस्त का दिन था और वे सब एक जगह इकट्ठे थे। (प्रेरितों 2:1)। यह प्रभु यीशु के जी उठने के पश्चात् का पचासवाँ दिन था और प्रभु के स्वर्गारोहण के बाद का दसवाँ दिन था। अचानक आकाश से बड़ी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज

गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं। वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे। यह उस दिन की मात्र घटना है, परन्तु प्रेरित पौलुस हमें इसका अर्थ बताते हैं।

आकाश के नीचे की हर एक जाति और भाषा में से भक्त यहूदी यरूशलेम में रह रहे थे। जब यह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को अपनी ही मातृभाषा में वचन सुनाई दे रहा था। और वे सब चकित हुए और घबराकर एक दूसरे से कहने लगे ''यह क्या हो रहा है?'' कुछ लोगों ने मज़ाक उड़ाकर कहा ''वे तो मदिरा के नशे में हैं।'' तब पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊँचे शब्द से कहने लगा, ''हे यहूदियों और हे यरूशलेम के सब रहने वालों, यह जान लो और मेरी बातें ध्यान से सुनो। यह वह बात है जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई थी : 'परमेश्वर कहता है कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि, मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उण्डेलूँगा।'' (प्रेरितों 2:17; योएल 2:28-32)।

उस दिन उन्होंने परमेश्वर का वचन अपनी अपनी मातृभाषा में सुना और उनमें से तीन हज़ार लोागें ने वचन ग्रहण किया और बपतिस्मा लिया और उनके साथ मिल गए। (प्रेरितों 2:41)।

याद करें : क्योंकि हम सबने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास हो, क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया। (1 कुरि. 12:13)

प्रश्न :

1. पिन्तेकुस्त क्या है?
2. पिन्तेकुस्त के दिन क्या हुआ?
3. लोगों की प्रतिक्रिया क्या थी?
4. पतरस के भाषण का क्या परिणाम रहा?

पाठ-36

परमेश्वर की कलीसिया

प्रेरितों के काम 2:41-47; 3:42-45

सुनहरा पद :

जो उसने मसीह में किया कि उसको मरे हुओं में से जिलाकर, स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर आनेवाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया; और सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया, और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया। यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सबमें सब कुछ पूर्ण करता है। इफिसियों 1:20-23

कलीसिया का अर्थ है-बुलाए हुए लोगों का समूह। उन्हें संसार में से बुलाया गया और अलग किया गया कि वे परमेश्वर के हों (1 कुरि. 1:1-2)। और परमेश्वर की आराधना करें, प्रार्थना करें और संसार को परमेश्वर की गवाही दें। प्रभु यीशु ने अपने पुनरुत्थान के पश्चात् चालीस दिनों के बाद स्वर्गारोहण किया और उनके वायदे के अनुसार पुनरुत्थान के पचासवें दिन पवित्र आत्मा संसार में आए (प्रेरितों 2:1-4)। उस दिन विश्वासियों ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त किया और एक शरीर बनाए गए जिससे कलीसिया का जन्म हुआ (1 कुरि. 12:13)। पिन्तेकुस्त से कलीसिया के उठाए जाने तक जितनों ने प्रभु यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता माना, वे सब इस **सार्वभौमिक कलीसिया** के सदस्य हैं। किसी भी स्थान पर एकत्र होने वाले विश्वासियों का समूह **स्थानीय** कलीसिया कहलाती है।

कलीसिया को ''मसीह की देह'' कहा गया है, और मसीह को कलीसिया का ''सिर''। दूसरे शब्दों में सभी विश्वासी उस देह के अंग

हैं (प्रेरितों 2:47)। हर एक सदस्य को एक या अनेक वरदान दिए गए हैं ताकि देह की उन्नति हो सके (1 कुरि. 12)। कलीसिया को मसीह दुल्हन भी कहा गया है और मसीह को दूल्हा। आज कलीसिया की मंगनी हो चुकी है, (2 कुरि. 11:2) और प्रभु यीशु के दोबारा आगमन पर विवाह होगा। कलीसिया को चाहिए कि स्वयं को पवित्र रखकर दूल्हे को स्वीकार करने के लिए स्वयं को तैयार करे।

कलीसिया की तुलना एक भवन से भी की गई है। कलीसिया का निर्माण जीवते पत्थरों से किया गया है, जो विश्वासीगण हैं। (1 पतरस 2:4)। इस आत्मिक भवन को परमेश्वर का मंदिर भी कहते हैं, और पवित्र आत्मा इसमें निवास करते हैं। इस मंदिर के सभी सदस्य मिलकर पवित्र याजकों का समाज हैं। वे आत्मिक बलिदान चढ़ाते हैं जो परमेश्वर की आराधना है। (1 पतरस 2:5; इब्रा. 13:15)।

पिन्तेकुस्त के दिन के पश्चात् जितने लोगों ने उद्धार प्राप्त किया उन्हें प्रभु ने कलीसिया में जोड़ दिया (प्रेरितों 2:47)। यह कार्य आज भी जारी है। यह विश्वासियों की गवाही है, जिसके द्वारा अन्य लोग प्रभु यीशु के बारे में जानते हैं। जब वे यह सुसमाचार सुनते हैं कि प्रभु यीशु ने उनके पापों के लिए अपना प्राण दिया और फिर जी उठे, तब वे प्रभु पर विश्वास करते हैं और उद्धार प्राप्त करते हैं। और जो लोग उद्धार प्राप्त करते हैं, वे कलीसिया के सदस्य बन जाते हैं।

कलीसिया को परमेश्वर का झुंड भी कहा गया है। प्रभु यीशु महान चरवाहा हैं और विश्वासीगण भेड़ें हैं। प्रभु उन्हें भोजन खिलाते हैं। और उनकी देखभाल करते हैं। भेड़ें अपने चरवाहे का शब्द सुनती हैं और उसके पीछे चलती हैं (यूहन्ना 10:4)। कलीसिया के प्राचीनों को भी चरवाहा कहा गया है। वे स्थानीय कलीसिया में विश्वासियों की अगुआई करते हैं।

याद करें : तुम प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर, जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो। जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मंदिर बनती जाती है। जिस

में तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिए एक साथ बनाए जाते हो। (इफि. 2:20-22)

प्रश्न :

1. कलीसिया क्या है?
2. कलीसिया को कौन-कौन से नाम दिए गए हैं?
3. कलीसिया का जन्म कब हुआ?
4. कलीसिया का सदस्य बनने के लिए क्या करना चाहिए?

पाठ-37

कलीसिया पर सताव

सुनहरा पद :

मैं ने यह बातें तुम से इसलिए कहीं है कि तुम्हें मुझ में शांति मिले। संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढ़ाढ़स बाँधो, मैंने संसार को जीत लिया है। यूहन्ना 16:33

इस संसार के सृष्टिकर्ता प्रभु जब इस संसार में आए, तब संसार ने उन्हें स्वीकार करने के बजाय क्रूस पर चढ़ा दिया। आज संसार उस दुष्ट के वश में है। (1 यूहन्ना 5:19)। अत: जो भी धर्मी जीवन बिताना चाहेगा वह कष्ट उठाएगा। (फिलि. 1:29)। क्योंकि यह संसार मसीह और मसीहियों का विरोधी है। यदि संसार हम से घृणा करता है तो याद रखें कि संसार ने प्रभु यीशु से भी घृणा की।

एक मसीही के रूप में दु:ख उठाना शर्म की बात नहीं है। पतरस कहते हैं, ''पर यदि मसीही होने के कारण दु:ख पाए तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिए परमेश्वर की महिमा करे। 1 पत. 4:16। मसीह के गवाह के रूप में कष्ट उठाने पर प्रेरितों ने आनंद किया (प्रेरितों 5:41)।

इस पाठ में हम सीखेंगे कि कैसे आरंभिक कलीसिया ने दु:ख उठाया और उनकी प्रतिक्रिया क्या थी। आरंभ में विश्वासियों को यहूदियों ने सताया क्योंकि मसीहियत को यहूदी विश्वास का हिस्सा माना जाता था। बाद में रोमी सरकार ने उन्हें सताया।

1. उन्हें मारा गया :

प्रेरितों को कारागृह में डाला गया क्योंकि वे मसीह के लिए गवाही दे रहे थे। तथापि प्रभु ने अद्‌भुत रीति से उन्हें छुड़ाया और उन्होंने अपना प्रचार जारी रखा। उन्हें महासभा के सामने लाया गया कि उन पर दोष लगाया जाए। परन्तु उन्होंने स्पष्ट उत्तर दिया कि वे मनुष्यों की नहीं

परन्तु परमेश्वर की आज्ञा का पालन करेंगे। उन्हें मारा गया और धमकी दी गई कि वे प्रभु यीशु नाम से और प्रचार न करें। (प्रेरितों 5:40)। उन्हें अनेक बार मार खानी पड़ी और कोड़े भी खाए। (2 कुरि. 11:25; प्रेरितों: 22:24)। हमारे प्रभु को भी यह सब सहना पड़ा था। (तुलना करें-यूहन्ना 19:1)। कोड़ों के सिरे पर हड्डियाँ बँधी होती थीं। प्रेरित पौलुस कहते हैं कि उन्हें पाँच बार उनतालीस कोड़ों की मार पड़ी। (2 कुरि. 11:24, 25)।

2. उन्हें पत्थरवाह किया गया :

पुराने नियम में व्यभिचारियों और सब्त का पालन न करने वालों को पत्थरवाह किया जाता था। प्रभु यीशु के लिए प्रेरितों ने यह भी सहा। (प्रेरितों 14:19)। स्तिफनुस जो कलीसिया का पहला शहीद था, उसे पत्थरवाह करके मार डाला गया। (प्रेरितों 7:58-60)।

3. उन्हें कैदखानों में डाला गया :

उन दिनों में कैदखाने का जीवन बहुत कष्टदायक होता था। पहले पतरस और यूहन्ना को कारागार में डाला गया। (प्रेरितों 4:3)। तत्पश्चात् अनेक प्रेरितों को कैदखाने में डाला गया। (प्रेरितों 5:8) (प्रेरितों 12:4; प्रेरितों 16:23; इब्रा. 13:23)।

3. उन्होंने मृत्यु सही :

स्तिफनुस पहला व्यक्ति था जो अपने विश्वास के कारण शहीद हुआ (प्रेरितों 7:58-60)। प्रेरित पतरस और याकूब को हेरोदेस अग्रिप्पा-1 ने कारागार में डलवा दिया था। यहूदियों को प्रसन्न करने के लिए याकूब का सिर कटवा दिया था। वह पतरस को मार डालने की योजना बना रहा था, परन्तु परमेश्वर ने अद्‌भुत रीति से उसे छुड़ाया। इतिहास बताता है कि पतरस को क्रूस पर चढ़ाया गया, परन्तु उसकी विनती के अनुसार उसे उलटा लटकाया गया। नीरो के शासन काल में पौलुस का सिर काटा गया। रोमी राज्य में अनेक स्थानों पर विश्वासियों को शहीद होना पड़ा। आरंभिक कलीसिया ने इस सभी क्लेशों को बड़े धीरज से सहा।

पौलुस जानते थे कि उनको शहीद होना है। अतः उन्होंने कहा, ''मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ, मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा, और मुझे ही नहीं वरन् उन सब को भी जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं। 2 तीमु. 4:7-8।

याद करें : कि कोई इन क्लेशों के कारण डगमगा न जाए। क्योंकि तुम आप जानते हो कि हम इन ही के लिए ठहराए गए हैं। (1 थिस्स. 3:3)

प्रश्न :

1. आरंभिक कलीसिया के सताव का वर्णन करें।
2. कलीसिया का पहला शहीद कौन था और उसकी मृत्यु कैसे हुई?
3. मसीही लोग किस प्रकार दु:ख उठाते हैं?
4. अपने क्लेशों और मृत्यु के प्रति पौलुस का क्या दृष्टिकोण था?

पाठ-38

कूशी खोजा

प्रेरितों के काम, अध्याय 8

सुनहरा पद :

इसलिए अब जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ, और देखो, मैं जगत के अंत तक सदा तुम्हारे संग हूँ। मत्ती 28:19-20

हमने सीखा कि कलीसिया को बुलाया गया है ताकि आराधना करे, प्रार्थना करे और गवाही दे। विश्वासियों की गवाही के द्वारा अन्य लोग परमेश्वर की कलीसिया में जुड़ते जाते हैं। सताए जाने पर भी आरंभिक कलीसिया के विश्वासी चुप नहीं रहे। वे गवाही देते रहे और सुसमाचार दुनिया के कोने-कोने तक पहुँच गया।

जल प्रलय के पश्चात् नूह और उसका परिवार जहाज़ से बाहर आ गए। नूह के पुत्र शेम, हाम और येपेत थे। और उन्हीं के द्वारा संसार भर के राष्ट्र बने। (उत्पत्ति 10:1, 32)। अगले तीन पाठों में हम कूश देश के खोजे, तरसुस के शाऊल और अन्यजातीय कुरनेलियुस के हृदय-परिवर्तन के बारे में सीखेंगे। वे क्रमशः शेम, होम और येपेत का प्रतिनिधित्व करते हैं। आज हम कूश देश के खोजे के विषय में सीखेंगे जो हाम का वंशज था।

कूश का खोजा कूशियों की रानी कन्दाके का मंत्री और खजांची था। उसने यहूदी धर्म स्वीकार किया था। वह इस्राएल के परमेश्वर की आराधना करने यरूशलेम आया था और अपने रथ में वापस लौट रहा था। वह यात्रा में यशायाह की पुस्तक पढ़ रहा था। और जो वह पढ़ रहा था उसको समझने की बड़ी लालसा रखता था।

हमारे सर्वज्ञानी परमेश्वर ने उसकी इच्छा जानकर फिलिप्पुस को

बुलाया जो यरूशलेम की कलीसिया में सेवक था। उस समय वह सामरिया में सुसमाचार सुना रहा था। प्रभु ने उससे कहा, ''उठ और दक्खिन की ओर उस मार्ग पर जा, जो यरूशलेम से गाज़ा को जाता है।'' जब वह गया, तब आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, ''निकट जाकर इस रथ के साथ हो ले।'' फिलिप्पुस उसकी ओर दौड़ा और उसे यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ते हुए सुना, और पूछा, ''तू जो पढ़ रहा है, क्या उसे समझता भी है?'' उसने कहा, ''जब तक कोई मुझे न समझाए तो मैं कैसे समझूँ?'' और उसने फिलिप्पुस से विनती की, कि वह चढ़कर उसके पास बैठे। पवित्रशास्त्र का जो अध्याय वह पढ़ रहा था, वह यह था :

''वह भेड़ के समान वध होने को पहुँचाया गया, और जैसा मेम्ना अपने ऊन कतरने वालों के सामने चुपचाप रहता है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला। उसकी दीनता में उसका न्याय नहीं होने पाया। उसके समय के लोगों का वर्णन कौन करेगा? क्योंकि पृथ्वी से उसका प्राण उठा लिया जाता है।'' (यशायाह 53:7-8)।

प्रभु ने अवसर प्रदान किया और फिलिप्पुस ने उसका लाभ उठाया। उसने खोजे को सुसमाचार सुनाया। उसने बताया कि भविष्यद्वक्ता मसीह के कष्टों का वर्णन कर रहा है। जो प्रभु यीशु के कष्ट उठाने, क्रूस की मृत्यु सहने और जी उठने के द्वारा पूरा हुआ। खोजे ने प्रभु यीशु पर विश्वास किया और फिलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा दिया। खोजे के द्वारा सुसमाचार अफ्रीका पहुँचा।

इस पाठ में हम कुछ बातें सीखते हैं-

एक विश्वासी को आत्मा की बुलाहट पर आज्ञा माननी चाहिए (प्रेरितों 8:26, 27)।

प्रभु अपने परमाधिकार में मज़दूरों को बुलाते और कटनी के लिए भेजते हैं। (मत्ती 9:37-39)। हमें सुसमाचार सुनाने के लिए तैयार रहना चाहिए, चाहे जब भी उसका अवसर प्राप्त हो। फिलिप्पुस ने ऐसा ही किया। (प्रेरितों 8:35)। प्रभु हमें बताएँगे कि कब, कहाँ और कैसे सुसमाचार

सुनाना है। खोजे के जीवन से हम यह भी सीखते हैं कि प्रभु यीशु पर विश्वास करने वाले व्यक्ति को बपतिस्मा लेना चाहिए।

याद करें : अत: उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। (रोमियों 6:4)

प्रश्न :

1. खोजा कौन था?
2. वह यरूशलेम क्यों गया था?
3. अपनी वापसी यात्रा में वह क्या पढ़ रहा था?
4. फिलिप्पुस ने उसे क्या समझाया?
5. खोजे ने बपतिस्मा क्यों लिया?
6. इस पाठ से हम क्या सीखते हैं?

पाठ-39

तरसुस का शाऊल

प्रेरितों के काम, अध्याय 9

सुनहरा पद :

मैं तो पहले निन्दा करनेवाला, और सतानेवाला, और अन्धेर करनेवाला था। तौभी मुझ पर दया हुई, क्योंकि मैंने अविश्वास की दशा में बिन समझे बूझे ये काम किए थे। 1 तीमु. 1:13.

पौलुस की पृष्ठभूमि :

कलीसिया के इतिहास में तरसुस के शाऊल का मन-परिवर्तन एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना है। शाऊल एक जवान यहूदी धर्म गुरु था। वह इस्राएली था और बिन्यामीन के गोत्र में से था। शेम इस्राएलियों का महान पूर्वज था। पौलुस का जन्म तरसुस नामक शहर में हुआ था, और वह रोमी नागरिक था। गमलीएल के पास बैठकर पढ़ाया गया। (प्रेरितों 22:3)। और अपनी बराबरी के लोगों में अगुआ बना। वह प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करता था, बल्कि मसीहियों का दुश्मन था और उसने परमेश्वर की कलीसिया को बहुत सताया। (प्रेरितों 8:3)। मसीहियों को सताना और समाप्त करना ही उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य था। स्तिफनुस को पत्थरवाह करते समय शाऊल उसके वध में सहमत था। (प्रेरितों 8:1)। गवाहों ने अपने कपड़े शाऊल के पाँवों के पास उतार कर रखे थे।

शाऊल परमेश्वर की बातों में कूशी खोजे की तरह अनजान नहीं था। वह पुराने नियम का अच्छा ज्ञानी था। अपने पुराने जीवन के विषय में पौलुस कहते हैं, ''मैं तो पहले निन्दा करनेवाला और सतानेवाला, और अन्धेर करने वाला था तौभी मुझ पर दया हुई, क्योंकि मैंने अविश्वास की दशा में बिन समझे बूझे ये काम किए थे।'' (1 तीमु. 1:13)। प्रभु यीशु पर विश्वास करके उद्धार प्राप्त करना शाऊल के लिए असंभव था।

पुराने नियम का ज्ञान भी उसे उद्धार नहीं दे सकता था। परमेश्वर ने आश्चर्यकर्म किया।

उसका परिवर्तन :

शाऊल को जानकारी प्राप्त हुई कि दमिश्क में मसीही लोग हैं। वह उन्हें पकड़ना चाहता था। अतः उसने महायाजक से अनुमति पत्र लिया कि दमिश्क के मसीहियों को बाँधकर यरूशलेम ले आए। (प्रेरितों 22:5)। वह कुछ लोगों को लेकर चला। चलते-चलते जब वह दमिश्क के निकट पहुँचा, तो अचानक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी, और वह भूमि पर गिर पड़ा और यह शब्द सुना, ''हे शाऊल, हे शाऊल तू मुझे क्यों सताता है?'' उसने पूछा, ''हे प्रभु, तू कौन है?'' उसने कहा, ''मैं यीशु हूँ जिसे तू सताता है।'' जो मनुष्य उसके साथ थे, वे अवाक् रह गए, क्योंकि शब्द तो सुनते थे, परन्तु किसी को देखते न थे। इस प्रकार शाऊल का मन परिवर्तन हुआ। तब से अंत तक समर्पण और आज्ञाकारिता उसके जीवन में रही, और अंत में वह कह सका, ''हे राजा अग्रिप्पा, मैं ने उस स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली।'' (प्रेरितों 26:19)।

इस पाठ से हम कुछ बातें सीखते हैं-हमारी पारिवारिक परंपरा हमें उद्धार नहीं दे सकती। हमारा धार्मिक ज्ञान हमें उद्धार नहीं दे सकता। व्यवस्था का पालन करने से हमारा उद्धार नहीं हो सकता। केवल परमेश्वर ही हमें बचा सकते हैं। उद्धार हमेशा अनुग्रह से ही होता है। हम विश्वास से उसे स्वीकार करते हैं। इस संसार के सबसे बड़े पापी का भी उस अनुग्रह के द्वारा उद्धार हो सकता है।

याद करें : इस कारण मैं इन दु:खों को भी उठता हूँ, पर लजाता नहीं, क्योंकि मैं उसे जिस पर मैंने विश्वास किया है, जानता हूँ, और मुझे निश्चय है कि वह मेरी धरोहर की उस दिन तक रखवाली कर सकता है। (2 तीमु. 1:12)

प्रश्न :

1. शाऊल कौन था? उसका जन्म कहाँ हुआ था?

2. उसका शिक्षक कौन था?
3. उसके जीवन का लक्ष्य क्या था?
4. स्तिफनुस के वध में शाऊल की क्या भूमिका थी?
5. दमिश्क के मार्ग पर जो हुआ उसका वर्णन करें।

पाठ-40

कुरनेलियुस

प्रेरितों के काम, अध्याय 10

सुनहरा पद :

तब मैंने तुरंत तेरे पास लोग भेजे, और तू ने भला किया जो आ गया। अब हम सब यहाँ परमेश्वर के सामने हैं, ताकि जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है उसे सुनें। प्रेरितों 10:33.

कुरनेलियुस येपेत का वंशज था। वह एक रोमी सूबेदार था। वह एक भक्त था और हमेशा प्रार्थना किया करता था। कुरनेलियुस ने दिन के तीसरे पहर के आसपास एक दर्शन देखा कि परमेश्वर के एक स्वर्गदूत ने आकर उससे कहा, ''तेरी प्रार्थनाएँ और तेरे दान स्मरण के लिए परमेश्वर के सामने पहुँचे हैं। और अब याफा में मनुष्य भेजकर पतरस को बुलवा लो। पतरस चमड़े का धंधा करनेवाले शमौन के घर में अतिथि था। कुरनेलियुस ने दो सेवकों और एक भक्त सिपाही को सब बातें बताकर याफा भेजा। इस दौरान परमेश्वर ने एक दर्शन के द्वारा पतरस से बातें की। उसने देखा कि आकाश खुल गया, और एक पात्र बड़ी चादर के समान चारों कोनों से लटकता हुआ, पृथ्वी की ओर उतर रहा है, जिसमें पृथ्वी के सब प्रकार के चौपाए और रेंगनेवाले जंतु और आकाश के पक्षी थे उसे एक शब्द सुनाई दिया, ''हे पतरस उठ, मार और खा।'' परन्तु परतस ने कहा, ''नहीं प्रभु, कदापि नहीं, क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है।'' फिर दूसरी बार उसे शब्द सुनाई दिया, ''जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध मत कह।'' उसने तीन बार वही दर्शन देखा। जब पतरस उस दर्शन के बारे में सोच रहा था, तभी आत्मा ने उससे कहा, ''देख तीन मनुष्य तेरी खोज में हैं। अतः उठकर नीचे जा, और निःसंकोच उनके साथ चले जाओ, क्योंकि मैंने ही उन्हें भेजा है।'' पतरस उन मनुष्यों के साथ गया

जिन्हें कुरनेलियुस ने भेजा था। कुरनेलियुस अपने मित्रों और संबंधियों के साथ पतरस की प्रतीक्षा कर रहा था। पतरस के आने पर उसने उसे अपने दर्शन के बारे में बताया, और उसे विनती की कि वचन सुनाए। पतरस ने उन्हें सुसमाचार सुनाया। कुरनेलियुस और उसके घर वालों ने प्रभु यीशु पर विश्वास किया। उन्होंने पवित्र आत्मा प्राप्त किया और प्रभु के नाम में बपतिस्मा लिया।

कुछ बातें जो हम इस घटना से सीखते हैं–

1. परमेश्वर किसी भी व्यक्ति को बचाने की चाह रखते हैं, और नहीं चाहते कि कोई भी नाश हो।
2. परमेश्वर की कलीसिया में यहूदी और अन्यजाति के बीच कोई फर्क नहीं है। दोनों मिलकर मसीह की देह का निर्माण करते हैं।
3. मनुष्य अपने अच्छे कार्यों के द्वारा नहीं, परन्तु प्रभु यीशु पर विश्वास करने के द्वारा उद्धार प्राप्त करता है।
4. वास्तविक पवित्रता परमेश्वर की ओर से प्राप्त होती है।

याद करें : उसकी सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते हैं, कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी। (प्रेरितों 10:43)

प्रश्न :

1. कुरनेलियुस कौन था?
2. वह परमेश्वर की आराधना कैसे करता था?
3. क्या परमेश्वर ने उसकी आराधना को ग्रहण किया?
4. अपने अच्छे कार्यों के द्वारा उसका उद्धार क्यों नहीं हुआ?